

RNI नं. : 7387/63

मुद्रण तिथि : 15-16 जून 2023

डाक प्रेषण तिथि : 15-17 जून 2023

ISSN : 2456-611X

वर्ष : 61

अंक : 05

मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 80

डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2021-23

Office Posted At R.M.S., Bikaner



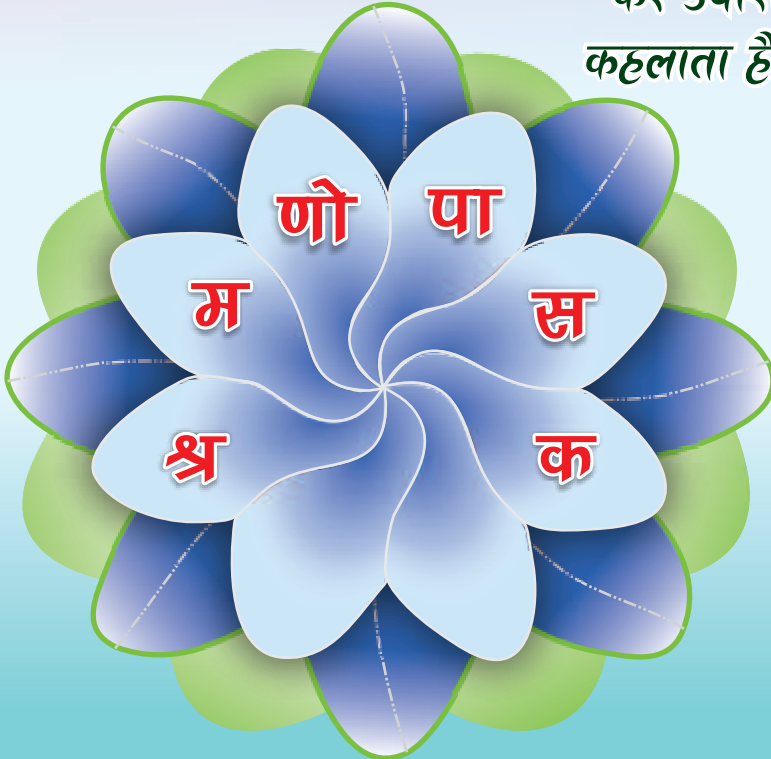
राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

# श्रमणोपासक

धार्मिक पाक्षिक

शुद्ध भोजन से ही शुद्ध भाव हो,  
भावों से हो धर्म आराधन।  
करे उपासना संत-सतीवर की,  
कहलाता है वो ही श्रमणोपासक ॥



“

दूसरा सीख दे सकता है,  
समझ नहीं।

अहंकार को ढहाने का  
सुन्दर उपाय है,  
दूसरों के गुणों का  
सम्मान करना।

बोली से व्यक्ति की उच्चता का  
बोध हो जाता है।”

-आचार्य प्रवच 1008 श्री रामलालजी म.सा.



**बहुंपि लद्धं न निहे, परिग्गहाओ अप्पाणं अवसक्किज्जा।**

-आचारांग (1/2/5)

अधिक मिलने पर भी संग्रह न करे। परिग्रह-वृत्ति से अपने आपको दूर रखें।

Do not accumulate even when you gain more. Keep away from encumbrance.

**गाहेण अप्पगाहा, समुद्दसलिले सचेल-अत्थेण।**

-सूत्रकृतांग (27)

ग्राह्य वस्तु में से भी अल्प (आवश्यकतानुसार) ही ग्रहण करना चाहिए। जैसे समुद्र के अथाह जल में से अपने वस्त्र धोने के योग्य अल्प ही जल ग्रहण किया जाता है।

From amongst the acceptable things also take only a little according to your requirement just as you would take a little water, from the sea, for washing your clothes.

**संगनिमित्तं मारइ, भणइ अलीअं करेइ चोरिककं।**

**सेवइ मेहुण मुच्छं, अप्परिमाणं कुणइ जीवो॥**

-समणसुत्तं, गाथा 140

जीव परिग्रह के निमित्त हिंसा करता है, असत्य बोलता है, चोरी करता है, मैथुन का सेवन करता है और अत्यधिक मूर्च्छा करता है। (इस प्रकार परिग्रह पाँचों पापों की जड़ है।)

All the living kill, tell lies, steal, indulge in sexual activities and remain deeply engrossed in these things due to their attachment for the possession of the means of worldly pleasures. (Thus, possession is at the root of all evils)

**लोभ-कलि-कसाय-महक्खंधो, चिंतासयनिचयविपुलसालो।**

-प्रश्नव्याकरण (1/5)

परिग्रह रूपी वृक्ष के स्कन्ध अर्थात् तने हैं- लोभ, क्लेश और कषाय। चिन्ता रूपी सैकड़ों सघन और विस्तीर्ण उसकी शाखाएँ हैं।

The stout trunks of the tree of encumbrance (possession and attachment for it) are three-greed, passion and suffering. Hundreds of its dense and widespread branches are in the form of worries that do not end.

साभार- प्राकृत मुक्तावली



**आत्मवाणी**

# अनुक्रमणिका



राम चमकते भानु समाना

## स्थायी स्तम्भ

जीवनी	: The Character Development of Salagram Ji - संकलित.....	06
धर्मदेशना	: धर्म का फल - आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलालजी म.सा.....	08
धर्मदेशना	: धर्म की सही व्याख्या - आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.....	11
धर्मदेशना	: धम्मो मंगलमुक्कट्टं - आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.....	16
ज्ञान-सार	: ऐसी वाणी बोलिए - संकलित.....	23
ज्ञान-सार	: श्रीमद् भगवती सूत्र - कंचन कांकरिया.....	26
ज्ञान-सार	: श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र - सरिता बैंगानी.....	27
तत्त्व-ज्ञान	: मनुष्य के भेद - संकलित.....	29
किड्स कॉर्नर	: बालमन में उपजे ज्ञान - मोनिका जय ओस्तवाल.....	39
गुरुचरण विहार	- महेश नाहटा.....	58

## संस्कार सौरभ

महासती सुलसा - संकलित.....	31
धर्ममूर्ति आनन्दकुमारी - संकलित.....	35
'अन्न' का सम्मान..... - पदमचन्द गाँधी.....	41
पंचमहाव्रत के प्रतीक - संकलित.....	45
जैन धर्म और विश्वशांति - संकलित.....	46
रात्रिभोजन त्याग - नेहा संखलेचा.....	49
Ideal Jain Life..... - Romika Navlakha.....	50
अपने द्वारा किया हुआ..... - प्रो. सुमेरचन्द जैन.....	51
धर्म : अधोगति से उत्थान की ओर - सुरेश बोरदिया.....	53

## भक्ति-रस

समकित सूर्य उपाध्याय प्रवर - संध्या धाड़ीवाल.....	57
---	----



चिन्तन पराग



# धर्म को समझें

-पद्म पूज्य आचार्य प्रवच 1008 श्री शमलालजी म.सा.

■ धर्म की क्रिया और धर्म दोनों अलग-अलग हैं। धर्म क्रियाओं को अभवी जीव भी सम्पादित कर सकता है, लेकिन वह धर्म की आराधना नहीं कर पाता। इससे स्पष्ट फलित होता है कि धर्म और धर्म की क्रियाएँ एक नहीं होती। धर्म के लिए जो क्रियाएँ निर्धारित हों, वे धर्म क्रियाएँ कहलाती हैं। वे एक प्रकार से रस्में हो जाया करती हैं। यदि निश्चय नय से कथन करें तो जो क्रियाएँ धर्म तक ले जाने वाली होती हैं, वे ही धार्मिक क्रियाएँ कहलाएंगी। पाँच समिति, तीन गुप्ति आदि धर्म क्रियाओं के रूप में मान्य हैं, पर उनसे यदि संवर हो रहा है तो ही वे क्रियाएँ धर्म क्रिया के रूप में स्वीकार्य होंगी। ईर्या समिति का अर्थ यही नहीं है कि यतना से देखकर चलें। ईर्या समिति का तात्पर्य है ज्ञान, दर्शन, चारित्र के लिए यतना व उपयोगपूर्वक गमनादि क्रियाएँ करना। यदि कोई दर्शनीय स्थल देखने के लिए यतनापूर्वक भी जा रहा है तो उसे ईर्या समिति कहना उचित नहीं है। तिरुपति में श्रावक वर्ग में से किसी ने निवेदन किया था कि म.सा. ऊपर पधारना हो तो संघ वी.आई.पी. व्यवस्था करा सकता है। (ऊपर यानी तिरुपति का मंदिर देखने) हमको तो जाना ही नहीं था, पर कोई देखने जाए तो उसे ईर्या समिति नहीं कहा जा सकता, क्योंकि उसमें ज्ञान, दर्शन, चारित्र का हेतु नहीं था। धर्म की क्रियाएँ स्थूल हैं, धर्म झीणा है। थोड़ी-सी चूक होते ही बाहर हो जाता है। सावधानी हटी कि दुर्घटना घटी। धर्म की आराधना करने वाले को देखते रहना चाहिए कि वह कहीं उससे दूर तो नहीं हट रहा है। यदि अहंकार बढ़ रहा हो कि मैं 365 दिन प्रतिक्रमण करता हूँ, 365 दिन सामायिक करता हूँ, इनका गर्व होता हो तो वह धर्म से बाहर हो रहा होता है। धर्म क्षमा, मृदुता, सरलतादि रूप है। इसलिए देखते रहना चाहिए कि मेरा क्षमा भाव विकसित हो रहा है या नहीं? मेरी सरलता बढ़ रही है या नहीं? मेरा मान नम रहा है या नहीं? मेरे भीतर नम्रता आ रही है या नहीं? यदि ये गुण विकसित हो रहे हों तो समझना चाहिए कि मेरी दिशा सही है। मैं सही दिशा में प्रयाण कर रहा हूँ। यदि वैसा नहीं लगे तो उस मार्ग पर आने का प्रयत्न करना चाहिए।

21.02.2017, फाल्गुन कृष्णा 10, मंगलवार

साभार- उपांशु

After the “Achar Vishuddhi Mahotsav” the English translated series of “Pujya Hukmesh” is presented below to make the readers aware about the life of Acharya Shri Hukmichand Ji M.Sa.

Continued from 15-16 May 2023 :

**Dear children!**

There was a gentleman named Salagram Ji Agarwal. His gaze fell upon a seated barber in one corner. The barber sat with his head hanging low and tears flowing from his eyes. Astonished, Salagram Ji approached him with great empathy and asked, "Brother! Why are you so sad and shedding tears? If there is anything I can do to help alleviate your pain, please let me know, so that I can help you in any way I can."

Upon hearing Salagram Ji's words, the barber began to say, "Seth ji! I am not shedding tears due to any grief. These tears are due to my lack of merit (punya).

Today, my fellow caste members are so virtuous (पुण्यशाली) that they have the opportunity to perform the Mundan ceremony of renunciants who are advancing on the path of asceticism.

Although I too was invited at Brahma Muhurta time for the Deeksha ceremony. Upon receiving this auspicious message, I reached there with great enthusiasm, carrying all my new Mundan materials to celebrate my fate. Upon reaching there, I saw that all four barbers of the deeksharthi's families had sat down with their scissors in hand, to perform the Mundan ceremony, feeling extremely joyous and overwhelmed by their good luck.

As soon as I saw them, I became restless and started questioning my fate, and the lack of good deeds that I was deprived of such a rare opportunity. I was saddened by this grief and tears flowed from my eyes. Apart from this, there is no other reason for my sorrow."

Upon hearing the words of the sage, Salagram Agarwal was overwhelmed with a heavy sense of introspection. On one hand,

Pujya Hukmesh



## THE CHARACTER DEVELOPMENT OF SALAGRAM JI

– Golden Glimpses of ACHARYA SHRI HUKMICHANDJI M.SA.

Lalchand Ji who was like a father to him, and his son Kewalchand Ji who was like a brother to him, had abandoned their vast wealth and glory to pursue a path of self-discipline for their spiritual well-being and on the other hand, Salagram had lived his entire life in their company, after the demise of his parents. He wondered who he has in this world and how he is trapped in the mud of worldly attachments. He realized that his only salvation lies in taking Deeksha from these sages and embarking on a path of self-discipline.

Inspired by this inner awakening, he immediately spoke up to the barber - "Do not be sad, brother! Quickly bring the means for head-shaving and shave my head." Upon hearing this, the barber's heart swelled with joy. Realizing his good fortune, he quickly brought a new razor and shaved his head. Salagram too, got his head shaved and then went to pay homage to his father-like guru,

Lalchand Ji, and touched his feet. He said, "Father! Without you, I have no foundation to live in this world. You have raised and cared for me as your son for so long. Please take me with you, so that I too can serve at your feet with discipline for the rest of my life." With firm determination, Salagram also decided to take up the path of self-discipline with his father-like guru.

Lalchand Ji and Kewalchand Ji became elated upon hearing this news. Seeing his firm determination, they dressed him in disciplined attire including chadar, cholapatta, and mukhvastrika along with tools such as rajoharana-poonjani, and took him with them.

As soon as they arrived before Pujyashri ji in sthanak, even Pujyashri and the saints were astonished to see that when there were only four candidates for Deeksha, who was the fifth person in the disciplined attire?

Continue...

## रचनाएँ आमंत्रित



आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी **15-16 जुलाई 2023** का धार्मिक अंक **'गोचरी-विवेक/धोवन पानी विवेक'** पर आधारित रहेगा।

इसी क्रम में **15-16 अगस्त 2023** का धार्मिक अंक **'श्रवण-विवेक, क्षमा-विवेक'** विषय पर आधारित रहेगा। सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ-लेख, कविता, भजन, कहानी आदि **मो.: 9314055390, email : news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाएँ भी आमंत्रित हैं।

- श्रमणोपासक टीम



# धर्म का फल

-पश्म पूज्य आचार्य प्रवच 1008 श्री जवाहरलालजी म.सा.

■ अगर तुम्हारी आशा पूरी नहीं होती तो यह धर्म का दोष नहीं, तुम्हारी करनी में ही कहीं कमी है। अतएव आकांक्षा पूरी न होने के कारण धर्म को मत छोड़ो। आकांक्षा ही तुम्हारी मुराद पूरी नहीं होने देती। आकांक्षा ही तुम्हें धर्म-श्रद्धा से डिगा देती है। अतएव जहाँ तक हो सके, आकांक्षा को ही छोड़ने का प्रयत्न करो। निष्कांक्ष हो जाने पर तुम्हारी समस्त आकांक्षाएँ पूरी हो जाएंगी। एक वृद्धा स्त्री की बात कहता हूँ।

किसी वृद्धा को धर्म से बड़ा प्रेम था। वह सदा साधु-सन्तों के दर्शन करने जाती और उनका धर्मोपदेश सुनती। इतना ही नहीं, वह आस-पास की स्त्रियों को भी साथ ले जाती। स्त्रियों में धर्म-भावना फैलाती, उन्हें सीख देती।

एक दिन उसे विचार आया कि मैं इतना धर्म-ध्यान करती हूँ। धर्म के लिए उद्योग करती हूँ। अतएव मेरे पोता अवश्य होगा। इसके बाद पोता होने की आशा में दिन पर दिन और वर्ष पर वर्ष बीत गये, परन्तु पोता नहीं हुआ। पोता न होने से उसकी धर्म-भावना मन्द पड़ने लगी। वह विचार करने लगी- “यह कौनसा धर्म है, जो मेरी साधारण-सी अभिलाषा भी पूरी नहीं करता। जो धर्म पोता नहीं दे सकता, वह मोक्ष क्या देगा?” इस प्रकार वृद्धा की श्रद्धा घटने लगी। ठीक ही कहा है - “**श्रद्धा परम दुर्लभा।**” सब कुछ सरल हो सकता है, मगर श्रद्धा कायम रहना बहुत कठिन है। उस वृद्धा की श्रद्धा जोखिम में पड़ गई। धीरे-धीरे उसे धर्म से इतनी अरुचि हो गयी कि स्वयं साधु-सन्तों के

समीप न फटकती और जो जाती उन्हें भी मना करती। कहती- “क्या रखा है दर्शन करने में? क्यों घर के काम का नुकसान करती हो? वहाँ कुछ लाभ होता तो मैं क्यों छोड़ बैठती?”

वृद्धा जहाँ की थी, वहाँ अक्सर साधु पहुँचा करते थे। एक पुराने साधु वहाँ गये। बहुत-सी बहिनें दर्शन करने आयी। मगर साधु को वह वृद्धा नहीं दिखी। वह किसी समय महिला समाज की अगुआ थी। अतएव साधुजी ने पूछा- “बहिनो! यहाँ एक धर्मशीला वृद्धा बाई थी। वह आज दिखाई नहीं दी। क्या कहीं गई है?” एक स्त्री ने मुँह मटकाकर उत्तर दिया- “महाराज! वह तो मिथ्यात्विनी हो गई। खुद नहीं आती और दूसरों को भी आने से रोकती है।”

**साधु-** “अच्छा, यह बात है! उससे जरा कह देना कि अमुक मुनि आए हैं। व्याख्यान सुनना। अगर इच्छा न हो तो भी जैसे मिलने वालों से मिलने जाते हैं, उसी प्रकार समझकर व्याख्यान सुनना।” यह समाचार वृद्धा के पास पहुँच गया। वह कहने लगी- “मैंने बहुत दर्शन किये, कई व्याख्यान सुने, मगर कोई मुराद पूरी नहीं हुई। अब वहाँ जाकर क्या करूँगी?” “साधु प्राणीमात्र का भला चाहते हैं। उन्हें किसी पर क्रोध नहीं होता।” उन्होंने वृद्धा को सन्मार्ग पर लाने के उद्देश्य से एक बार फिर कहला भेजा।

वृद्धा आयी। अनमनी होकर हाथ जोड़ नीचा सिर किये गुमसुम होकर बैठ गयी।

**साधुजी** ने कहा- “बहिन! आजकल तुम धर्मध्यान



नहीं करती। पहले तो बहुत धर्मक्रिया करती थी। क्या कारण है?”

लम्बी साँस लेकर वृद्धा बोली- “क्या कहूँ महाराज!”

साधु- “नहीं, नहीं बहिन, कुछ कहो! बात क्या है? क्या श्रद्धा हट गई?”

वृद्धा- “पूछकर क्या करोगे महाराज!”

साधु- “बन सकेगा तो उपाय करेंगे।”

वृद्धा- (उत्सुक होकर) “आप सुनना चाहते हैं?”

साधु- “हाँ, बहिन!”

वृद्धा- “तो सुनिए। मेरा लड़का है। आप जानते ही हैं कि मैं पहले कैसा धर्म करती थी और कैसी सेवा बजाती थी। मैं समझती थी कि धर्म के प्रताप से मेरे पोता होगा। आशा ही आशा में कई वर्ष व्यतीत हो गए, किन्तु पोता नहीं हुआ। धर्म वह जो आशा पूरी करे। बहुत धर्म करने पर भी आशा निराशा में पलट गई। पोते का मुँह देखने को न मिला। इस कारण धर्म से आस्था घट गई।”

साधुजी ने संवेदना दिखलाते हुए कहा- “बहिन, सच कहती हो। जो धर्म आशा पूरी न करे, वह कैसा धर्म!”

अपने पक्ष का समर्थन होते देखकर वृद्धा कहने लगी- “महाराज! आप सच फरमाते हैं। झूठ कहती होऊँ तो आप बताइए।”

साधु- “नहीं बहिन, तुम झूठ नहीं कहती। अच्छा, एक बात तुमसे पूछता हूँ। धर्म ने पोता नहीं दिया यह मैंने माना, मगर बहिन! संसार सम्बन्धी ऐसी कुछ बाधाएँ भी होती हैं कि धर्म भी बेचारा क्या करे? अगर अकेला धर्म ही पोता दे देता तो तुम घर में बहू आने से पहले ही मांगती, पर ऐसा नहीं किया। संसार सम्बन्धी भी कुछ कारण मिलते हैं, तब पोता होता है।”

वृद्धा सिर हिलाकर- “बात सच है।”

साधु फिर कहने लगे- “मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि इसमें कोई सांसारिक बाधा ही कारण होगी।”

वृद्धा- “नहीं महाराज! सांसारिक बाधा कुछ भी नहीं है।”

साधु- “बहिन! हो सकता है कि तुम्हें मालूम ही न हो। मान लो, पति-पत्नी में मेल-मिलाप ही न हो तो?”

वृद्धा- “नहीं महाराज! दोनों में इतना प्रेम है, जितना सीता और राम में था।”

साधु- “संभव है बहू रोगिणी हो। रोगिणी के भी संतान नहीं होती।”

वृद्धा- “अजी, उसके तो नख में भी रोग नहीं है, वह खूब भली-चंगी है।”

साधु- “तुम्हारे लड़के में कोई त्रुटि नहीं हो सकती?”

वृद्धा- “यह भी नहीं है। ऐसा होता तो सन्तोष कर लेती कि जब लड़के में कमी है तो पोता कैसे हो? पर वह तो बलिष्ठ और सुन्दर है। देखती हूँ, कई लड़के खाट पर पड़े रहते हैं, पर मेरा बेटा ऐसा नहीं है। वह पहाड़-सा बलवान है।”

साधु- “सब कुछ ठीक हो, पर यदि तुम्हारा लड़का परदेश चला जाता हो और बहू तुम्हारे पास रहती हो तो पोता कैसे हो? एक बात और भी है। संभव है, पति-पत्नी साथ ही रहते हो किन्तु मनुष्य को धन की चिन्ता बहुत बुरी होती है। इस चिन्ता से तुम्हारा लड़का घुलता हो तो भी पोता न होना सम्भव है।”

वृद्धा व्यंग की हँसी हँसकर बोली- “मैं ऐसी भोली नहीं हूँ। काले केश पक गए हैं। ऐसा होता तो मैं समझ जाती, मगर ऐसा कुछ नहीं है।”

साधु- “एक बात पूछना फिर भूल गया।”

**वृद्धा-** “वह भी पूछ लीजिए।”

**साधु-** “जो माता-पिता की सेवा नहीं करते, उनके भी प्रायः पुत्र नहीं होता।”

**वृद्धा-** “महाराज, मेरा लड़का और मेरी बहू मिलकर मेरी इतनी सेवा करते हैं कि शायद ही किसी को नसीब होती हो। सब बातें आपने पूछ लीं। अब बताइए, किसका दोष है?”

**साधु-** “यह तो धर्म का ही दोष है।”

**वृद्धा-** (जरा तेज स्वर में) “मैं पहले ही कहती थी कि यह धर्म का ही दोष है। इसी कारण मैंने धर्म छोड़ दिया। स्त्रियाँ मुझे मिथ्यात्विनी कहती हैं तो कहती रहें। मेरा क्या बिगड़ना है? सच्ची बात तो कहनी पड़ेगी।”

**साधु-** “मैं समझ गया बहिन, यह दोष धर्म का ही है। धर्म से जाकर अर्ज करनी पड़ेगी कि बहुत से लोग बेचारे बूढ़े होकर मर जाते हैं, पर बेटे का मुँह नहीं देख पाते। तुमने उस वृद्धा को लड़का देकर और दुःखी कर दिया। नहीं तो धर्मध्यान करती। अब पोते के बिना उसे चैन नहीं पड़ता। उसे रात-दिन चिन्ता रहती है।”

**वृद्धा** चौंककर बोली- “ऐं महाराज! यह क्या कहते हैं?”

**साधु-** “सच ही तो कह रहा हूँ।”

**वृद्धा-** “नहीं महाराज! यह तो धर्म का ही प्रताप है। अच्छा पुण्य किया तो बेटा मिला है।”

**साधु-** “कई लोग विवाह के लिए भटकते फिरते हैं। तुम्हारे लड़के का विवाह जल्दी हो गया, यह बुरा हुआ?”

**वृद्धा-** “नहीं अन्नदाता! यह तो धर्म का ही प्रताप है।”

**साधु-** “लोग पैसे-पैसे को मोहताज रहते हैं। तुम्हें पैसा देकर धर्म ने बुरा किया?”

**वृद्धा-** “प्रभु! यह क्या फरमाते हैं! यह भी धर्म का ही प्रताप है।”

**साधु-** “यह क्या? सभी बातों में धर्म ही धर्म का प्रताप बतलाती हो!”

**वृद्धा-** “सच बात तो कहनी ही चाहिए न?”

**साधु-** “अच्छा तो पति-पत्नी की जोड़ी स्वस्थ मिली, यह बुरा हुआ? नहीं तो सन्तोष मानकर धर्म तो करती।”

**वृद्धा-** “यह भी धर्म का ही प्रताप है।”

**साधु-** “पति-पत्नी अविनीत, माता-पिता से झगड़ने वाले मिलते तो ठीक था?”

**वृद्धा-** “जिसने छोटे कर्म किए हों, उसी को ऐसे लड़का-बहू मिलते हैं। आपकी कृपा से मैंने कुछ पुण्य-कर्म किया होगा, उसी का यह प्रताप है।”

**साधु-** “तुम सभी बातें धर्म के प्रताप से कहती हो! ऐसा है तो जो धर्म सभी कुछ दे, सिर्फ एक पोता न दे, उस पर इतनी नाराजगी क्यों?”

**वृद्धा** हाथ जोड़कर बोली- “क्षमा कीजिए महाराज! मुझसे भूल हुई। मैंने धर्म का उपकार न माना। मैं बड़ी कृतघ्नी और पापिनी हूँ। अब मैं समझ गई। मेरा मोह दूर हो गया। आपने मुझ पर असीम दया की, ठीक रास्ता दिखला दिया। अब मैं फिर यथाशक्ति धर्म की सेवा करूँगी।”

आपने यह दृष्टान्त सुना। ऐसे विचार वाले भाई-बहिन आप में कम नहीं होंगे, जो अपनी आशा पूरी होते न देख कह उठते हैं- वाह! धर्म ने इतना भी न किया।

इस प्रकार की तुच्छ भावना से धर्म की दुर्दशा नहीं, आपकी ही दुर्दशा होती है। तुम सच्चे धर्मात्मा बनो। तुम्हारी मुराद तो क्या, त्रिलोकी तुम्हारे चरणों में लौटने लगेगा।

**साभार- श्री जवाहर किरणावली-18 (उदाहरण माला-3)**

■ प्रभु महावीर ने धर्म का विशद विश्लेषण एक छोटी-सी व्याख्या में कर दिया है कि 'वत्थु सहावो धम्मो' अर्थात् जो वस्तु का मूल स्वभाव है, वही उसका धर्म है।

तो धर्म का अर्थ हुआ मूल स्वभाव। जो मूल स्वभाव में है, वह धर्म में है और जो अपने मूल स्वभाव में नहीं है, वह धर्म में नहीं है यानी अधर्म में है। अतः अधर्म होगा अपने मूल स्वभाव से विपरीत जाने पर। मूल स्वभाव से विपरीत स्थिति को कहा गया है विभाव। स्वभाव धर्म और विभाव अधर्म।

स्वभाव का अर्थ होता है अपना भाव। अपना भाव ही अपना मूल भाव होता है। जब तक अपने मूल भाव में कोई चले तो उसका चलना न अपने लिए अहितकर होता है, न दूसरों के लिए। जब कोई स्वभाव छोड़कर विभाव पकड़ता है, तभी बुराइयों का सिलसिला शुरू होता है, विकृति और पतन का क्रम चलता है। यह तो स्वभाव छोड़ने वाले की अपनी गति होती है लेकिन एक की गति भी बिगड़कर दूसरों के लिए कष्ट का कारण बन जाती है। इसलिए विभाव सभी के लिए दुःख दायक होता है।

धर्म की धारणा तभी भली-भाँति समझ में आएगी, जब पहले स्वभाव और विभाव के गतिक्रम को ठीक तरह से समझ लें। इसे काष्ठ खंड के पारम्परिक दृष्टान्त से समझने में सुविधा रहेगी। काष्ठ खंड यानी लकड़ी के टुकड़े का अपना स्वभाव हल्का होता है

और पानी की सतह पर तैरने का होता है। लकड़ी का टुकड़ा पानी पर तैरे- इसमें कोई दोष नहीं देगा। लेकिन उसी लकड़ी के टुकड़े को अगर लोहे की डिब्बी में बन्द करके पानी में डालें तो वह टुकड़ा फिर सतह पर तैर नहीं पाएगा बल्कि तले तक डूब जाएगा। तो इस तरह उसके डूब जाने को उसका स्वभाव नहीं मानेंगे बल्कि कहेंगे कि वह अपने स्वभाव के विरुद्ध लोहे की संगति से डूब गया है। इसे उसका विभाव कहेंगे कि उस पर लोहे का भार चढ़ गया है और उसके असर से वह विपरीत चाल चला है।

अब इस दृष्टान्त को अपनी आत्मा पर घटाइए- अपने जीवन पर घटाइए। जिसको थोड़ा-सा भी अपने भीतर झाँकने और अपनी आत्मा की आवाज सुनने का अभ्यास होगा, वह अपने मूल स्वभाव का बड़ी आसानी से अनुमान लगा सकेगा। जब भी कोई दृश्य या घटना सामने आती है तो जो पहली प्रतिक्रिया होती है, वह आन्तरिक होती है। फिर बाहरी परिस्थितियों के कारण मानव उसे तोड़-मरोड़ देता है और अपने आचरण को उसके अनुकूल नहीं ढालता-यह दूसरी बात है।

किसी पीड़ा से कराहते हुए एक प्राणी को आप देखते हैं तो तुरन्त प्रतिक्रिया में प्रत्येक मानव के भीतर करुणा जागती है और वह उस पीड़ित को अपनी यथाशक्य सहायता पहुँचाकर हल्का होना चाहता है। ऐसी उसकी मूल चाह उसके मूल स्वभाव का द्योतन

धर्मदेशना

# धर्म की सही व्याख्या

-परम पूज्य आचार्य प्रवच 1008 श्री नानालालजी न.सा.

करती है। आत्मा का मूल स्वभाव भी हल्का और ऊर्ध्वगामी होता है। यदि मानव अपनी इस सरलता तथा सहयोगिता को अपने आचरण में बसा ले तो उसके जीवन का उन्नयन होता रहेगा और वह अपने मूल स्वभाव में स्थित बना रहेगा।

किन्तु आज मानव-लीला के जो अधिकांश दृश्य दिखाई देते हैं, वे उसके विभाव में चलने और काम करने के कारण उपस्थित होते हैं। विभाव में अपने जीवन को धकेलकर मानव विपथगामी और अधोगामी हो जाता है। इस पतन के जो दुष्परिणाम सामने आने चाहिए, वे ही आज सबके समक्ष प्रकट हो रहे हैं।

इस सारे विश्लेषण का सार यह है कि मनुष्य का मूल स्वभाव मुख्यतः उसकी ही प्रतिक्षण जाँच और परख का विषय है और वही निर्णय ले सकता है कि किस समय उसकी वृत्तियाँ तथा प्रवृत्तियाँ स्वभाव के अनुकूल चल रही हैं तथा किस समय में प्रतिकूल? जब भी वह अपने को विभाव में बहता हुआ समझे, वही अपने को नियंत्रित एवं सन्तुलित बनाकर मूल स्वभाव में लौट जाने का उपक्रम कर सकता है।

यही धर्म की मूल व्याख्या है और मूल स्थिति है जो मनुष्य के मूल हृदय की अवस्था होती है-मनुष्य के स्वयं के निर्णय करने की वास्तविकता।

## मानव धर्म का विवेचन

स्वभाव-विभाव के मूलाधार पर चिन्तकों और साधकों ने जो अनुभूतिजन्य सार निकाला है, एक प्रकार से वही सब कुछ मानवधर्म के रूप में व्यक्त हुआ है। मानव धर्म का शुद्ध अर्थ है सम्पूर्ण मानवीय मूल्यों के अनुसार मानव-मानव के बीच किए जाने वाले व्यवहार का स्तर तथा व्यक्ति एवं समष्टि के प्रगतिशील सम्बन्धों का विवेचन। इसमें संकुचित दृष्टिकोणों का कोई स्थान नहीं। प्रत्येक सिद्धान्त की कसौटी समग्र

मानवता के विकास पर आधारित रहती है।

अतः मानव धर्म के दृष्टिकोण से धर्म की परिभाषा एक शब्द में की जा सकती है और वह शब्द है मानवीय कर्तव्य। मानव द्वारा वे करणीय कार्य जिनसे स्वहित एवं सर्वहित साधा जा सके। मानवता के स्तर से गिर जाने को पतन कहिए या दुर्गति और उस स्तर से ऊपर उठने का नाम है सुगति। अतः धर्म वह है जो दुर्गति में गिरते हुए प्राणी को धारण करे और उसे सुगति में पहुँचावे। आगम के अनुसार मानव धर्म की व्याख्या करेंगे तो वह यह होगी कि इहलोक और परलोक के सुख के लिए हेय, जो छोड़ने लायक है तथा उपादेय, जो ग्रहण करने लायक है उन प्रवृत्तियों को तदनुसार छोड़े व ग्रहण करे-वह धर्म में विचरण करना होगा।

ऐसे मानव-धर्म के दस लक्षण बताए गए हैं जिनकी मान्यता के विषय में कहीं भी कोई विवाद नहीं है:-

- (1) **क्षमा** : क्रोध पर विजय प्राप्त करना तथा क्रोध का कारण उपस्थित होने पर भी शान्ति बनाए रखना।
- (2) **मार्दव** : मान (घमंड) का त्याग करना। जाति, कुल, रूप, ऐश्वर्य, बल, पद और यहाँ तक कि तप, ज्ञान, लाभ में से किसी का भी मद नहीं करना। मिथ्याभिमान का सर्वथा त्याग कर लेना।
- (3) **आर्जव** : कपटरहित होना। माया, दंभ, आडम्बर, धूर्तता आदि को पूर्ण रूप से छोड़ देना।
- (4) **मुक्ति** : लोभ पर विजय प्राप्त करना। पौद्गलिक एवं भौतिक वस्तुओं पर तनिक भी आसक्ति नहीं रखना।
- (5) **तप** : इच्छाओं का निरोध करना तथा कष्ट सहने की क्षमता बनाना।
- (6) **संयम** : मन, वचन एवं काया की दुष्प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाना व अशुभ प्रवृत्तियाँ न होने देना। क्रोध, मान, माया व लोभ रूप चारों

कषायों को जीतना तथा पाँचों इन्द्रियों को वश में रखना। प्राणातिपात आदि पाँच पापों से निवृत्त होना और संयमित बनना ।

- (7) **सत्य** : सत्य, हित, मित और प्रिय वचन बोलना।
- (8) **शौच** : शरीर के अंगों को पवित्र रखना तथा दोष रहित आहार लेना द्रव्य-शौच है तो आत्मा के शुभ भावों को अभिवृद्धि करना भाव-शौच है।
- (9) **अकिंचनत्व** : किसी वस्तु पर मूर्च्छा-ममता न रखना। परिग्रह बढ़ाने, संग्रह करने या रखने का त्याग करना।
- (10) **ब्रह्मचर्य** : नववाड़ सहित पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना।

मानव धर्म का मूल इस प्रवृत्ति में भी है कि छोटे बड़े सभी जीवों की रक्षा की जाय और उन्हें बचाया जाय। इसी प्रकार कर्मों के मैल से मुक्त होने के लिए सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन एवं सम्यक् चारित्र रूपी तीन गुणों की जो आराधना है, वह भी धर्म ही है। सारांश में यों मान लें कि जिस अनुष्ठान या कार्य से स्व-पर कल्याण की प्राप्ति हो, वही धर्म है। मानव को कल्याणोन्मुख बनाने वाली समस्त प्रवृत्तियों का नाम ही धर्म है।

## धर्म के मार्ग पर विकास यात्रा

कल्याण साधने की विकास-यात्रा पर धर्म मानव को कैसे अग्रसर बना सकता है- इस प्रश्न पर अधिक विवेचन के रूप में धर्म के विभिन्न भेदों का उल्लेख किया गया है। ये भेद धर्म के चहुँमुखी स्वरूप पर प्रकाश डालते हैं तो मानव को भी धर्म धारण करने की विविध प्रक्रियाओं का ज्ञान कराते हैं। धर्म के वैचारिक एवं क्रियात्मक स्वरूप को स्पष्ट किया गया है। धर्म के इन मौलिक दो भेदों में-

- (1) **श्रुत धर्म** : अपने साधनामय जीवन के अनुभवों के बाद महापुरुषों ने सामान्य जीवन विकास के सम्बन्ध में जो उपदेश दिये- जो वाणी गुंजाई-

उसे मनुष्य सुनता है अतः उसे श्रुत धर्म का नाम दिया गया है। यही वाणी अंग, उपांग, सूत्र और शास्त्रों के रूप में संकलित हुई है अतः वाचना (पढ़ना) पृच्छना (पूछना) रूप स्वाध्याय को भी श्रुत धर्म ही कहा है। सूत्र एवं उनके अर्थ को समझने की दृष्टि से श्रुत धर्म के दो भेद किए गए हैं- सूत्र श्रुत धर्म एवं अर्थ श्रुत धर्म।

- (2) **चारित्र धर्म** : जो कुछ कल्याणकारी ज्ञान सुनकर प्राप्त किया जाए उसे अपने आचरण में उतारने तथा उससे आत्म-स्वरूप को विशुद्ध बनाने के प्रयास का नाम चारित्र धर्म है। इस धर्म की दो सीढ़ियाँ मानी हैं- एक अगार धर्म अर्थात् सीमित रूप से श्रावक के अणुव्रतों का पालन किया जाय तथा दूसरा अनगार धर्म यानी सर्वविरति रूप साधु के पंच महाव्रतों की तीन करण तीन योग से साधना की जाए।

ये दोनों भेद प्रधानतः व्यक्तिपरक हैं कि व्यक्ति श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त करें एवं उस ज्ञान को अपनी सदाचरण रचना में क्रियान्वित करें। व्यक्ति की यह ज्ञान एवं चारित्र-साधना स्वहित के लिए है तो उसके इस स्वहित में मूलतः सर्वहित का ही सद्भाव समाहित रहता है। स्वहित एवं सर्वहित की सम्मिलित भावना को धर्म के इस रूप में किए गए निम्न चार भेद भी व्यक्त करते हैं:-

- (1) **दान** : स्व एवं पर उपकार के लिए अर्थी यानी जरूरतमन्द पुरुष को जो दिया जाता है, उसे दान कहते हैं। दान कई प्रकार के हो सकते हैं जैसे अभयदान, अनुकम्पा दान, सुपात्रदान, ज्ञानदान आदि। इनका पालन करना दान धर्म कहलाता है।
- (2) **शील (ब्रह्मचर्य)** : काम वासनाओं एवं मैथुन का त्याग करना शील है। शील का पालन करना शील धर्म कहलाएगा। शील सर्व विरति एवं देश

विरति रूप से दो प्रकार का होता है। देव, मनुष्य एवं तिर्यच सम्बन्धी मैथुन का सर्वथा तीन करण तीन योग से त्याग करना सर्व विरति शील है। स्वपत्नी सन्तोष तथा पर-स्त्री विवर्जन रूप ब्रह्मचर्य देशविरतिरूप शील है।

- (3) **तप** : तप वह जो आत्मा के आठ प्रकार के कर्मों तथा शरीर के सात धातुओं को तपाकर विशुद्ध बनाता है। तप बाह्य एवं आभ्यन्तर रूप दो प्रकार का है। अनशन, ऊनोदरी, भिक्षाचर्या (वृत्तिसंक्षेप), रसपरित्याग, कायक्लेश और प्रतिसंलीनता ये छः बाह्य तप हैं। प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, ध्यान और व्युत्सर्ग-ये छः आभ्यन्तरतप हैं।
- (4) **भावना** : आत्मा अशुभ भावों को दूर करके अपने मन को शुभ भावों में प्रवृत्त करने के लिए अनित्यता, अशरणता आदि बारह भावनाओं का जो चिन्तन करती है, वह भावना या आराधना होती है। मैत्री, प्रमोद, कारुण्य और माध्यस्थ ये भी चार भावनाएँ हैं। व्रतों को निर्मलतापूर्वक पालन करने के लिए व्रतों की पृथक्-पृथक् भावनाएँ भी बतलाई गई हैं। मन को एकाग्र बनाकर उसे इन शुभ भावनाओं में लगा देना ही भावना धर्म है।

### मानव धर्म की व्यापकता

धर्म साधना का केन्द्र बिन्दु मानव को ही माना गया है क्योंकि सभी प्राणियों में समुन्नत विवेक एवं कर्तृत्व शक्ति का धारक मानव ही होता है और मानव ही समाज या राष्ट्र का निर्माता भी होता है। मानव का एक पक्ष जहाँ वैयक्तिक है तो उसका दूसरा पक्ष सामूहिक या सामाजिक भी है। समाज या राष्ट्र मानव से भिन्न नहीं होता। मानव ही विभिन्न वर्गों में अपने

साथियों के साथ जब विभिन्न प्रकार के कर्तव्यों का निर्वाह करता है तब वे कर्तव्य ही उसके सामूहिक या सामाजिक पक्ष का परिचय देते हैं।

इस दृष्टि से मानव धर्म की व्यापकता एक व्यक्ति से समस्त व्यक्तियों तक फैली हुई मानी जाती है। इस व्यापक मानव धर्म को भी विचारकों ने दस प्रकारों में निम्न रूप से आबद्ध किया है:-

- (1) **ग्राम धर्म** : प्रत्येक ग्राम के रीति-रिवाज और उनकी आन्तरिक व्यवस्था भिन्न-भिन्न रूप में हो सकती है अतः उसके अनुरूप चलना तथा उन्हें उन्नतिपरक बनाना ग्राम धर्म कहा गया है।
- (2) **नगर धर्म** : इसी प्रकार नगर विशेष में रहते हुए वहाँ के आचरणीय धर्म को नगर धर्म कहा गया है।
- (3) **राष्ट्र धर्म** : इसी रूप में राष्ट्र विशेष में रहते हुए वहाँ के आचार का पालन करना राष्ट्र धर्म है।
- (4) **पाखंड धर्म** : पाखंडी अर्थात् विविध सम्प्रदाय वालों के आचार-पालन पर हठ करना यह पाखंड-धर्म यानी अधर्म है।
- (5) **कुल धर्म** : उग्र कुल आदि कुलों के आचार तथा गच्छों के समूह रूप कुलों के आचार यानी समाचारी का पालन।
- (6) **गण धर्म** : गणों की व्यवस्था अथवा कुलों के समुदाय की समाचारी का पालन करना।
- (7) **संघ धर्म** : साधु-साध्वी व श्रावक-श्राविका रूप चतुर्विध संघ अथवा मानव कल्याण के उद्देश्य से स्थापित किसी भी संघ की व्यवस्था को स्वीकार कर उसका पालन करना।
- (8) **श्रुत धर्म** : महापुरुषों की वाणी एवं शास्त्रों के वचनों का अनुगमन करना।
- (9) **चारित्र्य धर्म** : सर्व प्रकार से जीवन में विशुद्धि लाने के उद्देश्य से सदाचरण का निर्माण करना।

**(10) अस्तिकाय धर्म :** अस्ति अर्थात् प्रदेशों की काय यानी राशि को अस्तिकाय कहते हैं। काल के सिवाय छः में से पाँच द्रव्य- धर्म, अधर्म, आकाश, जीव एवं पुद्गल अस्तिकाय कहलाते हैं। जैसे- धर्मास्तिकाय का स्वभाव जीव और पुद्गल को गति सहायता देना है।

इस प्रकार धर्म का चिन्तन करने का अभिप्राय है सभी प्रकार के कर्तव्यों का स्मरण ताकि जीवन की रचनात्मकता विस्तृत होती जाए।

### **ध्यान में रहे अपना धर्म**

आप सब अपने आपको मानव तो मानते हैं न? मानव कहलाना एक बात है किन्तु मानव बनना कुछ दूसरी ही बात है। मानव को सच्चे रूप में मानव बनने के लिए सदा अपने धर्म को ध्यान में रखना चाहिए। धर्म का चिन्तन भी हो तो धर्म से ही विकास लक्ष्य का सम्पादन भी। धर्म के धरातल पर आधारित होकर ही जीवन की विकास यात्रा सफल बन सकती है।

यों भी कह सकते हैं कि जीवन में सबसे पहले धर्म की धारणा स्वस्थ एवं पुष्ट हो जाने के बाद सारी लौकिक एवं अलौकिक उपलब्धियाँ सुप्राप्य बन जाती है। सभी चिन्तकों ने जीवन के प्रधान लक्ष्य माने हैं- धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष। यह ध्यान देने योग्य बात है कि धर्म और मोक्ष के बीच में अर्थ और काम को स्थान दिया गया है। इसका क्या आशय है?

जीवन में जब धर्म यानी कर्तव्यनिष्ठा का प्रवेश हो जाएगा, तब अर्थ और काम की लालसा उतनी ही रह जाएगी जिससे कि गृहस्थ धर्म का निर्वाह हो सके। अर्थ व काम सीमित और संयमित रह जाने से मानवीय मूल्यों की कोई क्षति नहीं होगी। अर्थ और काम के प्रति निरपेक्षता पुष्ट हो जाने के बाद धर्म गूढ़ता एवं क्रियात्मकता बढ़ती ही जाएगी, जो साधक को एक

दिन मोक्ष के द्वार पर खड़ा कर देगी।

किन्तु विकास यात्रा की यह गति तभी स्वस्थ रूप से प्रगतिशील बनी रहेगी जब अपने धर्म को आप सदा ध्यान में रखेंगे।

ध्यान में रखिए कि मात्र धर्म स्थान में आ जाने से ही धर्म नहीं हो जाता है। यहाँ सन्त मुनिराज जो कल्याणकारी वाणी सुनाते हैं उसे दत्तचित्त होकर सुनें और उसके श्रवण से जो जिज्ञासाएँ उत्पन्न हों उनका सन्तोष कारक समाधान लें। ज्ञान की सुस्थिरता के बाद धर्म चिन्तन करें और पालन को जीवन के समग्र क्षेत्रों तक विस्तृत बनावें। धर्म स्थान को तो मुख्य रूप से धर्म विद्यालय समझकर धर्मध्यान से अपने को समृद्ध बनावें ताकि आप मानव-धर्म का निश्चल मति से अनुपालन कर सकें।

मनुष्य को अपना तन चलाने के लिए प्राथमिक रूप से तीन वस्तुओं की आवश्यकता रहती है- हवा, जल और अन्न। और शरीर निश्चय रूप से धर्म का साधन है अतः धर्म साधना के लिए शरीर सक्षम बना रहे उतनी मात्रा में निरवद्य रूप से इन तीनों वस्तुओं को उपयोग में लिया जावे, बाकी तृष्णा को जीवन में स्थान न दें तो मानव तन का सदुपयोग होगा तथा मानव जीवन का उच्चतम विकास साधा जा सकेगा।

अतः नित्य चिन्तन करें कि आत्मा को विभाव में गमन करने से किस प्रकार रोकें और किस प्रकार उसे अपने स्वभाव-धर्म में स्थापित करें? चिन्तन करें कि स्वभाव में स्थापित करने वाले धर्म के वे बिन्दु यानी कि कर्तव्य कौन-कौनसे होंगे जो समग्र मानव जाति और प्राणी समाज का हित सम्पादित कर सकेंगे? स्वहित एवं सर्वहित रूप धर्म-समन्वय का भी चिन्तन करें।

**दि. 20-7-1986**

**साभार- नानेशवाणी-36 (सर्व मंगल सर्वदा)**



# धम्मो मंगलमुक्कट्टं

-पश्म पूज्य आचार्य प्रवृ 1008 श्री रामलालजी म.सा.

## संभव देव ते धुर सेवो सवे रे.....

तीर्थकर देवों की चरणोपासना एक दृष्टि से बहुत सहज है, सरल है। आप संतों के पास पहुँचते हैं, चरणस्पर्श कर लेते हैं और स्वयं को धन्य-धन्य, कृतकृत्य मान लेते हैं। उससे भी लाभ होता है, किन्तु केवल चरणों का स्पर्श आत्मकल्याण में पूर्ण सहयोगी नहीं बनता। कवि आनंदघनजी ने भावना व्यक्त की है कि उनकी उपासना, सेवा या भक्ति ध्रुव हो अर्थात् उसके बीच में बाधा न पड़े। विचारणीय यह है कि इस प्रकार की सेवा, उपासना कैसे हो? जब सेवा की बात कही जा रही है तब यह जिज्ञासा होती है कि हम तीर्थकर देवों की क्या सेवा कर पाते हैं? हम उनका कार्य तो कर नहीं सकते और यहाँ अभी उनकी विद्यमानता भी नहीं है, फिर सेवा कैसे की जाए? तब यह कहा जा सकता है कि वर्तमान में न कर सकें तो कोई बात नहीं, किन्तु जिस समय तीर्थकर देवों की उपस्थिति बनी हुई होती है, उस समय तो कर सकते हैं? तब तुरन्त यह पूछा जाएगा कि उस समय कैसे कर सकते हैं? क्या श्रावक उनके हाथ-पैर दबाने या गोचरी-पानी लाने की सेवा कर सकते हैं? तब कहा जाएगा- नहीं, ऐसे तो नहीं करनी होती है। फिर किस प्रकार की सेवा कर सकते हैं? उत्तर होगा कि हम बाह्य सेवाओं के रूप में कार्य नहीं कर सकते। कोई सोचे,

उनकी मूर्ति बनाकर पूजा-आरती कर लूँ, तो यह भी भ्रांति होगी। यदि हमारा भाव नहीं जुड़ा तो आरती उतारने से सेवा नहीं होगी। देखना यह होता है कि यथार्थ में आरती के साथ हमारी भावना जुड़ी है या नहीं?

भगवान महावीर से प्रश्न किया गया- भगवन्! किसी की धर्म पर श्रद्धा है किन्तु वह धर्म का आचरण नहीं कर रहा है। ऐसे पुरुष को, जिसे धर्मश्रद्धा है, उसे धर्मश्रद्धा का क्या फल मिलता है?

“धम्मसद्भाए णं भंते! जीवे किं जणयइ?”

(उत्तराध्ययन सूत्र 29/3)

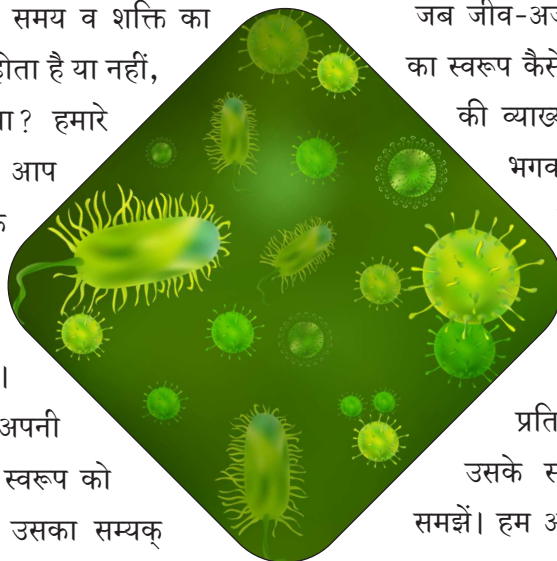
यदि आपको उत्तर देना हो तो आप कह देंगे मोक्ष मिलेगा, पर पहले यह चिन्तन करिए कि उसने धर्म को जाना है या नहीं? यदि उसे धर्म का परिज्ञान नहीं है तो उसकी धर्मश्रद्धा कैसे बनेगी? धर्म क्या है? उसका स्वरूप उपस्थित करते हुए कहा गया है-

“धम्मो मंगलमुक्कट्टं. अहिंसा संजमो तवो।”

धर्म कोई मामूली चीज नहीं है। जैसे आप कपड़े की पोशाक का प्रयोग करते हैं, वैसे ही धर्म की रीतियों का प्रयोग करें तो वह धर्माचरण नहीं होगा। इसे एक उदाहरण से समझिए। लोग प्रतिवर्ष चातुर्मास का आग्रह करते हैं। साधु-साध्वी वर्ग के जितने सिंघाड़े हैं, उनसे बढ़कर विनती करने वाले होते हैं। चातुर्मास भी होते हैं। इसके उपरान्त यदि हम जानकारी करना चाहें



कि चातुर्मास में उपलब्धि क्या हुई, तो निराशा होती है कि जैसा संतोषप्रद परिणाम आना चाहिए था, वैसा आ नहीं पाता। कारण यह है कि हमारी दृष्टि ऊपर के कार्यों पर रहती है, उनके पीछे की भावनाओं पर नहीं। हम होड़ लगा लेते हैं कि अधिक से अधिक तपस्याएँ हो जाएँ, अधिक से अधिक मासखमण हो जाएँ। पूर्व में यदि सौ अठाइयाँ हुई थी तो प्रयत्न होगा कि इस बार दो सौ हो जाएँ। हजार तेले कराने का प्रयत्न होगा तो हजार तेले करा लेंगे, ताकि रिकॉर्ड बना सकें। प्रतिक्रमण ज्ञान-ध्यान की भी होड़ लगा लेंगे। मैं आपसे पूछता हूँ कि क्या अधिक से अधिक लोगों द्वारा सामायिक-प्रतिक्रमण, स्वाध्याय-थोकड़े आदि सीखने को संतोषकारक अवस्था माना जा सकता है? क्या इतनी ही उपलब्धि के आधार पर किसी चातुर्मास को पूर्णतया संतोषप्रद कहा जा सकता है? मेरे मतानुसार यह चातुर्मासों की पूर्णतया संतोषप्रद अवस्था नहीं है। मेरा आशय समझिए। यह मत समझना कि साधु-साध्वी ऐसी ऊपरी उपलब्धियाँ दिखाने के लिए अपना समय देते हैं। वे समाज को जागृत करने के लिए अपने समय व शक्ति का भोग देते हैं, पर हमें संतोष होता है या नहीं, यह भी आपने कभी सोचा? हमारे संतोष की प्रकृति को भी आप समझें, जिससे धर्मारोधना के क्षेत्र में होने वाली औपचारिकताओं के स्वरूप का आपको ज्ञान हो जाए। हमें संतोष तब होगा जब अपनी धर्मारोधना की प्रकृति और स्वरूप को भी आप स्वयं समझें और उसका सम्यक्



मूल्यांकन करें। आप मूल्यांकन करें कि आपने अपनी प्रवृत्तियों में परिवर्तन किया या नहीं? कहीं ऐसा तो नहीं कि वे ही घोड़े और वही मैदान! तब आप सोचें कि आपकी प्रवृत्तियों में, दिनचर्या में बदलाव आया है या नहीं? आपके मासखमण पर मासखमण या अठाई पर अठाई करने के बाद या बीच में अहंकार वैसा ही फुफकार रहा है या शान्त हुआ है। यदि हेकड़ी या अकड़पन में कोई अंतर नहीं आया है तो फिर तपस्या की सार्थकता क्या रही? तपस्या तो बहुत की, पर क्रोध नहीं मिटा, अहं नहीं मिटा, तो मासखमण क्या, निरन्तर मासखमण पर मासखमण करें तो भी कल्याण नहीं होना है। फिर आपने धर्म को क्या समझा? कभी आप समझ लें कि आपने तपस्या, ज्ञान-ध्यान, स्वाध्याय कर लिया तो धर्म कर लिया है तो ऐसी बात नहीं है। यदि उसके पीछे भी लौकिकता के भाव जुड़े थे तो यह जीवन को पवित्र नहीं बना पाएगा। इसलिए पहले धर्म को समझने की आवश्यकता है, क्योंकि-

**धर्म-धर्म सब कोई कहे, धर्म न जानत कोया  
जात न जाने जीव की, धर्म किस विधि होया।**

जब जीव-अजीव ही नहीं जानेगा तो धर्म का स्वरूप कैसे समझेगा? किस रूप में धर्म की व्याख्या या आचरण कर पाएगा? भगवान ने चार प्रकार की गति, पाँच जाति व छह प्रकार की काया बताई है, जिनमें सारे संसारी जीवों का समावेश हो जाता है। उन जीवों के प्रति हमारे मन में क्या भाव हैं? उसके स्वरूप और प्रकृति को भी समझें। हम अहिंसा को महत्त्व देते हैं, पर

वास्तविकता यह है कि हमने कायरता पर अहिंसा का कवच धारण किया है। यदि कायरता पर आवरण डाल लें तो वह आवरण कल्याण नहीं कर सकता है, न ही हमारा परलोक सुधार सकता है। धर्म व अहिंसा कभी कायर होना नहीं सिखाते। यह बात अलग है कि हम अपनी कमजोरी ढकने के लिए उस आवरण को पसन्द कर लेते हैं।

भगवान महावीर के श्रावकों ने कभी यह विचार नहीं किया कि उनकी तपस्या चल रही है, तो रणभूमि में कैसे जाएँ? उन्होंने जरूरत पड़ने पर रणभूमि में शस्त्र भी उठाए। यद्यपि युद्ध उनका लक्ष्य नहीं था, पर जब उन पर युद्ध थोपा गया तो वे पीछे नहीं हटे। किन्तु आज स्थिति यह है कि चींटी की रक्षा के लिए तो हम ओघा-पूजणी रखते हैं किन्तु जहाँ पंचेन्द्रिय के वध की बात आती है तो ओघा-पूजणी पता नहीं कहाँ चले जाते हैं?

आनन्द आदि के समय के श्रावकों का जीवन कभी सुना, कभी कल्पना की, कभी स्थितियों पर विचार किया? हमने शास्त्रों का पारायण ही नहीं किया, जरूरत ही नहीं समझी। जहाँ तब एक श्रावक के घर में 40,000, 60,000, 80,000 पशु मिल जाते थे वहाँ आज सारी बिन्दियाँ हटा दें, फिर जितने अंक बचें उतने भी न मिलें। आप कहेंगे- अंक हटा दीजिए, बिन्दियाँ रहने दीजिए। आप बिल्कुल ठीक कहेंगे। यही है अधिकांश घरों के हालात। उनसे यदि पूछ लें कि तब वे दूध क्यों पीते हैं? संकल्प कर लें कि घर में जो दुधारू पशु नहीं रखेंगे वे दूध लाएँगे नहीं। दूध की आवश्यकता नहीं है। क्या दूध के बिना जीवन चल नहीं सकता? पर कितने मिलेंगे ऐसे? जिन पशुओं का हम दूध पीते हैं वे पशु यदि कल्लखानों में जा रहे हैं तो हम में अहिंसा का प्रतिष्ठान होगा क्या? क्या उनके प्रति करुणा के भाव बनेंगे, जिनका

दूध हमने पीया है? पुराने समय के ऐसे भी आख्यान सुने गए हैं कि यदि किसी का नमक खा लिया तो उसके यहाँ चोरी नहीं करते थे। तब कहावत थी- 'एक चुटकी नमक खा लिया है अतः नमकहरामी नहीं करेंगे।' विचार करें, हमने एक जिन्दगी में कितने लीटर दूध पी लिया, पर कभी इन दूध देने वाले पशुओं के विषय में सोचा? हमारी अवस्था पशु से बदतर तो नहीं हो गई है? गाय बछड़े को जन्म देती है तो उसके लिए तड़फती है, उसके इर्द-गिर्द घूमती है। पर आज की माताएँ बालक को बाहर ही नहीं आने देती। गर्भ में रहते हुए भी शिशु किस प्रकार छटपटाते हैं, इसकी रील जब मुम्बई के एक डॉक्टर के सामने आई तब गर्भ के भीतर हिंसा की उस रील का उस पर ऐसा गहरा प्रभाव पड़ा कि उसके बाद उसने गर्भपात करना बंद कर दिया। उनका दिल दहल उठा। ओह! मैं क्या करता रहा हूँ! एक हम जैनी कहलाने वाले हैं जो एक चींटी की भी रक्षा का प्रयत्न करते हैं किन्तु अपने ही कलेजे की कोर का कल्लेआम होने देते हैं। फिर कहाँ दया-करुणा रहेगी?

भगवान् महावीर ने कहा- जिसके चौके में माँस पकता है उसके यहाँ साधु को गोचरी नहीं जाना, पर जिसके घर में ऐसा कल्लखाना चले तो वहाँ साधु क्या करे? और ये स्थितियाँ मालूम भी नहीं हो पातीं। जब करुणा ही नहीं रही तो धर्म कहाँ रहेगा?

**‘दया धर्म का मूल है।’** यह दया घटती जा रही है और यही प्रदूषण का कारण बनता है। अंदर का प्रदूषण बाहर फेंका जाता है और उससे वातावरण प्रदूषित हो जाता है। भगवान ने कहा- वनस्पति की भी रक्षा करनी चाहिए। हम सोचें कि भगवान ने ये जो बातें कह दी हैं। वे बातें आज हमारे लिए कितनी महत्वपूर्ण हैं? जहाँ जंगल कटे, सारा वातावरण परिवर्तित हो गया,



ऋतुओं की प्रकृति ही बदल गई, अब वर्षा समय पर नहीं होती, यह सारा क्यों हुआ? भगवान ने कहा- पानी के जीवों की रक्षा करो, पर आप हैं जो अपने स्वार्थ के लिए वनस्पति की और पानी के जीवों की हिंसा करते हैं। आपको यदि हजारों लीटर पानी की पीने के लिए आवश्यकता है, सिंचाई के लिए आवश्यकता है तो वहाँ भगवान ने कहा है कि वह अर्थदण्ड है। पर एक लोटा पानी भी यदि निरर्थक डाला तो वह अनर्थदण्ड है। आज अनर्थदण्ड कितना हो रहा है? हमने पानी का सदुपयोग कितना किया और दुरुपयोग कितना किया, सोचा कभी?

हम नहीं जानते कि पानी की तंगी कैसी होती है। पर जहाँ तंगी है वहाँ एक-एक लोटा पानी बचाने का प्रयत्न किया जाता है। भगवान महावीर ने जो पहले ही कह दिया था यदि उस शिक्षा को धारण करते तो यह नौबत नहीं आती। पर हमने समझा ही नहीं। उन शिक्षाओं को शास्त्रों में और शास्त्रों को लाइब्रेरियों और आलमारियों में बंद कर दिया। पर पूछ लें कि पढ़े कितने, गुणे कितने? गुणे नहीं, जीवन में उतारा नहीं। वैद्यजी से दवा लाकर आलमारी में रख दी, तो क्या बीमारी ठीक हो जाएगी? बीमारी ठीक नहीं हुई होगी। प्रभु महावीर ने हमें दवा दी, आज के डॉक्टर की दवा का तो रिएक्शन भी हो सकता है, पर भगवान

महावीर की औषधि ऐसी है जिससे लाभ होगा और यदि लाभ नहीं हो तो नुकसान होने जैसी स्थिति कभी नहीं आएगी। उस दवा का सेवन कीजिए। यदि नहीं करते हैं तो गलती आपकी है। जो बीमारी है, वह ठीक नहीं होगी।

घर में बर्तन धोने का काम नौकर करते हैं, पहले लोग राख से, बालू से और मारवाड़ में रेत प्रचुर है, उससे मांज लेते थे तो बर्तन को धोने की भी आवश्यकता नहीं पड़ती थी। पानी कितना बच जाता था, पर आज रेत से मांजने की आवश्यकता ही नहीं। बहिनें पाउडर लगाकर, नल के नीचे धो लिया करती हैं, भले पानी लगातार बहता जा रहा हो। टब या बर्तन में धोते हैं तो एक बाल्टी में दो-तीन बार बर्तन धुल सकते हैं, पर नल खुला छोड़ दिया तो कोई मर्यादा नहीं, कितना ही पानी बह जाए। एक तो पानी का इतना वेस्टेज होता है, दूसरा वॉशिंग पाउडर के पानी से नाली में कितने-कितने जीवों की घात होती है। आप समझ तो रहे हैं, पर कितने तैयार हैं कि बर्तन नल के नीचे नहीं धोएँगे? स्नान करने के लिए अलग से पानी लेकर बैठें तो एक बाल्टी में काम हो जाए और नल के नीचे बैठें तो? आज तो नल के नीचे से भी काम नहीं चलता। फव्वारे लगे हैं, बैठ गए पानी के कीड़े बनकर। ध्यान रखिए, देवलोक के देव भी जल-बावड़ियों में आसक्त होते हैं तो वहाँ से च्युत होकर अप्काय की योनि में चले जाते हैं। हम भी पानी के कीड़े बन गए हैं, स्वीमिंग पूल में स्नान कर रहे हैं। तब आयु का बंध हो गया तो वहीं पानी के जीव के रूप में उत्पत्ति तो नहीं हो जाएगी। एक बार वहाँ चले गए तो कितने ही काल उन्हीं स्थावर कार्यों में बीत जाएँगे, इसका पता है क्या? देवगति के देव भी जीवन हार जाते हैं। मनुष्य योनि के मनुष्य भी हारते रहे हैं, पर हमें यह सुन्दर अवसर मिला है, इसका सदुपयोग करें।

हमें भगवान महावीर की औषधि प्राप्त हुई है, चाहें तो भविष्य को सुन्दर बना सकते हैं। इसके लिए भविष्य की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। वर्तमान की नींव सही भरें तो भविष्य की बिल्डिंग स्वतः ही सुदृढ़ होगी। वर्तमान को खराब कर दिया तो भविष्य तो निश्चित ही खराब होगा। इसलिए समय रहते चिन्तन करने की आवश्यकता है। तीर्थंकर देवों ने जो बातें कही हैं, हमने उन्हें समझा नहीं है, इसी कारण चारों ओर प्रदूषण देखना पड़ रहा है। वैज्ञानिक कहते हैं कि ओजोन छतरी में छेद हो गए हैं, क्योंकि गैसों बहुत निकलती हैं। उत्पादन क्रिया के दौरान क्लोरोफ्लोरो गैस निकलती है। एक सर्वे के अनुसार एक वर्ष में 362000 टन यह गैस निकलती है। उससे उसमें छिद्र होते हैं। उसके कारण सूर्य की पराबैंगनी किरणें जमीन पर आ रही हैं और मनुष्यों के जीवन के लिए खतरा पैदा कर रही हैं। आज इस स्थिति से वैज्ञानिक परेशान हैं, क्योंकि उन्होंने जो आविष्कार किए हैं वे ही उनके लिए हानिकारक बन रहे हैं।



हम देखें कि हम जीवन का, जीवन के साधनों का दुरुपयोग तो नहीं कर रहे हैं? जो साधन हमारे जीवन को बसर कराने वाले हैं, उन्हें बर्बाद तो नहीं कर रहे हैं? पानी, हवा, वनस्पति आदि जीवन के लिए प्राण हैं, वे नहीं रहे तो हम सुरक्षित नहीं रह सकते। उनके बिना आपकी आवश्यकताओं की पूर्ति कैसे हो सकती है? एक-एक तत्व में कितनी क्षमता है, कितनी अच्छाई है, ध्यान है क्या आपको? वे उपकारी हैं। उपकारी के प्रति आपका कितना कृतज्ञ भाव है, इस पर विचार करें।

पुराने समय में वनस्पति को सींचा जाता था। आज आप काटते हैं। हमारी संस्कृति में कितनी चेतना है, पर हमने सोच लिया है कि ये परम्पराएँ सब ढकोसला हैं, अंध-विश्वास हैं। वह अंधविश्वास नहीं, एक परम्परा है। पीपल के नीचे शिवलिंग रखा जाता है और ऊपर एक मटकी रहती है जिसमें से टप-टप पानी के टपकने की व्यवस्था रहती है। हमने सोचा, यह अंधविश्वास है, पर इसके पीछे विज्ञान है। गर्मी में जहाँ पीने को पानी न मिले वहाँ पेड़ों को पानी कौन देगा? पर देव, गुरु, धर्म के नाम पर व्यक्ति लाखों रुपये खर्च करने को तैयार हो जाते हैं तो वहाँ शिवलिंग पर पानी छोड़ेंगे तो वह निरन्तर टपकता रहेगा। वह पानी बहकर कहाँ जाता है? पीपल की जड़ों में। इस प्रकार पानी का सिंचन होता है। एकदम तेज पानी आ गया तो वह कभी जड़ को उखाड़ भी सकता है, पर जो टप-टप करके पड़ता है वह पेड़ों को पुष्टता देता है। यदि ऐसे रहस्यों को आप जान जाएँ तो आपको पता लगेगा कि हमारे पूर्वजों ने कैसे फॉर्मूले अपनाए थे कि पेड़-पौधों को जीवन मिल जाए? यदि चिंतन करें तो वह पेड़-पौधों के लिए नहीं, हमारे लिए ही है। हम उनको काटते हैं तो हमें शुद्ध ऑक्सीजन नहीं मिलती। पहले शुद्ध पानी मिलता था, पर आज कितने केमिकल्स मिले हुए होते हैं! हमने पानी के साथ खिलवाड़ किया, परिणाम यह हुआ कि आज पानी के लिए बहुत गहराई तक उतरना पड़ रहा है। आज बारूद डालकर हम गहरे में जा रहे हैं, पर पानी भी सतह छोड़ने लगा है। आने वाले समय में पानी की क्या स्थिति रहेगी, इसकी कोई जानकारी है? आज तो हमें मिनरल वाटर की बोतल

चाहिए। मुखौटा सुन्दर चाहिए। यथार्थ में मुखौटा नहीं, जीवन सुन्दर होना चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द विदेश गये, तब उन्होंने गेरू वस्त्र पहन रखे थे। एक महिला ने अपने पति से कहा- कैसा भारतीय है! वस्त्र पहनने तक का सलीका नहीं। स्वामी विवेकानन्द ने कहा- “भारत में पहचान कपड़ों से नहीं होती है। यहाँ आप देखते हैं कि कपड़े कैसे हैं, बाल कैसे हैं, केश-कटिंग कैसी है, पर हमारे यहाँ व्यक्ति की पहचान कपड़े-जूते से नहीं उसके चरित्र से होती है।” आज बात अलग है। पहले भोजन हाथ से खाना चाहते थे और आज खाने के लिए चम्मच चाहिए। अब हाथ से खाना खाएँ तो गँवार कहलाएँगे।

जो मांसाहारी होते हैं उनके दाँत कीलों की तरह नुकीले होते हैं। आज हम बच्चों को काँटे से रसगुल्ले मुँह में रखना सिखाते हैं, पर हम नहीं जानते कि हाथ से उठाकर मुँह में रखने का रहस्य क्या है? आज घुटनों में दर्द की शिकायत क्यों हैं? उसका एक कारण अंधानुकरण है। पहले हाथ से खाते, सब्जी में अंगुलियाँ डूबती, उनमें तेल-घी की चिकनाई लगती जो नाखून के पास की संवेदनशील चमड़ी से घुटने तक पहुँचती थी और मांसपेशियों को शक्ति और गति प्रदान करती थी। आप कहते हैं कि पुराना घी खाया हुआ है, पर आज तो फुलका तोड़ने में भी कठिनाई होती है। आज तो कहेंगे-

**मुक्के से तो पापड़ तोड़ूँ, कर से तोड़ूँ सूता।**

**पेड़ों पर से कूद पड़ूँ मैं, मेरा नाम रजपूता।**

देखा, मैंने पापड़ तोड़ लिया। आज रोटी तोड़ने में भी हाथ कंपित होते हैं। कितने पराधीन हैं हम? तो धर्म कैसे करेंगे? श्रम को भूलेंगे तो धर्म कैसे होगा? श्रम से ही धर्म का पालन कर सकते हैं। श्रावक हों या श्रमण, जो श्रम सही तरीके से करेगा वही धर्म का

पालन कर पाएगा। श्रम न हो तो बीमार हो जाएँगे। बीमार क्या धर्म-पालन कर पाएगा? समय रहते चेत जाइए। 21वीं सदी में किस रूप में प्रवेश पाना चाहते हैं? शताब्दियाँ बदली, फिर भी आदत नहीं बदली तो कितनी ही शताब्दियाँ निकल जाएँ, आत्मा का कल्याण नहीं होगा। आज से नया संकल्प करिए, चिन्तन करिए। हमें अहंकार पर विजय प्राप्त करनी है।

जीवन एकान्त में जीया नहीं जाता, जीवन के अस्तित्व का आधार है परस्पर निर्भरता। इस तथ्य को हम समझें और यह भी समझें कि सभी वनस्पतियों और जीवों की बराबर की उपयोगिता है, चाहे वे बुरे और हिंसक या सरल और शान्त प्रकृति के हों। ये दोनों मिलकर प्रकृति में संतुलन स्थापित करते हैं। हम समता-समाज की आवश्यकता और उसके निर्माण की बात करते हैं तो समझ लें कि प्रकृति में कुछ भी अनावश्यक नहीं है। हमारा दृष्टिकोण, आवश्यकता या उपयोगिता की धारणा ही प्राकृतिक वस्तुओं को विभिन्न वर्गों में बाँट देती है। दया, करुणा और सहिष्णुता की इसीलिए महिमा है, क्योंकि ये गुण हमें एक-दूसरे को समानता और बराबरी के स्तर पर स्वीकार करने की तथा उनके साथ सहअस्तित्व बनाए रखने की दृष्टि देते हैं। सर्वभूतों के हित की बात जब हम कहते हैं तो उन सर्वभूतों में हम भी सम्मिलित होते हैं। अपने हित के साथ सभी का हित देखें, यही धर्म के आचरण का मार्ग है। धर्म के संबंध में भी कहा गया है-

**धम्मो ताणं, धम्मो सरणं, धम्मो गइप्पइद्वा या धम्मणेण सुवरिण्ण, य गम्मइ अजरामरं ठाणं।।**

ऐसे धर्म की आराधना करने से अजर-अमर पद की प्राप्ति होती है, इसीलिए धर्मश्रद्धा की महिमा है।

**साभार- श्री रामउवाच-7 (आत्मकल्याण का मार्ग)**

**युगनिर्माता, परमागम रहस्यज्ञाता,  
गुणशील सम्प्रेरक, परम पूज्य आचार्य  
प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. के  
संवत्सरी विषयक विचार**

संवत्सरी की एकता हेतु कुछ समय से काफी चर्चाएँ श्रुतिगोचर हो रही हैं। एकता हेतु हमारी पूरी तैयारी पहले भी थी एवं अभी भी है। स्वर्गीय परम श्रद्धेय समता दर्शन प्रणेता, धर्मपाल प्रतिबोधक आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा. ने सांवत्सरिक एकता के संदर्भ में इस आशय का अपना वक्तव्य दिया था कि “सम्पूर्ण जैन समाज की संवत्सरी विषयक एकता हो अथवा सम्पूर्ण श्वेताम्बर समाज की संवत्सरी विषयक एकता हो अथवा सम्पूर्ण स्थानकवासी समाज की संवत्सरी विषयक एकता हो तो उसमें मेरी सहमति है।” आराध्य आचार्यदेव के उस वक्तव्य के प्रति हम आज भी पूर्णतः तत्पर हैं।

वर्तमान में सांवत्सरिक एकता के अनेक प्रयत्नों के बावजूद श्वेताम्बर समाज तो क्या, स्थानकवासी समाज भी पूर्णतः सहमत नहीं हो पाया है। वैसी स्थिति में साधुमार्गी संघ द्वारा संवत्सरी महापर्व की आराधना पूर्व सूचनानुसार द्वितीय श्रावण सुदी पंचमी तदनुसार दिनांक 21 अगस्त 2023 को ही किए जाने का लक्ष्य है।

**- गौतम रांका, राष्ट्रीय अध्यक्ष**

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ



# ऐसी वाणी बोलिए

15-16 मई 2023 अंक से आगे...

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. द्वारा लिखित 'ऐसी वाणी बोलिए' धारावाहिक वाणी पर संयम, नियंत्रण एवं संतुलन का संदेश देता है। इस धारावाहिक के कई शीर्षक भाषा सुधार हेतु प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 'मित वचन' पूर्ण होने के पश्चात् 'मधुर वचन' प्रस्तुत किए जा रहे हैं। आप सभी इन वचनों को जीवन में उतारेंगे तो निश्चय की व्यवहार संतुलन की नई दिशा प्राप्त करेंगे। आगे प्रस्तुत है.....

(iii) कई लोग दूसरों से तुलना कर-करके शिकायत करते हैं और व्यक्ति को हतोत्साहित कर देते हैं।

- (A) वो तो कितना समझदार है, हर काम में एक्सपर्ट है। तुम तो एक काम ढंग से नहीं करते।
- (B) आपस में भाई-भाई अथवा भाई-बहन की तुलना करना - 'तुम्हारा भाई मेरी हर बात मानता है, तुम तो एक बात नहीं मानते।'
- (C) दूसरे घर के बच्चों से तुलना करना - 'अमुक के बेटे इतने विनयवान हैं, बहुएँ इतनी विनम्र हैं। घर का भी कर लेती हैं, बाहर का भी कर लेती हैं। बहू-बेटे कब समझेंगे। ऐसे बोलना और साँसें भरना।'

**Note-** ये तरीका बहुत Irritating (परेशान करने वाला) होता है, एक तो व्यक्ति की शिकायत करना, ऊपर से दूसरों की तारीफ करना। यह तरीका अक्सर खतरनाक साबित होता है, इससे -

- ६० या तो व्यक्ति तुलना करने वाले से नफरत करने लगता है।
- ६० या जिससे तुलना की जा रही है, उससे नफरत करने लगता है।
- ६० या खुद से नफरत करने लगता है। (हीन भावना से ग्रसित हो जाता है)।

★ एक परिवार में माता-पिता लगभग 10 साल के बेटे को उसकी बहनों से बहुत कम्पेयर करते थे - 'देख तेरी पाँचों बहनें कितनी होशियार हैं। तू भी उनके जैसा बन। पढ़ेगा नहीं, तो बड़ा आदमी कैसे बनेगा?' बहनें भी उसे बात-बात में समझाती, संतों के पास भी उसकी शिकायत ही करती- 'इसे समझाओ, ये बहुत बदमाश है।' सुन-सुनकर वह डिप्रेशन का शिकार हो गया। पागलों की तरह इधर-उधर घूमता, घंटों सोया रहता, घर वालों से बात नहीं करता। उसे कई जगह दिखाया, पर वह ठीक नहीं हुआ। एक दिन मौका देखकर उसने एक साध्वी जी महाराज को अपने मन का हाल सुनाया- 'मुझे कोई बीमारी नहीं है, पर मेरे परिवार वाले मुझ पर विश्वास ही नहीं करते। मैं पढ़ता हूँ, तो भी कहते हैं कि नहीं पढ़ता। वे मुझे बात-बात में समझाते हैं, डाँटते हैं, इसलिए मैं बीमार हो गया हूँ। फिर भी घर पर किसी को ये बात समझ में ही नहीं आती।'

**Note-** किसी को बड़ा आदमी बनाने के लिए इतना भी नहीं बोलना चाहिए कि वह छोटा आदमी बनने के लायक भी न बचे।

- ★ सब एक जैसे नहीं हो सकते, क्योंकि सभी के पुण्य, पाप, संस्कार, सोच, रुचि और क्षमता अलग होती है।
- ★ किसान खेत में टमाटर का पौधा लगाता है और बैंगन का पौधा भी लगाता है। दोनों का स्वभाव अलग-अलग है। अतः उन दोनों पौधों की सार-संभाल भी अलग-अलग तरीके से होती है। टमाटर का पौधा कमजोर होता है, अतः किसान उसकी सुरक्षा के लिए चारों तरफ लकड़ी और रस्सी से एक बाउंड्री बनाता है, ताकि उस पौधे को सपोर्ट मिलता रहे और वो टमाटर के वजन से अथवा हवा के झोंके से टूटे नहीं। जबकि बैंगन का पौधा मजबूत होता है, उसे सपोर्ट की जरूरत नहीं होती। अब यदि किसान सोचे कि टमाटर के पौधे को भी बैंगन की तरह स्ट्रॉंग होना चाहिए, तो यह कैसे संभव है? वो टमाटर के पौधे को सपोर्ट नहीं देगा, तो वह टूट ही जाएगा। जब वो उसे थोड़ा सपोर्ट देता है, तो उस कमजोर पौधे पर भी बहुत सारे फल लग जाते हैं।
- ★ अतः हमें किसी कमजोर व्यक्ति को किसी दूसरे से कम्पेयर ना करके उसे उसी रूप में स्वीकार कर लेना चाहिए और उसका सम्मान करना चाहिए। हर व्यक्ति की अपनी सेल्फ रेस्पेक्ट होती है।
- ★ यदि हम किसी कमजोर को विकसित करना चाहते हैं, तो हमें उसका सहयोग करना चाहिए। उसे प्रेरित और प्रोत्साहित करना चाहिए। मनोविज्ञान में ऐसा कहा जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को किसी अच्छाई के लिए प्रोत्साहित किया जाए, तो वो उस अच्छाई को बार-बार रिपीट करता है। यानी अपने बारे में अच्छा सुनकर व्यक्ति और अच्छा बनने का प्रयास करता है।
- ★ किसी व्यक्ति पर किसी भी प्रकार का टैग नहीं लगाया जाना चाहिए अर्थात् किसी का हमेशा के लिए ऐसा नाम नहीं रखना चाहिए कि 'यह जिद्दी है', 'यह आलसी है', 'यह डरपोक है' अथवा 'यह गुरसैल है।' Don't label, labels stick.
- ★ मनोविज्ञान के अनुसार जिस व्यक्ति को जिस चीज के लिए बार-बार टोका जाता है, वह चीज उसमें टिक जाती है, फिर उसमें सुधार होना मुश्किल हो जाता है।
- ★ बार-बार अपनी आलोचना सुनकर व्यक्ति का आत्मविश्वास भी टूट जाता है और वह खुद को कमजोर और हीन समझने लगता है।
- ★ हमें 'हमेशा' और 'कभी नहीं' जैसे शब्दों के नकारात्मक प्रयोग से भी बचना चाहिए। जैसे - 'तुम हमेशा गड़बड़ करते हो', 'तुम हमेशा दुःखी करते हो', 'तुम हमेशा बुद्ध ही रहोगे', 'तुम कभी नहीं सुनते', 'तुम कभी नहीं सुधार सकते...' आदि।
- ★ शोधकर्ताओं का कहना है कि सदियाँ बीत जाती है, फिर भी एक पौधे का स्वरूप नहीं बदलता। जैसे- गुलाब का पौधा काँटों वाला होता है, तो वह काँटों सहित ही बाहर आता है।

लूथर बरबैंक नामक एक वैज्ञानिक ने इस पर एक नया प्रयोग किया। उसने बीज बोया और रोज उस बीज के पास जमीन पर हाथ रखकर 'गुलाब तुम बहुत सुन्दर हो, पर इस बार बिना काँटों के बाहर आना।' जब वह गुलाब बाहर आया, तब वह सच में बिना काँटों के बाहर आया। इससे स्पष्ट होता है कि जब पौधा बदल सकता है, तो इंसान भी बदल सकता है।



## आगमिक दृष्टांत

भगवान महावीर ने मनोवैज्ञानिक तरीके से मेघ मुनि का जीवन बदला :-

मेघ मुनि को संयम लेने के पहले ही रात्रि में असंयम (घर जाने के) भाव आ गए। अगले दिन वे भगवान से घर जाने की आज्ञा लेने आ गए। भगवान केवलज्ञानी थे, सब जान रहे थे कि उसके मन में क्या-क्या विचार आए, परन्तु भगवान ने उनकी आलोचना या शिकायत नहीं कि बल्कि उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए उनकी अच्छाई को याद दिलाया। हे मेघ! जब तुम तिर्यंच योनि में थे और जब तुम्हें सम्यक्त्व भी प्राप्त नहीं हुआ था, उस समय भी तुमने एक छोटे जीव की रक्षा के लिए अपने पैरों को दो दिनों से भी अधिक समय तक ऊपर ही रखा। नीचे नहीं टिकाया।

हे मेघ! इस भव में तो तुम विशाल कुल में जन्मे हो। तुम्हें उपघात से रहित शरीर प्राप्त हुआ है। इन्द्रियों का तुमने दमन किया है, उत्थान, बल, वीर्य, पुरुषाकार, पराक्रम से युक्त हो, मुनि बने हो, फिर भी पहली रात को आते-जाते हुए श्रमणों के स्पर्श को तुम सहन न कर सके? इस प्रकार अपने पूर्व भव के वृत्तांत को सुनकर मेघ मुनि के परिणाम शुभ हो गए। उन्हें जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया और उनका संवेग (वैराग्य) पहले से भी दुगुना हो गया।

इस उदाहरण से हम समझ सकते हैं कि किसी भी व्यक्ति को सुधारने के लिए, गुणवान बनाने के लिए उसकी आलोचना करने के बजाय, उसके विद्यमान गुणों का प्रोत्साहन और अनुमोदन करना चाहिए।

**Note-** प्रोत्साहित करने के कुछ अन्य उदाहरण :

## प्रोत्साहित करते हुए गलती बताने का Positive तरीका तथा श्रावक की गंभीरता

बीकानेर के एक श्रावक शास्त्रों के बहुत जानकार थे। छोटे-छोटे संत-सती व्याख्यान वांचते, तब वे पहले जाकर बैठते, ध्यान से सुनते। सुनने के पश्चात् एकांत में कहते - 'आपने व्याख्यान अच्छा वांचा। आपका उच्चारण भी अच्छा है। भाषा में माधुर्य है। वचन में ओज है। आप इसी तरह वांचते रहो, आगे तरक्की करोगे। लोगों के कुछ कहने से अपने मन में अभिमान मत आने दो और सदा प्रमाद छोड़कर सत्पुरुषार्थ में लगे रहो।'

जिनका प्रवचन ठीक नहीं होता - उन्हें सभा के बीच में नहीं कहते, एकांत में नम्रतापूर्वक निवेदन करते कि 'आपने बाकी तो सब अच्छा बोला, किंतु अमुक-अमुक विषय में मैंने पहले महापुरुषों से कुछ अलग सुना है। अतः आप बड़े म.सा. से पूछकर जो यथार्थ है, उससे मुझे अवगत कराएँ।' इस प्रकार कहते हुए वे उनके गुणों का ही मुख्यतया प्रतिपादन करते और उनके विनय व उत्साह को बढ़ाते थे।

## पूर्व में माताएँ गुणों का प्रोत्साहन व अनुमोदन कैसे करती थीं?

एवंता कुमार, गजसुकुमाल कुमार, मेघकुमार आदि जब तीर्थंकर भगवान की वाणी सुनकर आये, तब माता-पिता से यूँ बोले - 'हे माता-पिता! मैंने भगवान के समीप धर्म श्रवण किया है और मैंने उसकी प्राप्ति की इच्छा की है। बार-बार इच्छा की है और वह मुझे रुचा है।'

माता-पिता ने यूँ सुनकर कहा - 'तुम धन्य हो पुत्र! तुम पुण्यवान हो। हे पुत्र! तुम कृतार्थ हो कि तुमने... भगवान के निकट धर्म श्रवण किया है और वह धर्म तुम्हें इष्ट पुनः-पुनः इष्ट और रुचिकर हुआ है।'

★ उक्त सभी बिन्दुओं को समझकर समझदार श्रावक किसी को हतोत्साहित करने वाले वचन न कहें। जो कि दूसरों के लिए तो अहितकर है ही, साथ ही अपनी आत्मा में भी तीव्र असातावेदनीय आदि अशुभ कर्मों का बंध कराने वाली है। (प्राण भूत जीव सत्त्व को शारीरिक और मानसिक दुःख देने से असाता वेदनीय कर्म का बंध, इससे विपरीत में साता का बंध होता है)

-क्रमशः



# श्रीमद् भगवतीसूत्र

15-16 मार्च 2023 अंक से आगे...

संकलनकर्ता- कंचन काँकरिया, कोलकाता

## ज्ञान का वर्णन शतक 8 उद्देशक 2

**पूर्वापर संबंध -** ज्ञान के ही भेदों का वर्णन किया जा रहा है। इस उद्देशक के मूल पाठ में श्रीमद् नंदीसूत्र का अतिदेश (भोलावण) किया गया है, तदनुसार प्रस्तुत वर्णन है।

### अवधिज्ञान

**प्र. 2357 प्रथम पृथ्वी में लोलुयच्चुय नरकावास कहाँ है?**

**उत्तर** प्रथम पृथ्वी में 13 पाथड़े हैं। यह नरकावास प्रथम पाथड़े में है।

### मनःपर्ययज्ञान

**प्र. 2358 मनःपर्ययज्ञान किसे कहते हैं?**

**उत्तर** जिस ज्ञान के द्वारा द्वीप में रहे हुए संज्ञी पंचेंद्रिय (देव, मनुष्य और तिर्यच) के मन की पर्यायें जानी जाए, उसे 'मनःपर्ययज्ञान' कहते हैं।

**प्र. 2359 मनःपर्ययदर्शन क्यों नहीं होता है?**

**उत्तर** मनःपर्ययज्ञानियों का उपयोग मन के अस्तित्व मात्र को यानी सामान्य जानने की ओर नहीं रहता है। किन्तु विशेषताओं को जानने की ओर ही रहता है, इसलिए मनःपर्ययदर्शन नहीं होता है।

**प्र. 2360 मनःपर्ययदर्शन नहीं होता है तो श्रीमद् नंदीसूत्र में मनःपर्ययज्ञानी जानता-देखता है, ऐसा क्यों कहा गया है?**

**उत्तर** मन की कम पर्यायों को जानने की अपेक्षा देखना और अधिक पर्यायों को जानने की अपेक्षा जानना कहने की संभावना है।

**प्र. 2361 मनःपर्ययज्ञान किसे उत्पन्न होता है?**

**उत्तर** मनुष्य, गर्भज, कर्मभूमिज, संख्यात् वर्ष की आयु वाला, पर्याप्त, सम्यक्दृष्टि, संयत, अप्रमत्त (7-12 गुणस्थान वालों को) और लब्धिवंत, इन नौ बोलों वाले जीवों को तथा प्रकार की विशुद्धि से मनःपर्ययज्ञान उत्पन्न होता है।

**प्र. 2362 लब्धि यानी ऋद्धि की प्राप्ति कैसे होती है?**

**उत्तर** तीव्र शुभ भावनाओं से किए गए धर्माचरण के कारण लब्धि (विशिष्ट आत्मशक्ति) की प्राप्ति होती है। जैसे- अवधिज्ञान लब्धि, गणधर लब्धि, पूर्वधर लब्धि, तेजोलेश्या लब्धि, आशीविष लब्धि आदि।

**प्र. 2363 मन कितने प्रकार का है?**

**उत्तर** मन दो प्रकार का है- द्रव्य मन और भाव मन।

**प्र. 2364 द्रव्य मन किसे कहते हैं? यह रूपी है या अरूपी?**

**उत्तर** काययोग से मनोवर्गणा के पुद्गलों को ग्रहण करके मन रूप परिणमन की शक्ति (मनःपर्याप्ति) के द्वारा ये पुद्गल मन रूप परिणत हो जाते हैं, उसे 'द्रव्य मन' कहते हैं। यह पुद्गलमय होने के कारण रूपी है।

**प्र. 2365 'भाव मन' किसे कहते हैं?**

**उत्तर**

1. मतिज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से उत्पन्न मनन परिणाम को 'भाव मन' कहते हैं।
2. केवलियों के मतिज्ञानावरणीय कर्म न होने (क्षय हो जाने) के कारण भाव मन नहीं होता है।

साधार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

- क्रमशः



## श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र

15-16 अप्रैल 2023 अंक से आगे...

संकलनकर्ता- सरिता बेंगानी, कोलकाता

**पूर्व चित्रण -** प्रभु द्वारा गौतम स्वामी को लक्ष्य करके दिया गया उद्बोधन प्रस्तुत अध्ययन में संकलित है। भगवान महावीर स्वामी ने वृक्ष के पत्ते, ओस की बूंदों के दृष्टांत से जीवन की नश्वरता एवं अस्थिरता को बताया है। मनुष्य जीवन की दुर्लभता के 12 कारण, मनुष्य जीवन में धर्म आराधना करने की दुर्लभता एवं इन्द्रिय तथा शरीर की क्षीणता को बताया है।

एक बार गौतम स्वामी अष्टापद पर गए थे। वहाँ कौडिन्य, दत्त और शैवाल नाम तीन तापस अपने पाँच-पाँच सौ शिष्यों के साथ क्लिष्ट तप कर रहे थे। इनमें से कौडिन्य उपवास के अन्तर में पारणा करके फिर उपवास करते थे और पारणे में मूल, कन्द आदि का आहार करते थे, वे अष्टापद पर्वत पर चढ़े, किन्तु एक मेखला से आगे न जा सके। दत्त बेले-बेले का तप करते थे और पारणे में नीचे पड़े हुए पीले पत्तों का आहार करते थे, वे अष्टापद की दूसरी मेखला तक ही चढ़ पाये थे। शैवाल तेले-तेले का तप करते थे और पारणे में सूखी शैवाल (सेवार) खाते थे, वे अष्टापद की तीसरी मेखला तक ही चढ़ पाये थे।

गौतम स्वामी वहाँ आए तो उन्हें देख तापस परस्पर कहने लगे कि “हम महातपस्वी भी ऊपर नहीं जा सके तो यह स्थूल शरीर वाला साधु कैसे जाएगा?” परन्तु उनके देखते ही देखते गौतम स्वामी जंघाचारणलब्धि से सूर्य की किरणों का अवलम्बन लेकर शीघ्र ही चढ़ गये और क्षणभर में अन्तिम मेखला तक पहुँच गये। आश्चर्यचकित तापसों ने निश्चय कर लिया था कि ज्योंही ये मुनि नीचे उतरेंगे, हम उनके शिष्य बन जाएँगे। प्रातःकाल जब गौतम स्वामी पर्वत से नीचे उतरे तो तापसों ने उनका रास्ता रोककर कहा- “पूज्यवर! आप हमारे गुरु हैं, हम सब आपके शिष्य हैं।” तब गौतम स्वामी बोले- “तुम्हारे और हमारे सबके गुरु प्रभु महावीर स्वामी हैं।” यह सुनकर वे आश्चर्य से बोले- “क्या आपके भी गुरु हैं?” गौतमस्वामी ने कहा- “हाँ, इन्द्रों एवं मानवों के पूज्य, राग-द्वेष रहित सर्वज्ञ प्रभु महावीर स्वामी जगद्गुरु हैं, वे मेरे भी गुरु हैं।” सभी तापस यह सुनकर हर्षित हुए। सभी तापसों को प्रब्रजित कर गौतम स्वामी एवं सभी तापस भगवान की ओर चल पड़े।

मार्ग में गौतम स्वामी ने अक्षीणमहानसलब्धि के प्रभावों से सभी साधकों को ‘खीर’ का भोजन कराया। शैवाल आदि साधुओं ने सोचा- “हमें महाभाग्य सर्वलब्धिनिधान महागुरु मिले हैं।” यों शुभ अध्यवसायपूर्वक शुक्लध्यान के निमित्त से तेले-तेले का तप करने वाले शैवाल आदि 501 साधुओं को केवलज्ञान प्राप्त हो गया। जब सभी साधु समवसरण के निकट पहुँचे तो बेले-बेले तप करने वाले दत्त आदि 501 साधुओं को केवलज्ञान प्राप्त हो गया। तीर्थकर महावीर के दर्शन होते ही फिर उपवास करने वाले कौडिन्य आदि 501 साधुओं को शुक्लध्यान के निमित्त से केवलज्ञान प्राप्त हो गया। तीर्थकर भगवान की प्रदक्षिणा करके ज्योंही वे सभी केवलियों की परिषद् की ओर जाने लगे

तो गौतम स्वामी ने उन्हें रोकते हुए भगवान महावीर स्वामी को वन्दना करने का कहा, तब भगवान ने कहा- “गौतम! केवलियों की आशातना मत करो। ये केवली हो चुके हैं।” यह सुनकर गौतम स्वामी ने उन सबसे क्षमायाचना करके विचार किया- “मैं इस भव में मोक्ष प्राप्त करूँगा या नहीं?” भगवान ने गौतम स्वामी के अधैर्य मन को जानकर कहा- “मेरे प्रति तुम्हारा प्रशस्त मोह है, इससे तुम जिन नहीं हो सके किन्तु मोह को त्यागने के पश्चात् जिन हो जाओगे इसलिए समय मात्र अपना जीवन प्रमाद में व्यतीत मत करो।” इसके संबंध में इस प्रकार फरमाया-

**वुच्छिंदं शिणेह-मय्यणो, कुमुयं सारइयं व पाणियं।  
से सव्व-शिणेह-वज्जिए, समयं गोयम ! मा पमायए॥28॥**

**भावार्थ -** शरद ऋतु में होने वाले चन्द्र, कमल जल में उत्पन्न होकर आगे बढ़कर भी जैसे जल से पृथक् रहता है। उसी प्रकार तू भी अपने स्नेह को विच्छिन्न (दूर) कर। तू सभी प्रकार से स्नेह का त्याग कर।

**इसका तात्पर्य यह है-** गौतम स्वामी पदार्थों में मूच्छिंत नहीं थे, न विषय भोग में उनकी आसक्ति थी, उन्हें सिर्फ भगवान के प्रति स्नेह, अनुराग था। भगवान महावीर स्वामी द्वारा भगवती सूत्र के शतक-14, उद्देशक-7 में इसका उल्लेख किया गया है। वीतराग भगवान नहीं चाहते थे कि कोई उनके प्रति स्नेह बंध से बंधा रहे।

**कुमुयं सारइयं व पाणियं -** शरद काल में उत्पन्न कमल- यहाँ शरद ऋतु के जल में बढ़ते हुए कमलों की उपमा दी गई है। इस पद से ये दृष्टांत बन जाता है- पहले कुमुद जल में मग्न रहता है, फिर खिलता एवं निखरता है, वह उस जल का परित्याग करके उससे ऊँचा उठ जाता है और पुनः उस जल में लिप्त नहीं होता है। भगवान फरमाते हैं उसी तरह मोक्ष प्राप्ति के लिए स्वजन आदि तथा मेरे प्रति स्नेह को भी त्यागना होगा। जिस प्रकार शरद काल का जल अति निर्मल होते हुए भी कमल द्वारा त्याज्य है, उसी प्रकार गौतम! तुम्हारा मेरे प्रति स्नेह भी त्याज्य है।

**न हु जिणे अज्ज दीसई, बहुमए दीसइ मग्गदंसिए।  
संपइ नेयाउए पहे, समयं गोयम ! मा पमायए॥31॥**

**भावार्थ -** पंचमकाल में जिन भगवान दिखाई नहीं देंगे, परन्तु उनके द्वारा बताया गया सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूप मुक्ति मार्ग अनेक मत के शिष्टजनों द्वारा सम्मत होगा। किन्तु गौतम! इस समय तुम्हें तो साक्षात् भगवान महावीर स्वामी का यह न्यायपूर्ण पार ले जाने वाला मार्ग उपलब्ध है अतः मुक्ति मार्ग में समय मात्र भी प्रमाद मत करना।

**बुद्धे परि-निव्वुडे चरे, गाम गए नगरं व संजए।  
संति-मग्गं व वूहए, समयं गोयम! मा पमायए॥36॥**

**भावार्थ -** गौतम स्वामी ने ग्राम, नगर एवं वन में रहते हुए, तत्त्वों को जानकर चारित्र मोहनीय रूपी अग्नि को उपशम करते हुए बहुत शांत भाव से मुनिधर्म का पालन किया तथा मुक्ति के मार्ग का भव्यजनों को उपदेश देते हुए प्रमादरहित होकर विचरण करते रहे।

**बुद्धस्स निसम्म भासियं, सुकहिय-मइपओव-सोहियं।  
रागं दोसं व छिंदिया, सिद्धिगइं गए गोयमे॥37॥ ति बेमि॥**

**भावार्थ -** सर्वज्ञ देव श्री भगवान महावीर स्वामी का विस्तारपूर्वक कहा हुआ दृष्टांत एवं अर्थ प्रधान पदों से उपशोभित वचनों को सुनकर राग एवं द्वेष को नष्ट करके प्रथम गणधर गौतम स्वामी सिद्धिगति को प्राप्त हुए।

-क्रमशः



# मनुष्य के भेद

15-16 अप्रैल 2023 से आगे.....

टिप्पणी : सागर से भी गहरा जैन धर्म का तत्त्व ज्ञान है, इसमें जितना उतरते जाएंगे उतनी ही तिरने की संभावना बढ़ती जाती है। जैन धर्म, तत्त्व ज्ञान, जैनधर्म का मौलिक इतिहास तथा लोकालोक आदि के बारे में सूक्ष्म से सूक्ष्म जानकारी जन-जन के आत्मकल्याण हेतु देने का प्रयास किया जा रहा है। इसे अवश्य पढ़ें और श्रमणोपासक से जुड़े रहें।

**प्रश्न 1. मनुष्य के मुख्य भेद कितने और कौन-कौन से हैं?**

**उत्तर** चार : कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज, अन्तर्द्वीपज और सम्मूर्च्छिम मनुष्य।

**प्रश्न 2. कर्मभूमिज किसे कहते हैं?**

**उत्तर** जिस क्षेत्र में कृषि आदि कर्म संभव है, उसे कर्मभूमि कहते हैं। भरत क्षेत्र, ऐरवत क्षेत्र और महाविदेह क्षेत्र कर्मभूमियाँ हैं। इनमें उत्पन्न मनुष्य कर्मभूमिज कहलाते हैं। ध्यातव्य है कि महाविदेह क्षेत्र के अन्तर्गत रहे देवकुरु व उत्तरकुरु क्षेत्र कर्मभूमि नहीं हैं।

**प्रश्न 3. कर्मभूमि के कितने क्षेत्र हैं?**

**उत्तर** पन्द्रह : पाँच भरत, पाँच ऐरवत, पाँच महाविदेह।

**प्रश्न 4. इन पन्द्रह में से हम किस क्षेत्र में रहते हैं?**

**उत्तर** भरत क्षेत्र में।

**प्रश्न 5. पाँच भरत कहाँ पर हैं?**

**उत्तर** एक जम्बूद्वीप में, दो धातकी खण्ड में और दो अर्द्धपुष्कर द्वीप में।

**प्रश्न 6. क्या धातकी खण्ड व अर्द्धपुष्कर द्वीप में हम जा सकते हैं?**

**उत्तर** देवता की सहायता बिना हम वहाँ नहीं जा सकते।

**प्रश्न 7. देवता की सहायता बिना भी कोई वहाँ जा सकते हैं?**

**उत्तर** हाँ, लब्धिधारी मुनिराज वहाँ जा सकते हैं।

**प्रश्न 8. ऐसे मुनिराज अभी कहाँ हैं?**

**उत्तर** पाँच महाविदेह क्षेत्र में विराजमान हैं।

**प्रश्न 9. पाँच महाविदेह में से जम्बूद्वीप में कितने महाविदेह हैं?**

**उत्तर** एक।

**प्रश्न 10. बाकी के चार कहाँ हैं?**

**उत्तर** दो धातकी खण्ड में, दो अर्द्धपुष्कर द्वीप में।

**प्रश्न 11. पाँच भरत और पाँच महाविदेह के सिवाय और पाँच क्षेत्रों के क्या नाम हैं?**

**उत्तर** पाँच ऐरवत : एक जम्बूद्वीप में, दो धातकी खण्ड में और दो अर्द्धपुष्कर द्वीप में।

**प्रश्न 12. कर्मभूमिज के पन्द्रह क्षेत्र छोटे-बड़े हैं या एक सरीखे?**

**उत्तर** एक ही द्वीप में भरत, ऐरवत क्षेत्र विस्तार और आकार में एक सरीखे हैं तथा उसी द्वीप में महाविदेह क्षेत्र बड़ा है। जम्बूद्वीप से धातकी खण्ड के क्षेत्र बड़े हैं और धातकी खण्ड से अर्द्धपुष्कर द्वीप के क्षेत्र बड़े हैं।

**प्रश्न 13. जम्बूद्वीप में भरत, ऐरवत और महाविदेह क्षेत्र कहाँ-कहाँ हैं?**

**उत्तर** दक्षिण में भरत, उत्तर में ऐरवत और बीच में महाविदेह।

**प्रश्न 14. अकर्मभूमिज किसको कहते हैं?**

**उत्तर** जिस क्षेत्र में कृषि आदि कर्म कभी नहीं होते तथा जहाँ युगलिक मनुष्य निरन्तर निवास करते हैं, ऐसे क्षेत्र को अकर्मभूमि कहते हैं। हेमवत्, हैरण्यवत्, हरिवर्ष, रम्यक्वर्ष, देवकुरु और उत्तरकुरु अकर्मभूमियाँ हैं।

**प्रश्न 15. अकर्मभूमिज के कितने क्षेत्र हैं ?**

**उत्तर** तीस : पाँच हेमवत्, पाँच हैरण्यवत्, पाँच हरिवर्ष, पाँच रम्यक्वर्ष, पाँच देवकुरु, पाँच उत्तरकुरु।

**प्रश्न 16. जम्बूद्वीप में अकर्मभूमि के कितने क्षेत्र हैं ?**

**उत्तर** छह : 1 हेमवत्, 1 हैरण्यवत्, 1 हरिवर्ष, 1 रम्यक्वर्ष, 1 देवकुरु, 1 उत्तरकुरु।

**प्रश्न 17. अर्द्धपुष्कर द्वीप में और धातकी खण्ड में अकर्मभूमिज के कितने-कितने क्षेत्र हैं ?**

**उत्तर** बारह-बारह (2 हेमवत्, 2 हैरण्यवत्, 2 हरिवर्ष, 2 रम्यक्वर्ष, 2 देवकुरु, 2 उत्तरकुरु)।

**प्रश्न 18. अकर्मभूमिज के मनुष्य क्या कहलाते हैं ?**

**उत्तर** युगलिक।

**प्रश्न 19. युगलिक किसे कहते हैं ?**

**उत्तर** जिनकी आयुष्य एक करोड़ पूर्व से ज्यादा हो तथा अवगाहना 500 धनुष से ज्यादा हो उन्हें युगलिक कहते हैं।

**प्रश्न 20. प्रत्येक युगलिक स्त्री कितने पुत्र-पुत्री को जन्म देती है ?**

**उत्तर** एक जोड़ा (एक लड़का और एक लड़की)।

**प्रश्न 21. हेमवत्-हैरण्यवत् में युगलिक स्त्री अपने पुत्र-पुत्री का कितने दिन पालन-पोषण करती है ?**

**उत्तर** 79 दिन पालन करती है।

**प्रश्न 22. हरिवर्ष-रम्यक्वर्ष में युगलिक स्त्री अपने पुत्र-पुत्री का कितने दिन पालन करती है ?**

**उत्तर** 64 दिन।

**प्रश्न 23. देवकुरु-उत्तरकुरु में युगलिक स्त्री कितने दिन पुत्र-पुत्री का पालन करती है ?**

**उत्तर** 49 दिन।

**प्रश्न 24. इतने छोटे बच्चों के माँ-बाप मर जाते हैं तो उन बेचारों का क्या हाल होता होगा ?**

**उत्तर** वे उस समय माँ-बाप जितने बड़े हो जाते हैं और वो भाई-बहिन, स्त्री-पुरुष होकर रहते हैं। उन्हें दस प्रकार के वृक्षों से जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक वस्तुओं की प्राप्ति होती है।

**प्रश्न 25. भाई-बहिन, स्त्री-पुरुष हो जाते हैं, यह अयोग्य रिवाज कैसे है ?**

**उत्तर** वह रिवाज युगलिकों में अनादिकाल से चला आ रहा है। इनमें व्यभिचार, चोरी, झूठ, झगड़ा, वैर-विरोध कुछ नहीं होता है।

**प्रश्न 26. युगलिकों में स्त्री का आयुष्य ज्यादा या पुरुष का ?**

**उत्तर** दोनों का समान आयुष्य है। दोनों साथ ही जन्म लेते हैं और साथ ही मरते हैं।

**प्रश्न 27. युगलिक का आयुष्य कितना होता है ?**

**उत्तर** हेमवत्-हैरण्यवत् में एक पल्योपम, हरिवर्ष-रम्यक्वर्ष में दो पल्योपम, देवकुरु-उत्तरकुरु में तीन पल्योपम।

**प्रश्न 28. युगलिक की उत्कृष्ट अवगाहना (ऊँचापन) कितनी होती है ?**

**उत्तर** हेमवत्-हैरण्यवत् में एक कोस (गाउ), हरिवर्ष-रम्यक्वर्ष में दो कोस (गाउ), देवकुरु-उत्तरकुरु में तीन कोस (गाउ)।

**प्रश्न 29. अकर्मभूमिज के युगलिक मरकर किस गति में जाते हैं ?**

**उत्तर** जघन्य भवनपति, उत्कृष्ट दूसरे देवलोक तक।

**प्रश्न 30. युगलिक कौनसा धर्म पालते हैं ?**

**उत्तर** वे कोई धर्म नहीं पालते। वे भद्रिक होते हैं।

साभार- जैन तत्त्व निर्णय

-क्रमशः

राजगृह में नाग नाम का एक सदगृहस्थ रहता था। वह राजा श्रेणिक की रथ सेना का प्रमुख था। अतः लोग उसे 'नागरथिक' नाम से ही अधिक पहचानते थे। नाग की धर्मपत्नी सुलसा नारी जाति का गौरव थी। सुन्दरता, सुशीलता और चातुर्य में ही नहीं, अपितु विद्या, विवेक, धर्मनिष्ठा एवं शील सम्पन्नता में भी उसकी दूर-दूर तक कीर्ति फैली हुई थी। पति-पत्नी भगवान महावीर के व्रतधारी श्रावक थे। दोनों का ही जीवन धर्मपरायण आदर्श गृहस्थ का जीवन था। भाग्य से सुलसा के घर में सब सुख प्राप्त थे, किन्तु कोई सन्तान नहीं थी। इस कारण नाग बहुत अधिक चिन्तित रहता।

एक बार नाग ने किसी पड़ोसी के आँगन में बालकों को खेलते हुए देखा। बालक बड़े ही सुकुमार, चंचल और मनोहारी लगते थे। उनकी मीठी किलकारियों से आस-पास का वातावरण आनन्दमय हो जाता। बच्चों की यह मधुर-क्रीड़ा देखकर नाग का हृदय भर आया। उसे बार-बार लगने लगा कि 'मेरा घर सूना है।' पुत्र की इच्छा से उसने अनेक देवी-देवताओं की मनौतियाँ की, ज्योतिषियों और पंडे-पुजारियों के चक्कर में घूमता रहा। सुलसा ने पति की यह मनोदशा देखकर मीठे शब्दों में समझाया- "पतिदेव! आप तो स्वयं विज्ञ हैं। आप जानते हैं कि पुत्र, यश, धन आदि किसी से मांगने पर नहीं मिलते, अपने कर्मों के अनुसार ही मिलते हैं। किसी वस्तु की प्राप्ति तभी होती है जब हमारा अंतराय कर्म हट जाता है, वरना लाख चाहने पर भी वह वस्तु हमारे हाथ में नहीं आती। हमें अधिक से अधिक दान, शील, तप आदि धर्मों का आचरण करना चाहिए,

जिससे हमारे अशुभ कर्म शिथिल होंगे और अभिलाषित वस्तु की प्राप्ति हो सकेगी।"

नाग ने कहा- "सुमुखी! तुम्हारा कथन सत्य है। मैं भी इस तत्त्व को जानता हूँ, किन्तु यह मन इतना कमजोर है कि समझाने पर भी बार-बार भटक जाता है। जब दूसरों के आँगन में बच्चों को खेलते-मचलते देखता हूँ तो मुझे अपना घर सूना-सूना लगने लगता है।" ऐसा कहते-कहते नाग का हृदय भर आया।

सुलसा ने कहा- "पतिदेव! मुझे लगता है आपको मुझसे पुत्र की प्राप्ति न होगी, अतः अच्छा हो कि आप दूसरा विवाह कर लें! हो सकता है कि आपकी आशा फल जाए। इसमें मुझे खुशी ही होगी।"

नाग श्रावक ने हँसकर कहा- "यह कैसे संभव है? मैं भी श्रावक हूँ। मैंने दूसरे विवाह का नियम कर रखा है और नीति की दृष्टि से भी मैं इसे उचित नहीं मानता कि जब स्त्री के लिए दूसरा विवाह वर्ज्य है, तो पुरुष को वह उचित कैसे होगा? प्रिये! मुझे तो तुम्हारे ही पुत्र की आकांक्षा है। दूसरा विवाह मैं कभी नहीं करूँगा।"

सुलसा ने कहा- "यह तो संयोग की बात है। हमें फल-फूल को नहीं, मूल को सींचना चाहिए। सब सुखों का मूल है- धर्म। अतः हमें अपना जीवन अधिक से अधिक धर्ममय बनाना चाहिए। धर्म से दोनों लोकों का कल्याण होता है।"

सुलसा की हितभरी बातें नाग को बहुत अच्छी लगीं। दोनों ही पूरी दृढ़ता के साथ धर्म-ध्यान करने लगे।

एक दिन सुलसा के घर में एक मुनि भिक्षा के



लिए आए। मुनि को देखकर सुलसा बहुत प्रसन्न हुई। मुनि ने कहा- “बहन! एक साधु बीमार है, उनके लिए लक्षपाक तेल की जरूरत है।”

सुलसा ने प्रसन्न होकर कहा- “मुनिवर! मेरा अहोभाग्य है कि मेरे घर की वस्तु आप संतों के काम आए। कृपा कर ठहरिए! मैं अभी तेल की शीशी लाती हूँ।” कमरे में जाकर सुलसा ने जैसे ही शीशी उठायी कि वह हाथ से छूट गयी। बहुमूल्य तेल चारों ओर बिखर गया किन्तु सुलसा ने तुरन्त उस फूटी शीशी को एक ओर छोड़कर दूसरी शीशी उठायी। दूसरी शीशी भी उसके हाथ से छूट गयी। उसने तीसरी शीशी उठाकर बड़ी सावधानी से बाहर निकाली, पर बाहर लाते ही वह भी फूट गयी। मुनि के मन पर उदासी छा गयी, किन्तु सुलसा का धैर्य नहीं डिगा, वह न चंचल बनी, न घबराई। क्रोध का तो काम ही क्या! पहले की तरह ही शांति और प्रसन्नता उसके मुख पर दमक रही थी। मुनि से विनयपूर्वक प्रार्थना की- “मुनिवर! आज मेरे भाग्य में सुपात्रदान नहीं लिखा है। तीन शीशी लक्षपाक तेल की थी, किन्तु न जाने कैसे छूमंतर की तरह तीनों ही हाथ से गिर-गिरकर छूट गयी और तेल बिखर गया। मेरे घर में शुद्ध औषधि होते हुए भी रुग्ण मुनि के उपयोग में नहीं आ सकी, इसमें मेरा अंतराय कर्म ही बाधक है। आपको व्यर्थ में ही इतना कष्ट हुआ।”

इतना नुकसान होने पर भी सुलसा के मन में वही धैर्य एवं शांति थी। मुनि के प्रति वही अडिग भक्ति थी। मुनि ने सहसा अपना रूप बदला और अपने देवस्वरूप में प्रकट होकर सुलसा को पुकारा। सुलसा पहले तो आश्चर्यपूर्वक यह दृश्य देखती रही, पर दूसरे ही क्षण उसने देवता स्वरूप को पहचान लिया। देवता ने कहा- “देवानुप्रिये! मैं मुनि नहीं, देवता हूँ। देवराज इन्द्र ने देवसभा में तुम्हारी क्षमाशीलता, तितिक्षा और सम्यक्त्व-दृढ़ता की प्रशंसा की है। शक्रेन्द्र के द्वारा प्रशंसा सुनकर हमें ईर्ष्या और आश्चर्य हुआ कि एक स्त्री इतनी क्षमाशील और धर्मनिष्ठा कैसे हो सकती है, जो देव दानव से भी

न डिगे? मैं तुम्हारी परीक्षा लेने आया और यह सब मेरी ही माया थी कि शीशियाँ तुम्हारे हाथ से गिरा दीं। मैं तुम्हारी क्षमाशीलता, सुख-दुःख में, लाभ-अलाभ में समभाव और साधुओं के प्रति पवित्र भक्ति देखकर बहुत ही प्रभावित हुआ हूँ। तुम धन्य हो सुलसा! तुम्हारी धर्मनिष्ठा सचमुच ही प्रशंसनीय है, अद्वितीय है।”

देवता के मुख से अपनी प्रशंसा सुनकर भी सुलसा उसी प्रकार शांत और स्थिर रही। देवता ने कहा- “मैं यह सब देखकर बहुत प्रसन्न हुआ हूँ। तुम कुछ वर मांग कर मुझे अनुगृहीत करो।”

सुलसा ने कहा- “देवानुप्रिय! सुख-दुःख, लाभ-अलाभ सब मनुष्य के कर्माधीन हैं और कर्म पुरुषार्थ के अधीन है, फिर किसी से क्या मांगना? कुछ समझ में नहीं आता। फिर भी मेरे जीवन में एक अभाव है, जो मुझसे भी अधिक मेरे पति को खटकता है। मेरे उस अपूर्ण मनोरथ को पूरा करने में आप निमित्त बन सकते हैं तो मुझे प्रसन्नता ही होगी।”

देव सुलसा के मनोरथ को समझ रहा था। उसने प्रसन्न होकर कहा- “बहिन! मैं तुम्हारे इस कार्य में अवश्य ही हाथ बटाऊंगा। लो ये बत्तीस दिव्य गोलियाँ तुम्हें देता हूँ। प्रतिदिन एक-एक गोली खाती जाना। समय पर तुम्हें बत्तीस पुत्र होंगे, तुम्हारी कामना सफल होगी।”

देव द्वारा गोलियाँ पाकर सुलसा प्रसन्न हो उठी। उसने सोचा- “मैं बत्तीस पुत्रों का क्या करूंगी? **एकेनापि सुपुत्रेण** - सुपुत्र तो एक ही अच्छा। एक ही सुपुत्र सूने घर में चहल-पहल कर देगा, कुल में उजियारा कर देगा। अतः यदि इन बत्तीस गोलियों को एक साथ खा लूँ तो एक ही बत्तीस शुभ लक्षणों वाला पुत्र हो जाएगा।” इस प्रकार विचार कर सुलसा ने बत्तीसों गोलियाँ एक साथ खा ली। कुछ दिनों बाद सुलसा के पेट में भयंकर दर्द होने लगा। उस असह्य दर्द से वह तड़फ उठी। कई तरह के उपचार करने पर भी जब दर्द दूर नहीं हुआ तो उसने पुनः उसी देव का स्मरण किया। देव उपस्थित हुआ। सुलसा ने अपनी पीड़ा सुनाई तो



देव ने कहा- “बहिन! तुमने बहुत बड़ी भूल कर दी! तुम्हारा सोचा हुआ उल्टा हो गया। अब तुम बत्तीस पुत्रों को एक साथ जन्म दोगी। यदि उनमें से एक की मृत्यु हो गई तो बाकी के भी फिर जीवित नहीं रह सकेंगे।”

सुलसा को अपनी भूल पर बड़ा पश्चात्ताप हुआ। उसने कहा- “देव! सच है, जब भी मनुष्य अधिक लालच करता है तो वह अधिक कष्ट पाता है। अब तो जो होना होगा सो होगा ही, किन्तु यदि आप मुझे इस पीड़ा से मुक्त कर सकें तो मैं बहुत ही उपकार मानूँगी।” देव ने सुलसा की प्रार्थना पर ऐसी दवा दी जिससे उसका दर्द शांत हो गया।

सुलसा के बत्तीसों पुत्रों की एक जैसी आकृति, एक जैसा व्यवहार, एक जैसी बोली-चाली देखकर लोगों को अत्यन्त आश्चर्य होता। नागरथिक का सूना घर खिल उठा। जब भी वह अपने नन्हें-मुन्नों को किलकारियाँ मारकर हँसते-खेलते देखता तो उसका हृदय हिलोरें लेने लगता। उसे लगा- “सचमुच जैसे आकाश का दीपक सूर्य है, वैसे ही कुल का दीपक पुत्र है। सूरज के बिना आकाश सूना, पुत्र के बिना घर सूना। फल-फूलों से लदा वृक्ष जितना मनोहारी लगता है, उससे भी अधिक मनोहारी लगता है नन्हें-नन्हें नटखट बालकों से किलकता घर!”

पुत्र बड़े हुए उनकी उचित शिक्षा-दीक्षा हुई। सुलसा ने उनमें सुन्दर धार्मिक संस्कार भी डाले। युवा होने पर बत्तीस कुलीन कन्याओं के साथ उनका विवाह कर दिया गया। राजा श्रेणिक के अंगरक्षक के रूप में बत्तीसों की नियुक्ति हो गई।

एक बार राजा श्रेणिक ने महाराज चेटक की पुत्री चलना का अपहरण करने की योजना बनाई। वैशाली से राजगृह तक की सुरंग बनाई गई। श्रेणिक उसी सुरंग

(भूमि मार्ग) से चलना का अपहरण कर राजगृह की ओर दौड़े। चेटक ने श्रेणिक का पीछा किया। बत्तीस ही अंगरक्षक चेटक को रोकने के लिए डट गये। वहाँ संघर्ष में एक की मृत्यु हो गयी। बस, एक की मृत्यु होते ही बाकी इकतीस योद्धा भी धड़ाम से भूमि पर गिर पड़े। श्रेणिक तब तक राजगृह पहुँच चुके थे। अंगरक्षकों की मृत्यु का समाचार सुनकर श्रेणिक को बहुत दुःख हुआ।

बत्तीस पुत्रों की एक साथ मृत्यु से सुलसा के दिल पर असह्य चोट लगी। कितनी मनौतियों के बाद और कितने कष्ट सहकर तो पुत्र हुए और आज अचानक एक साथ उनकी मृत्यु से सुलसा पर जैसे विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा, किन्तु इस भयानक शोक में भी वह अपने आपको संभाले रही। “जातस्य हि ध्रुवं मृत्युः” - जन्म लेने वाले की मृत्यु भी निश्चित है। यह दिन सबको

आता है। कोई भी महाशक्ति उसे टाल नहीं सकती। यह सोचकर सुलसा ने धैर्यपूर्वक इस विपत्ति को सहा।

सुलसा एक स्त्री थी, किन्तु उसका हृदय किसी लोहपुरुष से कम नहीं था। उसके जीवन में बार-बार संकट के बादल घिरे, पर वह उन सब संकटों में अपनी धीरता, गम्भीरता, स्थितप्रज्ञता से प्रकाश-किरण बनकर चमकती रही। जितना अडिग उसका मनोबल था, उतनी ही अडिग उसकी धर्मनिष्ठा भी थी। उसके रग-रग में भगवान महावीर की श्रद्धा रमी हुई थी।

एक बार भगवान महावीर चम्पानगरी में धर्मोपदेश कर रहे थे। उनकी देशना सुनने के लिए हजारों नर-नारी आए। उनमें राजगृह का अम्बड़ श्रावक भी था। जो संन्यासी के वेष में रहता था, किन्तु श्रावक के व्रतों का पालन करता था। वह अनेक विद्याओं का भी जानकार था। धर्मदेशना सुनने के बाद अम्बड़ ने भगवान से निवेदन किया- “भंते! आपका उपदेश सुनने से मेरा



जन्म सफल हो गया है। मैं आज राजगृह जा रहा हूँ। वहाँ के लिए प्रभु का कोई संदेश हो तो...।”

भगवान ने कहा- “राजगृह में सुलसा नाम की एक श्राविका रहती है। वह अपने व्रत-नियमों में बहुत ही दृढ़ है। ऐसे श्रावक भी बिरले ही होते हैं। उसे धर्म संदेश कहना।” अम्बड़ ने एवं सभा में उपस्थित लोगों ने सोचा- “सुलसा, सचमुच ही बहुत पुण्यशालिनी है। जिसकी भगवान स्वयं प्रशंसा करते हैं, वह श्राविका कितनी महान होगी?”

अम्बड़ राजगृह आया। उसने सोचा- “सुलसा में कौनसी विशेषता है इसकी परीक्षा तो करके देखूँ।” उसने परिव्राजक का रूप बनाया और सुलसा के घर पर आकर पुकारा- “आयुष्मति! मुझे भिक्षा दो। तुम्हें धर्म होगा।”

सुलसा ने कहा- “घर आए अतिथि को भोजन देना कर्तव्य है, यह बात दूसरी है, किन्तु किसे देने से धर्म होता है और किसे देने से नहीं, यह तत्त्व मैं अच्छी तरह जानती हूँ।”

सुलसा का यह उत्तर सुनकर अम्बड़ लौट आया। उसने नगर के बाहर आकर तपस्या प्रारम्भ कर दी। पद्मासन लगाकर वह आकाश में अंधर टिका रहा। यह अद्भुत चमत्कार देखकर भीड़ उमड़ पड़ी। हजारों लोग आकर मुक्तकंठ से अम्बड़ की प्रशंसा, स्तुति करने लगे। लोगों ने सुलसा से भी चलने का कहा, किन्तु उसने उपेक्षा दिखाई। लोग अम्बड़ से अपने-अपने घर भोजन के लिए प्रार्थना करते। किन्तु अम्बड़ ने किसी का भी निमंत्रण स्वीकार नहीं किया। लोगों ने पूछा- “तपस्वीजी! आखिर आपके भोजन का लाभ किस भाग्यशाली को मिलेगा?”

अम्बड़ ने उत्तर दिया- “नागरथिक की पत्नी सुलसा को।” लोग दौड़े-दौड़े आए सुलसा को बधाइयाँ देने- “सुलसा! तुम धन्य हो! तुम्हारा जीवन सफल हो गया। अम्बड़ जैसे महान तपस्वी तुम्हारे घर बिना प्रार्थना किए ही भोजन को आएँगे। तुम तो निहाल हो गई!”

सुलसा ने सबको दो टूक जबाब दे दिया- “आप लोग क्या इसे तपस्या समझते हैं? तपस्वी कभी अपनी तपस्या का प्रदर्शन नहीं करते। जो प्रदर्शन करते हैं, वे तपस्वी नहीं, ढोंगी होते हैं।”

सुलसा का स्पष्ट उत्तर लोगों के मुँह से जब अम्बड़ ने सुना तो उसने मन में अच्छी प्रकार से जान लिया कि “सुलसा परम सम्यक्दृष्टि, अरिहंत उपासिका है। वह अरिहंत व निर्ग्रंथों के सिवाय किसी को भी देव व गुरु नहीं मानती। उसे कोई भी शक्ति श्रद्धा से विचलित नहीं कर सकती।” आखिर अम्बड़ ने निर्ग्रंथ मुनि का वेष बनाया और वैसी ही शुद्धचर्या करता हुआ सुलसा के घर आया। सुलसा ने मुनि को देखकर नमस्कार किया और भक्तिपूर्वक अन्नदान ग्रहण करने का आग्रह किया। अम्बड़ ने अपना असली रूप



प्रकट कर भगवान महावीर द्वारा की गई प्रशंसा की घटना और अपनी परीक्षा की कथा सुनाई। अम्बड़ ने मुक्तकंठ से सुलसा की स्तवना की। दृढ़सम्यक्त्वधारिणी सुलसा ने अपने धैर्य-स्थैर्य आदि गुणों की उत्कृष्टता के कारण तीर्थकर नाम गौत्रकर्म उपार्जन किया। वह आगामी चौबीसी में निर्मम नामक पन्द्रहवाँ तीर्थकर बनेगी।

आधार ग्रंथ : आवश्यकनिर्युक्ति गाथा, 1284;

आवश्यकचूर्णि उत्तरार्ध पत्र सं. 164;

ठाणांग सूत्र, ठाणा 9 उ. 3

-क्रमशः



# धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

15-16 अप्रैल 2023 अंक से आगे...

(आप सभी के समक्ष एक धारावाहिक 'धर्ममूर्ति आनंदकुमारी' के नाम से चल रहा है। आचार्य श्री हुक्मीचंदजी म.सा. की प्रथम शिष्या महासती श्री रंगूजी म.सा. की पट्टधर महासती आनंदकँवरजी का जीवन चरित्र प्रतिमाह आप लोगों के समक्ष प्रस्तुत हो रहा है। इन महासतीजी के जीवन को पढ़कर आप जानेंगे कि कैसे उन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी समभाव को ज्वलंत रखा और चारित्र को डिगने नहीं दिया। निश्चय ही धर्ममूर्ति आनंदकुमारीजी का चरित्र पढ़कर आपके जीवन में संयम और चारित्र का विकास होगा।)

## विधवा-जीवन

मनुष्य हमेशा सुख की खोज में भटकता रहता है। इसके लिये कई लोग तीर्थों, मन्दिरों, पण्डे, पुजारियों और फकीरों के द्वार खटखटाते हैं। पर वहाँ भी उनके मनोरथ पूरे नहीं होते। कई लोग दुःख के नाम से बचने के लिए गृहस्थाश्रम की शरण लेते हैं और समझते हैं, विवाह हो जाने पर सुख की धारा बहने लगेगी, पर वहाँ भी वे मृगतृष्णा जैसे उन वैषयिक सुखों में ऐसे फँस जाते हैं कि उनके लिए वास्तविक सुख की राह मिलनी बड़ी कठिन हो जाती है। उन वैषयिक सुखों को भोगते समय तो क्षणिक सुख का आभास होता है, पर जब वे छूट जाते हैं तो मनुष्य उनके लिए शोक करता है, आँसू बहाता है। ऐसे समय में वह किसी न किसी शान्तिदायक वस्तु का आश्रय लेकर ही अपने जीवन में सुख की प्यास बुझा सकता है। वियोग के ताप से तप्त मनुष्य के लिए धर्म ही एक मात्र दवा है जो शांति दे सकती है। प्रसिद्ध नीतिज्ञ आचार्य चाणक्य ने कहा है-

**“सुखस्य मूलं धर्मः”**

-चाणक्य सूत्र

विधवा बहिनें जो अपने पति के वियोग में व्याकुल हो रही हों, उनके लिए भी धर्म का आश्रय श्रेयस्कर है। धर्म का सहारा लेकर वे अपने जीवन में सुख और शान्ति प्राप्त कर सकती हैं। शिक्षा (स्वाध्याय), भगवद् भजन आदि धर्म के अंग हैं।

आनन्दकुमारीजी के पतिदेव का अचानक वियोग हो जाने पर वे कुछ दिन तो अस्थिर चित्त रहीं, पर बाद में आपने देखा कि इस तरह तो सारी उम्र बिताना मुश्किल ही हो जाएगा। मुझे कोई न कोई ऐसा अवलम्बन

दूँढना चाहिए जिसके जरिये मेरे दिन शान्ति से बीतें। आपके जेठ फतहचन्दजी बड़े ही समझदार थे। वे ही आपके पतिदेव की मृत्यु के समय उनके पास थे, इसलिए आपको देखकर उनका मन दयार्द्र हो गया। वे आपकी इस अवस्था को देख न सके। उन्होंने आपके जीवन को सुखपूर्वक बिताने के लिए शिक्षा का सहारा हितकर समझा।

शिक्षा से शारीरिक और मानसिक दोनों तरह का विकास होता है। शिक्षा के बिना कोई भी मानव अपने कर्तव्य को भली-भाँति नहीं समझ सकता। शिक्षा के अभाव में अपने हिताहित का ज्ञान नहीं हो सकता। धार्मिक और आध्यात्मिक बातों को समझने के लिए भी शिक्षा की जरूरत है। शिक्षा-हीन कोरे मस्तिष्क क्या आध्यात्मिक उड़ान भरेंगे ?

पुरुषों की तरह स्त्रियों के लिए भी शिक्षा आवश्यक है। जो लोग कहते हैं कि स्त्री शिक्षा से बिगड़ जाती है, उन्हें समझना चाहिए कि क्या वह शिक्षा, जो पुरुषों का जीवन ऊँचा बनाती है, स्त्रियों को बिगाड़ सकती है? क्या माता भी वन्ध्या हो सकती है? आज पुरुष समाज स्त्रियों के सुधार की आवश्यकता महसूस कर रहा है, पर सुधार की जड़ क्या है? स्त्री-शिक्षा के बिना स्त्रियों का सुधार लंगड़ा है, अधूरा है, वह स्थायी नहीं। कई पुराणपंथी लोग स्त्रियों की शिक्षा के लिए काफी विरोध करते हैं। वे एक घर में दो कलम चलाना अनिष्टकारक समझते हैं। उन्हें यह सोचना चाहिए कि क्या भगवान ऋषभदेव यह नहीं समझते थे, जो अपनी पुत्री ब्राह्मी और सुन्दरी को उन्होंने शिक्षा दी? आज पुरुष भले ही स्त्री-शिक्षा का निषेध करें, पर उन्हें यह न भूलना चाहिए कि रमणीरत्न ब्राह्मी ने ही पुरुषों को साक्षर बनाया है। उसी की यादगार में लिपि का नाम भी 'ब्राह्मी' प्रचलित है। विद्यालय के लिए स्त्री-शिरोमणि सरस्वती की पूजा करके, उसी नारी-समाज को निरक्षर बनाए रखना, अन्याय नहीं तो और क्या है? समाज और राष्ट्र को गाँधी और जवाहरलाल जैसे योग्य नागरिक देने के कार्य में शिक्षित स्त्रियाँ ही पूर्ण सफल हो सकती हैं। एक शिक्षित स्त्री घर को सुख और शान्ति का केन्द्र बना सकती है। नारी पुरुष की अर्धांगिनी मानी जाती है। क्या यह कभी संभव है कि किसी का आधा अंग बलिष्ठ हो और आधा अंग दुर्बल हो? जो स्त्री शिक्षित न हो वह पुरुष का आधा अंग कैसे बन सकती है? वह पुरुषों के कार्यों में क्या हाथ बँटाएगी, जो खुद ही अशिक्षित हो? अशिक्षित बहिनें अपने ऊपर गृहस्थ का भार आ पड़ने पर अत्यन्त घबरा जाती हैं, पर शिक्षित महिलाएँ घर के प्रत्येक कार्य को धैर्य और उत्साह के साथ करती हैं। वे गृहस्थी के बोझ से कभी घबराती नहीं। शिक्षित महिलाएँ अपने वैधव्य काल को बड़ी सुगमता से काट लेती हैं और अपने आश्रितों की यथायोग्य सहायता करने हेतु भी पर्याप्त क्षमता पा लेती हैं। शिक्षित महिला अपना जीवन स्वावलम्बी बना सकती है। उसे छोटे-मोटे कामों के लिए दूसरों का मुँह नहीं ताकना पड़ता। संक्षेप में यों कहना चाहिए कि शिक्षा प्रकाश तो अशिक्षा अन्धकार है। बहिनों में यदि शिक्षा का संचार होता तो वे परमात्मा को छोड़कर किसी देवी-देवताओं के दरवाजे नहीं भटकती फिरती।

आज स्त्री समाज में अन्धविश्वास और कुरूपियों का राज्य रहा है। वह उस अशिक्षा का ही प्रताप है। बहिनों में गहनों और कपड़ों के लिए हठ और मोह इस अशिक्षा-पिशाचिनी ने ही पैदा किये हैं। रोने-पीटने और पुराने रीति-रिवाजों में धर्म समझने के खयालात अशिक्षा के ही प्रभाव से होते हैं। अतः समाज को शीघ्र ही महिला समाज की शिक्षा के लिए प्रयत्न करना चाहिए। शिक्षा से ही उनमें नम्रता, शिष्टता, मधुरभाषिता, शील और सदाचार तथा ऊँचे विचारों का प्रवेश हो सकता है।

हाँ, तो मुझे कहना चाहिए कि उस शिक्षा के प्रभाव से ही आनन्दकुमारीजी धार्मिकता और सत्यता के मार्ग पर आरूढ़ हो सकी थी और प्रवर्तिनी-पद दिलाने में भी शिक्षा का मुख्य हाथ रहा है। आनन्दकुमारीजी के जेठ फतहचन्दजी ने शिक्षा प्राप्त कराने के लिए अपने छोटे भाई कुशलरामजी को कहा। कुशलरामजी आनन्दकुमारीजी के देवर थे, अतः उनसे शिक्षा लेने में आपको कोई संकोच न था। उन्होंने अपनी विधवा बहिन गुलाबबाई और आप दोनों को पढ़ाना शुरू किया। आपको ककहरा और 'सिद्धो-वर्णसमाम्नाय' आदि पहले पहल सिखलाया गया। आपकी बुद्धि बड़ी पैनी थी। आपको जल्दी ही पुस्तकें पढ़ना आ गया। यद्यपि आपकी शिक्षा सुन्दर ढंग से नहीं हुई थी तो भी यह कहना पड़ेगा कि आप जिन पुस्तकों को पढ़ती उनका सारांश समझ जाती थी।

महान आत्माओं को पढ़ने के लिए किसी पाठशाला में प्रविष्ट नहीं होना पड़ता। प्रत्येक क्षण उनका अध्ययन काल है और प्रत्येक स्थान उनकी पाठशाला है। जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त वे अपनी विशिष्ट प्रतिभा से नवीन-नवीन ज्ञानोपार्जन करने में लगे रहते हैं। वे उसका उचित उपयोग करते हैं। सामान्य व्यक्ति पुस्तकों में लिखी बातों को अपने मस्तिष्क में ठूस लेता है और समय पर उन्हें उगल देता है, परन्तु जीवन में नहीं उतारता। ऐसे व्यक्तियों के लिए ज्ञान भारभूत होता है। महान आत्माएँ ऐसा नहीं करतीं। वे तो जो कुछ सीखती हैं उसको जीवन में अमलीरूप दे देती हैं।

साधारण व्यक्ति अधिकतर पुस्तकों पर निर्भर रहते हैं। किसी से सुने या पढ़े बिना उन्हें ज्ञान नहीं होता, पर विशिष्ट आत्माओं के लिए सारा संसार ही एक खुली हुई पुस्तक है। प्रत्येक घटना, प्रत्येक परिवर्तन, प्रत्येक हलचल उनके सामने नया पाठ लेकर आते हैं और उन्हें नया बोध दे जाते हैं।

आनन्दकुमारीजी भी अधिकतर प्रकृति के विद्यालय में ही पढ़ी। उन्हें अपने पतिदेव की मृत्यु की घटना वया ही बोध दे रही थी। वह तो उन्हें अपना जीवन पहले से भी सादा और स्वतंत्र बिताने की शिक्षा दे रही थी। प्रकृति की यह शिक्षा आपको धार्मिक नारी बनने के लिए संकेत कर रही थी।

आपके मन में भी धर्म की बातें जानने और तदनुसार आचरण करने की उत्कण्ठा जागी। यह पहले कहा जा चुका है कि आपके ससुराल वाले रामभक्त थे। आपको भी राम-भक्ति सिखाने वाली एक

धर्मज्ञा बुढ़िया मिल गई। वह बुढ़िया एक रामस्नेही संन्यासी की माता थी।

उसने आपको कई धर्म की बातें बतलाई और भजन भी सिखाए। वह

बुढ़िया आपके नम्र स्वभाव और धार्मिक ज्ञान की पिपासा

देखकर आपसे बड़ा ही स्नेह रखती थी। आपको उसने रामलीला व कई प्रकार के हरजस (हरिकीर्तन) भी बतलाए। वह आपको रामस्नेही संन्यासियों के दर्शन कराने के लिए रात्रि के समय रामद्वारे में भी अपने साथ ले जाती। उनके विधि-विधान भी वह समय-समय पर आपको बताती। आप प्रकृतिभद्र थीं ही, आपने प्रतिदिन वह करने का अपना एक कार्यक्रम बना लिया और हमेशा रामभजन और कीर्तन करने लगी। आप रामद्वारे में जाते ही दण्डवत् करके बैठ जाती और अपना भजनादि कार्य करती रहती। आपके धार्मिक कृत्यों को देखकर घर वाले बड़े ही प्रसन्न रहते थे। वे आपकी भद्र और विनीत प्रकृति की बार-बार सराहना किया करते थे और आपके जेठ तो आपको 'बेटी' कहकर पुकारते और बड़े मीठे शब्दों से आपको किसी काम के लिए कहते। आपके किसी धार्मिक कार्य में वे विघ्न नहीं डालते थे। उन्हें आपका जीवन पवित्र और सादगी से परिपूर्ण नजर आ रहा था। आपके विधवा होने पर कभी भी आपके घरवालों ने आपका मन कुपित या व्यग्र करने की चेष्टा नहीं की। वे आपको शील की देवी समझते थे। वे जीवन को घृणित और दुःखमय नहीं बल्कि पवित्र देवी जीवन समझते थे, जिसमें भोग-जीवन की समाप्ति के साथ ही अत्यन्त सुख और परमानन्द की प्राप्ति कराने वाले आध्यात्मिक जीवन का आरम्भ होता है। इससे आज के समाज को शिक्षा लेनी चाहिए।

वास्तव में विधवा बहिनें पुण्यशालिनी और भाग्यवती हैं। परन्तु आज समाज में विधवा को अपमानित और घृणित दृष्टि से देखा जाता है। प्रातःकाल विधवा का मुख दिख जाना अमंगल माना जाता है। उससे दास-दासियों से भी बढ़कर घर का काम लिया जाता है। कई जगह तो उन्हें विषय के अग्निकुण्ड में कूदने को विवश किया जाता है और उन्हें नाना प्रकार के प्रलोभन देकर शीलधर्म से भ्रष्ट किया जाता है। यह समाज के लिए भयंकर अभिशाप है। आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा. के शब्दों में समाज को समझना चाहिए। उन्होंने कहा था- "आपके घर में विधवा बहिनें शील की देवियाँ हैं। उनका आदर करो, उन्हें पूज्य मानो, उन्हें दुःखदायी शब्द मत कहो। ये देवियाँ पवित्र हैं, पावन हैं, मंगलरूप हैं। उनके शगुन अच्छे हैं। शील की मूर्ति क्या कभी अमंगलमयी हो सकती है? समाज की मूर्खता ने कुशीलवती को मंगलमयी और शीलवती को अमंगला मान लिया है। यह कैसी भ्रष्टबुद्धि है?"

इस प्रकार आनन्दकुमारीजी का जीवन धर्मकार्य में ही व्यतीत हो रहा था। आपके वैधव्य धर्म के पालन के लिए आपके ससुराल वालों ने किसी प्रकार की आपत्ति नहीं उठाई। उन्होंने खुद अपना जीवन सादा और संयमी बना लिया था। आपके लिए यह महान गौरव की बात थी। आप भड़कीले या रंग-बिरंगे वस्त्र नहीं पहनती और बारीक वस्त्रों के उपयोग से आप दूर ही रहती। विकारोत्पादक चीजों का सेवन करना भी आपने बन्द कर दिया था। आप अब ब्रह्मचर्य के अनमोल रत्न को साथ लिए जीवन की पगडंडी तय कर रही थी।

साभार- धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

-क्रमशः

# बालमन में उपजे ज्ञान

- मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

जय जिनेन्द्र बच्चो! आप सभी के साथ कई महीनों का सफर तय करते-करते आज हमारी ज्ञान की गाड़ी एक ऐसे **Station** पर आ गई जो शायद हमारा **last stopage** हो। वह है धर्म का **Station**। जी हाँ, आज हम जानेंगे धर्म-विवेक के बारे में.....

आइए! आप, हम और हमारे चारों **Friends** चलते हैं धर्म **Station** पर।

जय जिनेन्द्र आंटी!

जय जिनेन्द्र बच्चो!

पंकज-

आज सौरभ दिखाई नहीं दे रहा है।

नीलिमा और नितिन एक स्वर में 'आज वो स्कूल भी नहीं आया'।

नीलिमा-

आंटी! सौरभ ठीक तो है ना?

सौरभ की माताजी-

हाँ बच्चो! सौरभ की थोड़ी तबियत खराब है। कल रात उसने जिद करके अपने पापा से पिज्जा, बर्गर और कोल्डड्रिंक मंगवाकर खा लिये और उसका पेट खराब हो गया।

नितिन-

कुछ दिनों पहले मैंने भी जंक फूड खाया तो मेरा भी पेट खराब हो गया था।

सौरभ की माताजी-

बेटा, जो खाना तामसिक होता है मतलब **Over processed and over cooked food that is no longer fresh** वह शरीर के लिए **harmful** होता है। वह खाना कब बना? कैसे बना? कहाँ बना? हमें कुछ नहीं पता होता। हम आँख बंद कर खा लेते हैं।

नीलिमा-

आंटी, पर आजकल तो **parties** में यही **food** होता है। हम क्या करें? खाना पड़ता है।

सौरभ की माताजी-

(थोड़ी तेज आवाज में) खाना पड़ता है मतलब? अगर तुम मना कर दो तो कोई जबरदस्ती करेगा क्या?

तुम्हें कोई कुछ भी खाने को कह दे तो तुम खा लोगे या अपना विवेक लगाओगे? (धीमे स्वर में)

नितिन-

मना कर दें तो सब मजाक बनाते हैं आंटी!

सौरभ की माताजी-

जब health खराब होती है तब हम खुद मजाक बन जाते हैं। (मुस्कराते हुए) देखो बच्चो! health तुम्हारी है तो समझ भी तुम्हारी होनी चाहिए कि हमें क्या खाना है और क्या नहीं। parties में तो यही होता है। ये हम सब ने ही तो decide किया है।

पंकज-

हाँ आंटी! आप सही कह रहे हो। सौरभ के एक दिन के खाने की वजह से आज वह स्कूल नहीं जा पाया। हमारे साथ पाठशाला भी नहीं आ पाया। एक दिन में अगर हमारा इतना नुकसान हो गया तो अगर हम रोज खाएँगे तो हमारा क्या होगा ?

सौरभ की माताजी-

बेटा! व्यक्ति जैसा अन्न खाता है वह वैसा ही बन जाता है। अगर हम रोज ताजा बना हुआ खाएँ तो हम तरोताजा रहेंगे और

बारी खाया तो हमारे शरीर पर आलस बना रहेगा। धर्माश्रयण में भी भोजन का महत्वपूर्ण स्थान है। तामसिक वृत्ति वाले मस्तिष्क में धर्म टिक ही नहीं सकता है। आप चाहें तो इतिहास उठाकर देख लें।

धर्म-विवेक में भोजन-विवेक का महत्वपूर्ण स्थान है। यदि भोजन करने का विवेक नहीं

रखा गया तो धर्माश्रयण करना असंभव जैसा है। आजकल तो ये जंक फूड के चक्कर में कुछ भी खाकर अपना धर्म भ्रष्ट करते हुए भी समय नहीं लगता है। अतः धर्म-विवेक की पूर्णता भोजन-विवेक से ही है।

(आज बच्चों को समझ आ गई कि यदि धर्म के station पर गाड़ी लानी है तो भोजन सम्बन्धी आदतों को सुधारना अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए नीचे उल्लेखित प्रतिज्ञाएँ अत्यन्त आवश्यक हैं।



### ::: प्रतिज्ञाएँ :::

1. कोई भी 5 जंक फूड का त्याग करें।
2. आजीवन जंक फूड त्याग करने वाले 15 वर्ष से कम आयु के बच्चों का नाम श्रमणोपासक में प्रकाशित किया जाएगा।
3. अगले एक माह तक जंक फूड का त्याग करें और अपने शारीरिक/मानसिक परिवर्तन के अनुभव हमारे साथ share करें।





# 'अन्न' का सम्मान एवं सदुपयोग ही भोजन-विवेक है

-पदमचन्द गाँधी, जयपुर

मानव शरीर, मन एवं जीवन पर आहार का बहुत व्यापक प्रभाव है। आहार के बिना मानव जीवन सम्भव नहीं है। मानव का अस्तित्व ही आहार पर निर्भर है। बिना आहार के मानव में न तो प्राणबल सम्भव है और न ही शरीर बल। जीवन जीने के लिए भोजन जरूरी है, लेकिन 'भोजन के लिए जीना' पशुता है। मानव बुद्धिशाली, विवेकवान व्यक्ति है। अतः 'भोजन-विवेक' का होना अति आवश्यक है।

भारत विभिन्न संस्कृतियों का देश है तथा 'आहार संस्कृति', आहार-विवेक का वर्णन शास्त्रों में स्पष्ट है कि अन्न के एक-एक दाने का सम्मान हो। लेकिन विविध समारोहों में, शादी-विवाहों में, धार्मिक कार्यक्रमों में यह भोजन-विवेक गौण हो जाता है। हम यह भूल गए हैं कि जिस अन्न को पैदा करने में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने 'कृषि' (खेती) का अनुसंधान कर सात्त्विक भोजन हेतु अन्न-उत्पादन की विधि सिखायी तथा उदरपूर्ति का सुगम साधन तैयार किया, आज उसी अन्न की बहुतायत नहीं होते हुए भी हम इसको कितना बर्बाद करते हैं। अनेक अवसरों पर समाजसेवियों ने भोजन की बर्बादी को रोकने की अपील की है। प्रवचनों के दौरान साधु-सन्त प्रत्याख्यानों के माध्यम से 'झूठा न छोड़ने' के नियम करवाते हैं, लेकिन हमारे विवेक की कमी से यह कारगर सिद्ध नहीं हो रहा है।

आज अन्न की बर्बादी का ग्राफ बढ़ता ही जा रहा है, जो देश की गरीब जनता के साथ अन्याय है।

इसकी अनदेखी 'समाजद्रोह' है।

अतः हे विवेकयुक्त भव्य पुरुष! जरा चिन्तन कर और सोच कि हमारे द्वारा व्यर्थ में छोड़ी जाने वाली झूठन कितने गरीबों का पेट भर सकती है। यह कोई समझाने का विषय नहीं, विवेक का विषय है।

इस विषय पर उदासीन रहना गरीबों की उदरपूर्ति के साथ कुठाराघात है, अन्याय है। इसके लिए 'स्व-विवेक' को जाग्रत करना जरूरी है, क्योंकि ऐसा कोई घर नहीं जहाँ पर ऐसे कार्यक्रम न होते हों। चाहेते सब हैं, लेकिन अपनाते बहुत कम हैं। बढ़ती हुई आधुनिकता के कारण हमने अपने पुराने संस्कारों, रीति-रिवाजों को छोड़ दिया। जहाँ पंगत में बैठकर भोजन करते थे, जितनी आवश्यकता होती सामग्री लेते थे, परोसगारी वाले तसल्ली व सम्मान से भोजन परोसते थे। पंचायत की सीमाबन्दी होती थी, उनके नियम-कायदे थे। सीमित मात्रा में भोजन के आइटम बनते थे। बचे हुए भोजन एवं झूठन का सदुपयोग भी होता था। बहुत ही अल्प मात्रा में भोजन बर्बाद होता था। आज हमने इतनी पुरानी सुन्दर व्यवस्थाओं एवं रीति-रिवाजों को भूलकर सामाजिक बन्धनों को तोड़ दिया। दिखावे, आधुनिकता एवं अपने धन-वैभव के प्रदर्शन के नाम पर तीन सौ आइटम तक भोजन में बनवा लेते हैं, विभिन्न स्टॉलें लगवा लेते हैं। आज शादी-समारोह में लाखों, सैकड़ों टन खाना बर्बाद हो रहा है, बोरे भर-भरकर फैंक दिए जाते हैं। हमारे देश

की यह विडम्बना है कि जहाँ एक तरफ लोग खाने के मोहताज हैं, तो दूसरी तरफ इन प्रयोजनों में लाखों टन खाना बर्बाद किया जा रहा है।

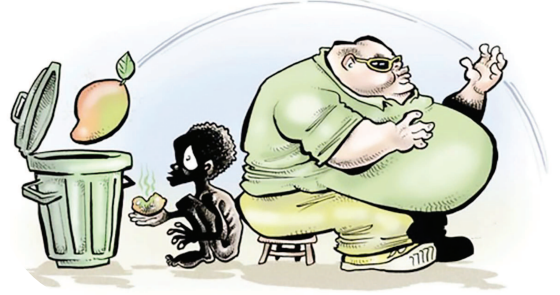
## तथ्यों के आधार पर भोजन बर्बादी के निम्नलिखित कारण हैं-

**(1) भोजन के प्रति असंवेदनशीलता एवं अविवेक :** विश्व खाद्य संगठन (WFO) की रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि देश में हर साल पचास हजार करोड़ रुपये का भोजन बेकार चला जाता है, जो देश के उत्पादन का 40 प्रतिशत हिस्सा है। एक आंकलन के अनुसार बर्बाद होने वाले भोजन की धनराशि से पाँच करोड़ बच्चों की जिन्दगी संवारी जा सकती है। रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि भारत में बढ़ती सम्पन्नता के साथ लोग खाने के साथ असंवेदनशील हो रहे हैं। खर्च करने की क्षमता के साथ ही खाना फैंकने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। बड़े-बड़े रिसोर्ट में 5-10 हजार तक व्यक्तियों का खाना बनाया जाता है, जिसमें 150-300 तक आइटम बनाए जाते हैं। खाने वाला व्यक्ति एक-एक आइटम टेस्ट करे तब भी पूरे आइटम को टेस्ट नहीं कर पाते। ऐसे में अन्दाज लगावें कितना खाना बेकार होता है। परिणाम यह होता है- देश में विवाह-स्थलों के पास रखे कूड़ाघरों में 40 प्रतिशत से अधिक खाना फैंका हुआ मिलता है। यदि हमारा विवेक जाग्रत होता है तो हम इस बर्बादी को रोक सकते हैं तथा बढ़ती खाद्यान्न की समस्या को हल कर सकते हैं। हमें भोजन-विवेक के प्रति संवेदनशील बनना होगा तभी इस बर्बादी को रोक पाएँगे।

**(2) भूख से मौतों को बचाया जाए :** जिस देश की संस्कृति के गुणगान पूरा विश्व करता हो, उस देश में यदि 'भूख से मौत' की खबर आए तो संस्कृति पर कलंक जैसा है। यह स्थिति तब हो रही है, जब अरबों रुपयों के सरकारी अनुदान पर खाद्य सुरक्षा की नई योजनाएँ चल रही हैं। 'मिड डे मील' कार्यक्रम के तहत हर दिन 12 करोड़ बच्चों को दिन में भरपेट भोजन का दावा किया

जाता है। जहाँ हर हाथ को काम पर हर पेट को भोजन के नाम पर हर दिन सरकारी कोष से करोड़ों रुपये खर्च होते हैं। इतना होने पर भी भारत में हर साल 5 वर्ष से कम उम्र के दस लाख बच्चों के भूख एवं कुपोषण से मरने के आँकड़े संयुक्त राष्ट्र ने जारी किए हैं। देश के 51 प्रतिशत परिवार की आय का जरिया महज अस्थायी मजदूरी है। चार लाख परिवार कूड़ा बीन कर तथा 6.68 प्रतिशत लाख परिवार भीख माँगकर अपना गुजारा करते हैं।

आँकड़े स्पष्ट करते हैं कि सरकारी योजनाओं से भी उदरपूर्ति नहीं होती। अतः इस स्थिति में प्रत्येक नागरिक का नैतिक दायित्व बन जाता है कि 'भोजन' को बर्बाद नहीं करें। उसे बचाकर 'भूखों का सहारा बनें' यही भोजन-विवेक कारगर होगा। गाँवों की स्थिति और अधिक खराब है। उनमें से 40 प्रतिशत परिवारों की औसत मासिक आय दस हजार रुपयों से भी कम है। हर दिन कई लाख लोग भूखे सोते हैं। विचारणीय बिन्दु यह है कि हमारे देश में हर साल



उतना अन्न बर्बाद कर देते हैं जितना अन्न ऑस्ट्रेलिया पैदा करता है। नष्ट हुए अन्न की कीमत 50 हजार करोड़ रुपये होती है और इससे 30 करोड़ लोगों को सालभर खाना दिया जा सकता है। यदि सरकारी एवं स्वयंसेवी संस्थाएँ पारदर्शिता से काम करें तो लागू की गई योजनाएँ भी अन्न की बचत कर सकती हैं।

**(3) अन्न के भंडार की पर्याप्त सुविधा का अभाव:** समारोह में बनाए जाने वाले व्यंजनों को सुरक्षित रखना कठिन हो जाता है। इसको रखने के सुरक्षात्मक उपायों

की व्यवस्था नहीं की जाती। क्योंकि आयोजनकर्ता बचे हुए भोजन को सुरक्षित रखने के पर्याप्त उपाय नहीं करते हैं। इसलिए वह भोजन खराब हो जाता है। अतः लोग फैंक देते हैं। कृषकों के द्वारा उत्पन्न किये गये अन्न को सुरक्षित रखने के लिए पर्याप्त मात्रा में भण्डारण व्यवस्था जैसे- भारतीय खाद्य निगम (FCI), राज्य भण्डारण व्यवस्था आदि के कारण 'अन्न' को सुरक्षित नहीं रखा जाता। वह अन्न खुले में पड़ा रहता है, जिससे औसतन हर भारतीय एक साल में 6 से 11 किलोग्राम अन्न बर्बाद करता है। साल में जितना सरकारी खरीद का धान व गेहूँ खुले में पड़े होने के कारण नष्ट हो जाता है, उससे ग्रामीण अंचल में 5000 माल भण्डारण बनाए जा सकते हैं। जरूरत है सशक्त प्रयासों की।

**(4) फैंक जाने वाले भोजन से प्रदूषण :** बचे हुए भोजन को फैंकना भले ही मामूली-सी बात हो या फिर किसी बड़े कार्यक्रम की अपरिहार्यता बताकर पल्ले झाड़ लिए जाएँ, लेकिन यह 'पर्यावरण' की एक गम्भीर समस्या उत्पन्न कर रही है। इस सन्दर्भ में 'विश्व खाद्य एवं कृषि संगठन' द्वारा जारी रिपोर्ट में खाद्यान्नों के अपव्यय से जुड़ी चुनौतियों का बारिकी से विश्लेषण किया गया। जिसकी रिपोर्ट में वैश्विक खाद्य अपव्यय का अध्ययन पर्यावरण की दृष्टिकोण से करते हुए बताया गया है कि भोजन के अपव्यय से जल, जमीन और जलवायु के साथ-साथ जैव विविधता पर भी बेहद नकारात्मक असर पड़ता है। रिपोर्ट के अनुसार अपव्यय होने वाले इस भोजन की वजह से तीन अरब टन से भी ज्यादा मात्रा में खतरनाक ग्रीन हाउस गैसों उत्सर्जित होती हैं। रिपोर्ट बताती है कि लापरवाही और अनुचित गतिविधियों के कारण पैदा किए जाने वाले अनाज का एक-तिहाई हिस्सा बर्बाद कर दिया जाता है। शादियों एवं बड़े-बड़े समारोह में ढेर सारा खाना, झूठन कचरे में चला जाता है। कई बार तो घरों के आसपास फैंके गये भोजन से उठने वाली दुर्गन्ध एवं सड़ांध वहाँ के लोगों के लिए परेशानी खड़ी कर देती है एवं बीमारियाँ

भी फैल जाती हैं। सड़े भोजन को जानवरों द्वारा खाने पर मौत के समाचार मिलते हैं तथा असंख्य जीवों की उत्पत्ति होने से हिंसा का पाप भी लगता है।

## भोजन बर्बादी रोकने के उपाय

### (1) सरकारी नियमों को सख्ती से लागू किया जाए:

खाने की बर्बादी को लेकर भारत सरकार चिन्तित है। खाद्य मंत्रालय ने कहा है कि वह शादियों में मेहमानों की संख्या के साथ परोसे जाने वाले आइटमों की संख्या सीमित करने पर विचार कर सुनिश्चित करें।

कोरोना काल में सख्त प्रतिबन्ध लागू होने, पेनल्टी प्रावधान, पुलिस का भय तथा कोरोना बीमारी के डर के कारण इन कार्यक्रमों पर अनेक प्रकार के प्रतिबन्ध लगा दिये गये थे। शादी में दोनों पक्षों के अधिकतम 50 व्यक्ति सम्मिलित होने की छूट सरकारी आज्ञापत्र द्वारा दी जा रही थी, जिससे बिना आडम्बर एवं दिखावे के साधारण रूप से विवाह सम्पन्न हुए। किसी तरह की बर्बादी एवं अपव्यय नहीं था। ऐसी व्यवस्था को पुनः लागू किया जाए, जिसमें व्यक्तियों की संख्या एवं आइटम तय हो।

अन्न की बर्बादी रोकने के लिए 'विवाह समारोह अधिनियम 2006' लागू किया गया, लेकिन इसका कड़ाई से पालन नहीं किया गया। इस अधिनियम को सख्ती से लागू किया जाए, तथा इसकी जानकारी लोगों तक पहुँचाई जाए। दिन में शादियों को महत्त्व दिया जाए, जिससे बचे हुए भोजन का उपयोग हो सके।

### (2) महिलाएं एवं महिला संगठन आगे आएँ :

नारी संस्कारदात्री, अतिसंवेदनशील तथा करुणा की देवी होती है। वह खाने की बर्बादी को रोकने के लिए बहुत कुछ कर सकती है। महिलाएं अपने बच्चों में बचपन से ऐसी आदत डाले कि झूठन नहीं डाले। उन्हें यह सीख दें 'उतना ही ले थाली में, व्यर्थ न जावे नाली में।' लेकिन आश्चर्य तब होता है जब जैन हॉस्टल, जैन भोजनशालाओं में पढ़ने वाले बच्चे झूठन छोड़ते हैं। सामाजिक कार्यक्रमों में 2-3 प्लेटों में

भोजन ले लेते हैं। अतः महिलाएँ इन पर जरूर ध्यान देकर बच्चों को समझावें तथा टेबल मैनेस सिखावें। महिलाएँ स्वयं भी इसका पालन करें। महिलाएँ किट्टी-पार्टियों में, महिला मण्डलों में भोजन बर्बादी रोकने की मुहिम छेड़ें, आत्मीयता से इसका प्रचार-प्रसार कर जन आन्दोलन बनावें, जिससे भोजन की बर्बादी रूक सके। कई महिलाएँ अपने एन.जी.ओ. एवं धार्मिक मण्डलों द्वारा आगे भी आयी हैं। उन्हें और अधिक प्रयास करके अन्य क्षेत्र की महिलाओं को भी जोड़ना चाहिए।

**(3) समाजसेवी संस्थाएँ, धार्मिक संगठन तथा स्वयंसेवी संस्थाएँ जनचेतना जगाएँ :** अन्न की बर्बादी को रोकने तथा बचाने के लिए इन संगठनों की अहम भूमिका रही है। पुराने समय में पंचायत इन पर निगरानी रखती थी। समाज के लोग आगे रहते थे। अधिक व्यंजनों पर प्रतिबन्ध रहता था। आज प्रतिस्पर्धा के समय में व्यंजनों की, इनकी वैरायटी की होड़ मची हुई है। अन्तरराष्ट्रीय स्तर के आइटम तैयार किए जाते हैं। ऐसे आइटमों की आवश्यकता नहीं है। समारोह को ऐतिहासिक नहीं, रुचिकर एवं सुपाच्य बनाया जावे। आजकल कई संस्थाएँ इनके लिए आगे आयी हैं तथा बहुत सराहनीय कार्य कर रही हैं। स्वयंसेवी संस्थाएँ भी पोस्टर, बैनर, व्यक्तिगत ध्यान एवं प्रेरणा द्वारा सक्रिय हो रही हैं। कुछ संस्थाएँ निम्न प्रकार कार्य कर रही हैं-

**(अ) रोटी बैंक बनाए जाएँ :** बड़े शहरों में 'रोटी बैंक' काम कर रहा है। इनसे जुड़े कार्यकर्ता समारोह स्थल तक पहुँच रहे हैं तथा बचे हुए भोजन को एकत्रित करके जरूरतमन्द लोगों तक पहुँचाते हैं। लेकिन इनका अभी प्रचार व विस्तार नहीं होने से पर्याप्त नहीं है। अतः इनसे जुड़कर अन्य स्थानों पर भी ऐसी व्यवस्थाएँ अपनायी जावें।

**(ब) संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम अभियान:** अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण इकाई ने 'सोचे खाएँ

**और बचाएँ'** - एक अच्छी पहल शुरू की है, जिससे जुड़कर खाने की बर्बादी को रोका जा सकता है।

**(स) सरकारी अधिसूचना जारी की जाएँ :** सुप्रीम कोर्ट के निर्देशानुसार दिल्ली सरकार ने अच्छी पहल शुरू की है। अधिसूचना जारी कर भोजन की बर्बादी को रोकने के लिए शादी समारोह के आयोजकों को स्थानीय निकायों को सात दिन पहले बताना होगा कि कितने व्यक्ति समारोह में भाग लेंगे, कार्यक्रम कितने बजे प्रारम्भ होगा तथा कब समाप्त होगा। कार्यक्रम में खाना बचता है तो जरूरतमन्दों के लिए किस संस्था या उनकी एन.जी.ओ. के पास पहुँचेंगे। इन सब बातों की जानकारी उन्हें देनी होगी। साथ में उन संस्थाओं का नाम, पता तथा सम्पर्कसूत्र भी स्पष्ट करना होगा। इस तरह के कदम सम्पूर्ण भारत में भी लागू किए जावें।

**(द) पाठशालाओं में पाठ्यक्रम में 'भोजन-विवेक' पाठ जोड़ना :** बच्चों में अच्छी आदत डालने के लिए निजी व सार्वजनिक पाठशालाओं में अनिवार्य रूप से 'भोजन-विवेक' नामक पाठ को जोड़ा जाए, जिससे बच्चे को प्राथमिक स्तर पर अन्न के सम्मान की जानकारी मिले तथा उपयोग के बारे में जाने।

**(4) साधु-सन्त आगे आएँ :** सभी साधु-सन्त अपने स्तर पर नियम-प्रत्याख्यान करवाते हैं, प्रेरणा भी नियमित देते हैं, लेकिन पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. ने उत्क्रान्ति विवाह कार्यक्रम के अन्तर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार जो बीड़ा उठाया है, उसमें आयोजकों से फॉर्म भरवाना, संकल्प-पत्र भरवाना ताकि शादियाँ दिन में हों, आडम्बर रहित हों, डी.जे., बैंड, संगीतसन्ध्या नहीं हों तथा भोजन में सीमित मात्रा में आइटम बनाए जाएँ, झूठन नहीं डाला जाएँ इत्यादि का सराहनीय प्रयास किया जाए। इसके द्वारा समाजजनों ने न केवल नियमों को ग्रहण किया है अपितु पूरे मनोयोग से पालन भी कर रहे हैं। इस तरह के प्रयास अन्य सम्प्रदाय



भी लागू करें, जिससे भोजन की बर्बादी न हो, अपव्यय न हो तथा जीव हिंसा न हो।

धार्मिक आयोजनों में जहाँ चातुर्मास हो, वहाँ पर न्यूनतम आइटम निश्चित किए जावें तथा भोजन हेतु न्यूनतम राशि का 'कूपन' सिस्टम लागू किया जाए। इससे व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाया जा सकेगा। यह व्यवस्था चातुर्मास खोलते समय ही निश्चित कर देनी चाहिए, जिससे सभी को जानकारी मिल सके।

### (5) आहार-विवेक का ध्यान रखा जाए :

आहार-विवेक के लिए उत्तराध्ययनसूत्र तथा अन्य शास्त्रों (चरक संहिता, आयुर्वेद, ऋग्वेद) में वर्णन आता है तथा इस संबंध में स्पष्ट निर्देश श्रमण हेतु पाँच समिति, तीन गुप्ति में 'एषणा' समिति में स्पष्ट है। श्रमण के लिए तो ये अनिवार्य हैं ही, लेकिन 'श्रावक' भी यदि इनका पालन करें तो भोजन का सदुपयोग

होगा। शास्त्र स्पष्ट करते हैं कि आहार कैसे लेना, किस प्रकार लेना, कहाँ से लेना, कितना लेना? इसके लिए 'गवैषणा, ग्रहणैषणा तथा परिभोगैषणा' में सब कुछ बताया गया है। (16 उद्गम के, 16 उत्पादना के तथा 10 एषणा के दोष) कुल 42 दोष टालकर आहार लेना तो 5 दोष टालकर उपयोग करना अर्थात् 47 दोष टालकर श्रमण भोजन ग्रहण करते हैं। हम जैन हैं, कितने दोष टालते हैं, इस पर चिन्तन करके भोजन-विवेक का ध्यान रखने से आहार का न केवल सम्मान होगा वरन् सदुपयोग भी होगा।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भोजन का विवेक ही अन्न का सम्मान है। इसका सदुपयोग जरूरतमन्द की पूर्ति है। अतः भोजन की बचत एवं बर्बादी को रोकने के लिए व्यापक रूप से जनचेतना की आवश्यकता है। इस पर सभी को ध्यान देना चाहिए।

## पंचमहाव्रत के प्रतीक

(1) ओघा : अहिंसा का प्रतीक है, अंधकारयुक्त स्थान एवं रात्रि में पूँजकर चलना, एक कदम भी बिना पूँजे नहीं रखना चाहिए। इसलिए यह अहिंसा का प्रतीक, पहला महाव्रत हो गया।

(2) मुँहपत्ती : यह सत्य वचन का प्रतीक है। बिना विचारे जो कहे, सो पीछे पछताय....। बिना सोचे बोलना नहीं। एक लफज भी निरर्थक नहीं निकले। योद्धा युद्ध-भूमि में तीर चलाता है। एक तीर भी खाली चला गया तो मानो प्राण चले गए। एक तीर से सैंकड़ों को परास्त कर सकता है, पर एक भी विफल हो गया तो वह निहत्था बना देता है। एक भी लफज बाहर निकले तो हिये के तराजू पर तोल कर निकाले। सोच ले कि बाहर आने पर क्या रूप बनेगा, उसी रूप में प्रयोग हो।

(3) चादर : यह अचौर्य का प्रतीक है। धन-रुपये अपने पास पॉकेट में रखे जाते हैं, पर चादर ऐसी है जिसमें कोई पॉकेट नहीं। पॉकेट नहीं तो फिर रखें कहाँ? रखें ही नहीं तो ले ही नहीं। बिना दिये कोई चीज ग्रहण न करे। चाहे खाने-पीने की चीज हो या पढ़ने-लिखने की चीज हो, बिना आज्ञा नहीं लेनी। और तो क्या, यदि स्वधर्मी का सामान है तो भी

अनुमति लेकर प्रयोग करना। एक भी सामान के बिना अनुज्ञा हाथ नहीं लगाना। देव अदत्त, गुरु अदत्त...। देव की आज्ञा की चोरी देव अदत्त है। तीर्थंकर देवों की आज्ञा के विपरीत करे तो वह तीर्थंकर देवों की अनुज्ञा की चोरी है। बिना अनुज्ञा लिए मकान में नहीं ठहरना, क्योंकि वहाँ तुम्हारा स्वामित्व नहीं है। और तो और, इतनी बारीकी से बताया है कि यदि वह सुई लेने जाए और बोलकर ले कि चादर सिलनी है तो वह चादर ही सिल सकता है, अन्य चोलपट्टे आदि की सिलाई नहीं कर सकता, क्योंकि वह चादर सिलने का बोलकर आया है।

(4) चोलपट्टा : यह ब्रह्मचर्य का प्रतीक है। सर्व प्रकार से जगत् की सभी स्त्रियों को माता-बहिन के रूप में देखें। किसी के प्रति कोई दुर्भावना नहीं रखें। मन-वचन-काया से ब्रह्मचर्य व्रत में एकाकारिता बने। कोई कह दे- महाराज! मेरे लड़का नहीं है, कुछ मंत्र बता दो, तो नहीं बताना। चोलपट्टे का तात्पर्य है, लंगोट के पक्के।

(5) झोली : न कोई ताला, न कोई चाबी। इसलिए झोली कहा है। पैसा हो तो तिजोरी की आवश्यकता है। यह झोली अपरिग्रह का प्रतीक है।

ॐ

ॐ



संस्कार सौरभ



जैन धर्म

और

विश्वशांति

-संकलित

वर्तमान परिवेश में भगवान महावीर द्वारा उपदिष्ट और उनकी परम्परा द्वारा व्यवहृत अहिंसा और सत्य के सिद्धान्त ही विश्व को त्राण देने में पूर्णतया समर्थ हो सकते हैं, इन सिद्धान्तों से समग्र संसार को शांति मिल सकती है और वे अशांति की आग में झुलसने से बच सकते हैं।

वर्तमान में अभाव, महंगाई, अन्याय और अत्याचार में पिस रहे जनसाधारण के लिए समुचित समाधान करने में जैन धर्म के पावन आदर्श सर्वथा समर्थ हैं, क्योंकि इसके सिद्धान्त सर्वजन हितकारी व सर्वमंगलकारी हैं। अतः भौतिकता और भोगवाद की चकाचौंध में दिग्भ्रमित विश्व-मानव के जैन धर्म की स्मृतियों का आधार व अवलम्बन अनिवार्य है। भीषण युद्धों की मार-काट और तैयारियों से ध्वस्त तथा त्रस्त आज का युग शांति की कामना कर रहा है। वह शांति एकमात्र अहिंसा धर्म की आराधना से प्राप्त हो सकती है।

### :: अहिंसक मनुष्य

जो व्यक्ति अहिंसक होता है, वह विश्वविजयी होता है। क्योंकि अहिंसा में भय नहीं होता है, संकोच नहीं होता तथा कायरता भी नहीं होती। अहिंसा वीरता का आदर्श है। अहिंसक व्यक्ति केवल अपने लिए ही नहीं सोचता है, उसकी विचारधारा विशाल व व्यापक होती है। अहिंसक पुरुष पराई पीड़ा को अपनी

मानते हुए यथासंभव अपनी ओर से उसके लिए सहायक भी होता है। ऐसी उज्ज्वल मनोभावना से वह व्यापक अहिंसक बन जाता है अर्थात् वह धर्मात्मा हो जाता है एवं निःस्वार्थ हो स्वयं की न सोचता हुआ समग्र विश्वकल्याण की बात अंगीकार करता है।

### :: जैन धर्म में मानवता

जैन धर्म मानवता का बोध कराता है, करुणा की शिक्षा देता है एवं परोपकार का पाठ पढ़ाता है। संसार के समस्त प्राणियों को आत्मवत् समझते हुए उन्हें अपना बंधु या सखा मानना और उनके प्रति किसी प्रकार का वैरभाव, शत्रुता आदि न रखना मानवता कहलाती है। इस सुंदर भावना का विकास होने पर आत्मा अहिंसक कहलाती है। इसके विपरीत हिंसा अन्याय, वैर, अत्याचार और मायाचार आदि अमानुषिक कार्यों की प्रेरणा करते हुए मानव को दानव बनाती है, हिंसा ने समय-समय पर घोर नरसंहार किया है, महायुद्धों की सृजना की है और विश्व को अशांति की आग में झोंका है। जगत् के सभी धर्मों ने जैन धर्म की भावना को उच्च स्थान दिया है। सच तो यह है कि दयाभाव मनुष्य की प्रकृति का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। मानव में मानवता जैसा कोई गुण है तो वह करुणा के द्वारा ही निर्मित हुआ है, क्योंकि आत्मा में क्षमा का स्रोत प्रवाहित रहता है। वह अपने

विरोधियों के प्रति भी वैर-विरोध व द्वेष भाव नहीं रखता, वरन् सद्भावना रखता है।

## :: **जैन धर्म से विश्वकल्याण**

जैन धर्म की अहिंसा किसी देश अथवा काल की सीमा में बद्ध नहीं है, वह तो समस्त प्राणियों के लिए समान रूप से हितकारी व शाश्वत है। इसके प्रकाश में मानव स्वयं का ही नहीं, वरन् समस्त समाज, राष्ट्र तथा विश्व का कल्याण कर सकता है। इस सिद्धान्त को आत्मसात् करके व्यक्ति सहअस्तित्व और त्याग के मार्ग पर चलकर छोटे-छोटे निहित स्वार्थों से ऊपर उठकर सम्पूर्ण समाज व देश को ही नहीं, अपितु विश्व को मानवता का बोध कराते हुए विश्वशांति स्थापित कर सकता है। जैनधर्म के सिद्धान्त अपनाने से स्नेह एवं भाईचारा पनप सकता है तथा तनावपूर्ण वातावरण को दूर करके समस्त समाज व देश में एकता व स्नेह की भावना जागृत करके संसार के सुनियोजित विकास में सफलता मिल सकती है।

भगवान महावीर की अहिंसा कालातीत है, सत्य है और आज की परिस्थितियों की समस्याओं को सुलझाने के लिए एकमात्र उपाय है। यदि इस धर्म के सिद्धान्तों को अपने जीवन में अपनाकर लोग चाहें तो समस्त देश और समाज की समस्याओं को आसानी से सुलझा सकते हैं। साथ ही साथ प्रयत्न करें तो सारे संसार को अशांति और भय से भी मुक्त कर सकते हैं। आज सारा संसार हिंसा की ज्वाला में सुलग रहा है और सुख-शांति पाने का प्रयत्न कर रहा है, परन्तु हिंसा का परित्याग करके अहिंसा माता की गोद अपनाए बिना शांति की स्थापना असंभव प्रतीत होती है।

## :: **जैनधर्म-प्राणी मित्र**

जैनधर्म केवल मानव जाति के लिए ही नहीं अपितु प्राणीमात्र के हित का संदेश देता है।

इसीलिए तो कहा है कि धर्म के साथ मात्र मानव का संबंध जोड़ना भी संकीर्णता है। वह तो प्राणीमात्र के लिए आनन्दात्मक स्वरूप को प्राप्त करने का साधन है, जिससे मानव तो क्या पशु-पक्षी व छोटे से छोटा प्राणी भी लाभान्वित हो सकता है। व्यक्ति के हृदय में यदि धर्मभावना का उदय हो जाए अर्थात् उसकी ओर से अभय मिल जाए तो मात्र मानवों को ही नहीं अपितु अपेक्षाकृत सभी प्राणियों को शांति मिल सकती है।

## :: **वर्तमान परिवेश में धर्म**

वर्तमान में धर्म केवल बाह्य क्रियाओं तक दिखावटी रह गया है, लोगों के अन्तःकरण में नहीं उतर रहा है। तभी तो धर्माचरण से विहीन मानव प्रायः पथभ्रष्ट होते हुए पतनोन्मुख होते जा रहे हैं। आज संघर्ष की भट्टी में संतप्त संसार को जीवमात्र के कल्याण और उत्कर्ष की भावना से ओत-प्रोत इस धर्ममूलक अहिंसा के परिशीलन की नितान्त आवश्यकता है, सामाजिक समता और विश्वशांति का यही एकमात्र उपाय है। जगत् में अज्ञानी और अभिमानी व्यक्ति के हृदय में मिथ्या मान्यताओं, अंधविश्वासों, परम्पराओं और रूढ़ियों के लिए स्थान बना हुआ है अर्थात् वह इनमें धर्म मानता है और मिथ्या मान्यताओं को प्रोत्साहन देता है किन्तु वह धर्म नहीं सिर्फ पाखण्ड होता है। इसी से आए दिन हत्याएँ, आगजनी, लूटपाट, अपहरण जैसी बुराइयाँ निरन्तर बढ़ रही हैं। इन सबसे निपटने में जैन धर्म समर्थ है। यह धर्म विश्वधर्म बनने में अपना पूरा अधिकार रखता है।

## :: **जैन धर्म का अपरिग्रह**

भगवान महावीर का अपरिग्रह चिंतन अपने आप में एक अनोखा चिंतन है। वे गरीबी के पक्ष में नहीं थे, परन्तु उन्होंने गरीबों की गरीबी मिटाने के लिए दान की व्यवस्था बतलाई। उनका कहना था कि

मुझसे छोटा कोई न हो अर्थात् मेरे पास जो कुछ है वह सबके लिए है, परिवार, समाज व देश के लिए है। ऐसी उदात्त भावना के लिए उनका संकेत था, जो जनहित में अपूर्व बल दे सकता है। अपरिग्रह की भावना संचयवृत्ति आदि को नियंत्रित करने की प्रेरणा देती है। इससे समानता की अनुभूति हो सकती है। इस व्रत का व्यापक रूप से प्रचार और प्रसार होना आवश्यक है। इससे विकराल रूप धारण करने वाली आज की अर्थ समस्या तथा वर्ग-संघर्ष जैसी स्थिति का मुकाबला किया जा सकता है।

आज समस्त देशवासियों के लिए यह अहिंसात्मक धर्म संजीवनी व अमृत बूटी का काम कर सकती है। जैन धर्म के मूलभूत सिद्धान्तों पर विश्वास करके इन्हें आचरण में लाया जाए तो देश में चारों ओर शांति का साम्राज्य स्थापित हो सकता है, अन्यथा

हिंसात्मक प्रवृत्तियों से देश और समाज को गहरे पतन का मुँह देखना पड़ेगा। वर्तमान में विकट समस्याओं से सारे देश घिरे हुए हैं। कुछ राष्ट्र इनके समाधान हेतु घातक शस्त्रों का संग्रह कर रहे हैं। उनकी मान्यता है कि युद्ध से शांति हो जाएगी, परन्तु यह संभव नहीं। इससे तो और ज्यादा विद्रोह होने की आशंका उत्पन्न होगी और व्यवस्था बिगड़ जाएगी। ऐसी परिस्थिति में संसार के सामने भगवान महावीर की दिव्यदेशना से निकली अहिंसा को मूल्यवान योग मानकर उस पर अमल किया जाए तो निश्चित रूप से विश्वशांति हो सकती है। आज संसार के सभी राष्ट्र स्थायी शांति की खोज में विश्वास करते हैं। विश्वशांति की स्थापना का मार्ग तीर्थंकर महावीर के अहिंसावादी विचारों में निहित है। उनके विचार आज भी नूतन, शाश्वत और मौलिक प्रतीत होते हैं।

॥ जय गुरु नाना ॥



॥ जय महावीर ॥

॥ जय गुरु राम ॥



## श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

### (महत्तम महोत्सव - मेरा महोत्सव)

भातों का शुद्धिकरण  
आओ करें नित्य प्रतिक्रमण

प्रथम चरण

## 1 इच्छामि खमासमणो तक

1 अप्रैल से 15 मई

द्वितीय चरण

## 2 समुच्चय पाठ से बड़ी संलेखना तक

15 मई से 30 जून

तृतीय चरण

## 3 संपूर्ण प्रतिक्रमण

1 जुलाई से 15 अगस्त

## प्रतिक्रमण

प्रतिक्रमण का दूसरा चरण शुरू हो गया है, आप सभी से अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में प्रभावना करें।

हेल्पलाइन नंबर - 9752289969, 8149465041



कीड़ी, कमेड़ी, कागला, रात पड़्या नहीं खाया।  
मिन्ख जमारो पाय ने, रात पड़े किम खाय?

रात्रिभोजन त्याग करना जैनत्व की निशानी है। रात्रि को भोजन नहीं करना चाहिए, क्योंकि रात्रि के समय हमारा पाचन-तंत्र मात्र 20 प्रतिशत ही कार्य करता है। रात्रि में गरिष्ठ भोजन तो दूर हल्का भोजन पचने में भी समस्या होती है। सूर्य के प्रकाश के कारण दिन में जो भोजन आराम से पच जाता है, परन्तु जैसे-जैसे रात होती है वैसे-वैसे भोजन पचने की समस्या होने लगती है। भोजन ठीक रूप से नहीं पचने पर अनेक बीमारियाँ पैदा हो जाती है। भोजन को पचाने के लिए ऑक्सीजन अत्यावश्यक है।

व्यक्ति यदि सायं को जल्दी खाना खाएगा तो खाना जल्दी पचेगा और जल्दी सोएगा तो जल्दी उठेगा। हमारे शास्त्रों में तो रात्रिभोजन को नरक का द्वार माना गया है। सूर्यास्त पूर्व भोजन करना तो जैनत्व की निशानी है, पर आज की अंधी दौड़ में व्यक्ति अपना भला सोच ही नहीं पा रहा है। सूर्य के तेज के कारण उसकी किरणें अति सूक्ष्म जीवाणुओं से मुक्त रहती है।

हमें सात्विक व शुद्ध आहार करना चाहिए। रात्रिभोजन करने से सबसे बड़ी समस्या मोटापे की

आती है, जो सभी बीमारियों की जड़ है। भोजन करने के बाद यदि व्यक्ति को तुरन्त नींद आ जाए तो उसने जो भोजन किया है वह वैसा का वैसा ही पेट में पड़ा रहेगा और अंदर सड़ने लगेगा, जिससे उस व्यक्ति को गैस, कब्ज, अपच, अजीर्ण आदि समस्याएँ शुरू हो जाती हैं। भोजन पचने के लिए पेट में जठराग्नि होनी आवश्यक है और रात्रि के समय जठराग्नि मंद होने लगती है, जिससे खाना पचने में समस्या होती है।

आध्यात्मिक दृष्टि से रात्रि के समय किए गए भोजन के साथ अनेक जीव भोजन के साथ पेट में पहुँच जाते हैं और हमें पता भी नहीं चलता। इससे हमें जीवहिंसा का भयंकर पाप लगता है। **भोजन में यदि चींटी आ जाए तो बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। जूँ आ जाए तो जलोदर रोग, मकड़ी आ जाए तो कुष्ठ रोग, मक्खी आ जाए तो उल्टी आदि रोग हो जाते हैं। इसलिए रात्रिभोजन त्याग आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से सर्वोत्तम है।**

आयुर्वेद के अनुसार रात्रि विश्राम से 3-4 घण्टे पूर्व ही भोजन कर लेना चाहिए, जिससे शरीर स्वस्थ रहता है। इसलिए न रात्रि में भोजन पकाएँ और न ही खाएँ। इससे शारीरिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक लाभ होते हैं।

संस्कार सौरभ

# रात्रिभोजन त्याग

-नेहा संखलेचा, नागौर



# IDEAL JAIN LIFE IN EVERYDAY LIFE

—Romika Navlakha, Surat

In today's world, where everyone is busy and ignorant of their way of life, we are here to explain some simple yet effective ways to implement and religion in our everyday life. Which will prove beneficial to everyone following it, with scientific facts to prove the same.

As per reasearch, eating small amounts in small intervals of time, *i.e.*, intermittent fasting helps to aid digestion and keep out metabolism active, just how unodari tap is mentioned in our shashtras. Doing 36-48 hour fast detoxifies our body and helps in replacing old cells with fresh ones. It's also scientifically proven that eating before sunset keeps our colon clean and saves us from gas and acidity, a common problem in today's lives.

On the topic of ahimsa, if we focus on bhagwan's teaching of "**Ahimsa Parmo Dharma**". Where every life matters, be it insect, plant or animal, we can learn to have more compassion for the, and subsequently try to incorporate more non-violence in our

lives, which not only save us from more paap, but also protect the environment with its vital functioning. Scientist Jagdish Chandra Bose has proved there are living organisms in water, a point stated by vitraagis ages ago, which encourages us to shift towards dhovan water, where the ash water is known for its benefits tremendously.

Nowadays, people, young or old are seen to be running in a rat race, a race to acquire more wealth, more possessions, more cars, and in that, they refuse to focus on their mental health or rules a regulations, which ultimately leaves them dissatisfied. For this, our dharma has the aparigrah vrat, where on can vow to put a limit on wealth or things they want to possess, saving them from unnecessary tension and anxiety.

There are multiple little ways in which we can add Jain ideologies in our daily life, and create a beautiful path to walk on, all can be achieved with a little efforts and determination, keeping our gurus name in hearts, anything and everything is possible.



# अपने द्वाश किया हुआ अपना नियंत्रण ही है धर्म

-प्रो. सुमेरचन्द जैन, बीकानेर

**परहित सरित्त धर्म नहीं भाई!  
परपीड़ा सत्र नहीं अधगाईं॥**

सत्य और पवित्रता के साथ ईश्वर की सेवा करना और जीवन की सभी घटनाओं में उसकी आज्ञाओं का श्रद्धा से पालन करना ही यथार्थ धर्म है। न्याययुक्त व्यवहार करना, सौन्दर्य से प्रेम करना तथा सत्य की भावना को हृदय में धारण करके विनयशील बने रहना सबसे बड़ा धर्म है।

महात्मा बुद्ध लिखते हैं- 'धर्म का दान सब दानों से बढ़कर है। धर्म का रस सब रसों से बढ़कर है।'

महात्मा गांधी ने कहा है- 'जो चीज विकार को मिटा सके, राग-द्वेष को कम कर सके, जिस चीज के उपयोग से मन शूली पर चढ़ते समय भी सत्य पर डटा रहे, वही धर्म की शिक्षा है।'

धर्म एक स्वाद है। धार्मिक होना भोजन जैसा है। धर्म एक अनुभूति है। धार्मिक एक क्रिया काण्ड है। केवल धार्मिक आचरण हो जाने से धर्म जीवन में उतर नहीं सकता। धर्म के लिए थोड़ा अकेले होकर स्वयं को जानना होगा, तभी धर्म का सही स्वरूप समझ में आएगा।

धार्मिक होने से आप सत्य नहीं पा सकते, हाँ अपने धर्म में होने से सत्य पा सकते हैं। प्रत्येक के लिए उसका धर्म वह है जिससे वह उसको जान सके और उसके लिए उपयुक्त हो। सभी के लिए उपयुक्तता एक समान नहीं होती, यह अपने निज के विवेक से जानना होता है।

जैसे भाषा का धर्म है धारण करना। सन्तों का धर्म है खुद को जानना। संसारी का धर्म है मनोवांछित की पूर्ति करना एवं हर स्थिति में अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहना। ये कर्तव्य सभी लौकिक धर्म व सामाजिक धर्म है। कर्तव्य देश, काल, परिस्थिति के अनुसार बदल सकते हैं, परन्तु धर्म सर्वदा सर्वत्र एक ही रहता है। धर्म का कार्य है मांझना। यह जीवन को मांझता है, अपने द्वारा किया हुआ अपना नियंत्रण ही धर्म है।

धर्म विचारों के अनुशासन की प्रणाली है। मस्तिष्क में आस्था के दृष्टिकोण को भरकर यह हमारी ऊर्जा बढ़ा देता है। आपके पास प्रचुर शक्ति के संसाधन हैं, यह सुझाव देकर आपको कार्य करने की अत्यधिक शक्ति प्रदान करता है। हम अपने विकारों की प्रतिक्रियाओं के माध्यम से ईश्वर के आध्यात्मिक सम्पर्क में आते हैं तो अपने आप हम में दैवी शक्ति प्रभावित होने लगती है, जिससे अपने आप हमारा कार्य नवीनीकृत होता रहता है।

कुछ लोगों में संकीर्णता की भावना हुआ करती है- यह धर्म उनका है और वह उनका। पर क्या धर्म के दरवाजे पर कहीं लेबल मिलता है? हाँ, केवल एक लेबल मिलता है- 'आत्म-उत्थान करने वालों के लिए।' धर्म केवल आत्म-सुधार करने वालों के लिए है, पतन करने वालों के लिए नहीं।

कहा जाता है कि धर्म की रक्षा करो, धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा। इसका तात्पर्य है कि धर्म को ज्यादा से

ज्यादा जीवन में उतारो, धर्माचरण करो, धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा, तुम्हें पतन से बचाएगा।

धर्म आत्म-वस्तु है। इसको बचाने और बिगाड़ने वाला तू ही है। अच्छाइयों को अपनाया तो धर्म बचा, आत्मोत्थान हुआ। बुराइयों, अत्याचारों को अपनाया तो धर्म गँवाया, आत्मपतन किया।

धर्म वह महल है जो विश्वमैत्री की दीवार पर, छल और अहिंसा के खम्भों पर टिका हुआ है, जिसमें लिंग और रंग का भेद नहीं है। निर्धन और

धनिक का भेद नहीं है। धर्म धन से नहीं होगा। धर्म होगा अपनी आत्मा से। अगर धन से धर्म होता तो उसके मालिक धनवान ही होते। गरीबों के लिए तो वह स्वप्न की वस्तु होती। अन्याय से लाखों रुपये कमाए, उसमें से थोड़ा गरीबों को लुटा दिया तो वे सोचते होंगे बड़ा भारी पुण्य किया। लेकिन यहाँ धर्म पुण्य की बात कहाँ? यह तो सांसारिक व्यवहार है। न तो धन का संचय करना धर्म है और न व्यय करना ही। धन का त्याग करना धर्म है।

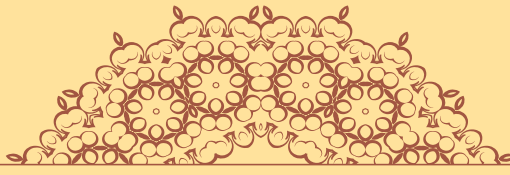
## ज्ञान पहेली

धार्मिक अंक 15-16 मई 2023 का सही हल

	1	2		3	4		5		6	7
	अ	भी		क	वि		वृ	द्धा	आ	ज
8	आ	ग	म	9	पु	रु	ष		10	ख्
									रा	ए
11	म	म		12	ष्क	ध	मी	चं	13	द
									जी	ह
	14	15	रा	16	म	र		17	द	शा
	अ	ज						व	18	ता
									ला	ला
	19	गो	व	20	र्ध	न	जी	जी		
22	अ	च	र	23	त	ना	व		24	ना
25	म	र		26	क	न		27	र	मे
								श	28	मु
									नि	जी
	रा		29	प	पा		30	मो	क्षा	
	व		31	र	स		32	ती	र्थ	
	ती		35	मा	न		ला		36	भ
									ग	व
									न	
	37	ती	र	38	क	ल	39	म	40	वा
									र	41
										को
	42	न	थ	म	ल	जी	सि	पा	नी	
										43
										छ
										टा

### विजेताओं के नाम

1. अंजनाजी मारू, चित्तौड़गढ़
2. चन्द्रकलाजी सेठिया, भीनासर
3. अरुणाजी चौरड़िया, महासमुंद
4. कुसुमजी बुच्चा, कोयम्बटूर
5. विमलाजी सुखलेचा, चामराजनगर



# धर्म : अधोगति से उत्थान की ओर

-सुरेश बोरदिया, मुम्बई

■ धर्म यानी जो गिरते हुए को धारण करे। यही धर्म की परिभाषा है। जीव अपने पाप कर्मों से नीचे यानी अधोगति की ओर गिरता है तो उसे रोकने वाला होता है धर्म। धर्म जीव को न सिर्फ गिरने से रोकता है बल्कि उसे पुनः ऊपर की ओर, उत्थान की ओर अग्रसर करने में भी सक्षम होता है। ऐसे कई उदाहरण पढ़ने में आते हैं, जिनमें नरकगति में पहुँच चुका जीव भी अगले भवों में धर्म के प्रभाव से मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

चक्रवर्ती-छः खण्डों का स्वामी, छः खण्ड के सभी बत्तीस हजार देशों पर उसका राज्य, बत्तीस हजार मुकुटधारी राजा उसके सेवक, निन्यानवें लाख अंगरक्षक, चौदह रत्न, नवनिधियों से सम्पन्न होता है। इतना सब कुछ होते हुए भी अगर राज्य भोगते हुए आयुष्य पूर्ण करके मृत्यु को प्राप्त करे तो सिर्फ नरक गति में ही जाता है। लेकिन इन सबका त्याग करके संयम ग्रहण करे तो देवगति या मोक्ष में जाता है। विचार करने योग्य है कि चक्रवर्ती का इतना वैभव, रिद्धि, बल उसे नरक गति से बचाने में जरा भी सक्षम नहीं है। उसी नरक गति से बचाने में सक्षम होता है धर्म। संयम रूपी अणगार धर्म उसे देवलोक या मोक्ष में ही ले जाता है। यह है धर्म का प्रभाव, धर्म की महिमा।

**धम्मो मंगलमुक्कट्टं, अहिंसा संजमो तवो।**

अहिंसा, संयम, तप रूप धर्म उत्कृष्ट मंगल हैं और दान, शील, तप, भाव ये चार भी धर्म के ही प्रकार हैं।

**दाणं सीलं च तवो भावो एवं चउच्चिहो धम्मो।**

धर्म मंगलकारी होता है। आवश्यकता है धर्म को समझने की और सम्यक् विधि से धर्म की विवेकपूर्वक आराधना करने की। एक छोटा-सा कार्य भी विवेक से किया जाए तो वह सुकार्य बनकर सुफल प्रदान कर सकता है तो धर्म जैसे कार्य में कितना विवेक आवश्यक होता है।

धर्म में मुख्यतया निम्न बातों का विवेक रखना ही चाहिए- 1. उद्देश्य, 2. श्रद्धा, 3. यतना। इसके अलावा और भी कई प्रकार के विवेक अपेक्षित रहते हैं।

धर्म के लिए भी उद्देश्य अवश्य होता है। यह उद्देश्य मात्र हमारे कर्मनिर्जरा का ही होना चाहिए, किसी भौतिक लाभ या अन्य किसी इच्छित वस्तु की प्राप्ति जैसा उद्देश्य नहीं होना चाहिए। जो धर्म हमें मुक्ति के द्वार तक पहुँचा सकता है, उस धर्म को तुच्छ, अल्पकालिक सुख या वस्तु को पाने के लिए लुटा देना बुद्धिमत्ता नहीं होती।

गुरु भगवन्तों के प्रवचन साहित्य में पढ़ा था कि पहले मेवाड़ के कुछ गाँवों में 'धमक तेला' की प्रथा प्रचलित थी जिसमें बहू तेला तप करके सासूजी-ससुरजी को धमकाती थी कि नए वस्त्र, आभूषण देंगे तो ही पारणा करूँगी और ये वस्तु लाकर देने पर ही बहू पारणा करती थी।

यहाँ एक तेले तप रूपी धर्म की कीमत कितनी हुई? सिर्फ कुछ वस्त्र और आभूषण। एक तेला

चंदनबाला द्वारा सहज ही हो गया था। तीन दिनों से भूखी-प्यासी राजकुमारी चन्दनबाला कैसी परिस्थिति में थी! हाथों में हथकड़ियाँ, पैरों में बेड़ियाँ बंधी हुई। खाद्य सामग्री भी हाथों में, लेकिन ऐसी हालत में भी एक यही भावना कि किसी अतिथि को आहारदान करके फिर आहार ग्रहण करूँगी।

### **दाणं सीलं च तवो भावो एवं चउच्चिहो धम्मो।**

चंदनबाला ने अपनी हथकड़ियाँ, बेड़ियाँ टूटने की कामना नहीं की बल्कि मात्र दान की भावना भायी और उसकी भावना से प्रभु महावीर को छः मासी तप के पारणे में आहार बहराने का सौभाग्य मिल गया। 'अहो दानं! अहो दानं!' का उद्घोष हुआ।

और हथकड़ियाँ व बेड़ियाँ स्वतः ही टूट गयीं। जैसा कि 'धर्म करत संसार सुख, धर्म करत निर्वाण' और इसी धर्म की राह पर चलते हुए चंदनबाला ने उसी भव में मोक्ष को प्राप्त कर लिया।

एक तेला नंदन मणियार ने भी किया था। नंदन मणियार राजगृही का एक सम्पन्न सेठ था। भगवान महावीर का चातुर्मास राजगृही में था। नन्दन सेठ भी पहुँचा भगवान के दर्शन करने और भगवान से बारह व्रत स्वीकार कर लिये। चातुर्मास सम्पन्न करके भगवान विहार करके अन्यत्र पधार गये। कालान्तर में नंदन शनैः शनैः फिर से मिथ्यात्व की ओर बढ़ने लगा।

एक बार जेठ मास में भीषण गर्मी में नंदन तेला तप करके पौषधशाला में प्रतिपूर्ण पौषध व्रत की आराधना करने लगा। भीषण गर्मी में प्यास के मारे आकुल-व्याकुल हो उठा। जैसे-जैसे तेला तप परिपूर्णता की ओर बढ़ता गया, प्यास भी असहनीय होती गयी। सोचने लगा कि लोग प्यास का दुःख कैसे भोगते होंगे? वे लोग धन्य हैं जो प्यासे लोगों के लिए कुएँ,

पुष्करण्याँ (बावड़ियाँ) आदि बनवाते हैं। इसी तरह विचार करते-करते तेले की अंतिम रात्रि में वह अपने तप के उद्देश्य से भटक गया और निश्चय किया कि कल सुबह होते ही श्रेणिक राजा से आज्ञा लेकर राजगृही में शीघ्र ही एक पुष्करणी का निर्माण कराऊँगा।

स्वयं भीषण प्यास को सहन भी कर लिया, लेकिन तेले तप और पौषध में भी विवेकहीनता का प्रवेश हो गया और पुष्करणी के निर्माण का संकल्प ले लिया। तेले पश्चात् अपने संकल्प के अनुसार निर्माण कार्य प्रारम्भ करवा दिया।

तन, मन, धन सब कुछ लगा दिया निर्माण में। पुष्करणी का ऐसा निर्माण करवाया कि लोग वहाँ अपनी प्यास बुझाने, नहाने के लिए आने लगे। वह पुष्करणी एक दर्शनीय स्थल के रूप में प्रसिद्ध हो गई। प्रसन्न होकर नन्दन ने उस पुष्करणी का नाम अपने नाम पर नन्दा पुष्करणी रख दिया।

ऐसी मनोरम पुष्करणी की लोग चर्चा करते। नंदन की प्रशंसा भी करते और स्वयं नंदन उसमें आसक्त हो गया। अपना अधिकतर समय वहीं पर बिताने लगा।

एक बार नंदन बीमार हो गया। हर संभव उपचार किया गया, लेकिन सब व्यर्थ। अब वह आर्त्तध्यान में डूबने लगा। एक तो आर्त्तध्यान और दूसरा पुष्करणी में अति आसक्ति। फलस्वरूप तिर्यच गति का बंध कर लिया और उसी आर्त्तध्यान व आसक्ति में डूबा हुआ नंदन काल करके उसी पुष्करणी में मेंढक के रूप में उत्पन्न हो गया।

पूर्वभव में मनुष्य, नामी सेठ, भगवान के दर्शन-वन्दन का सौभाग्य मिला। बारह व्रत भी स्वीकार किये, लेकिन उन व्रतों की आराधना में उद्देश्य से डगमगा गया और उसका परिणाम नंदन अब मेंढक के रूप में उसी पुष्करणी में विचरण कर रहा था।

पुष्करणी पर आने वाले लोग अब भी उस पुष्करणी और नंदन सेठ की प्रशंसा कर रहे थे। जल में विचरण करते हुए मेंढक बार-बार नंदन सेठ का नाम सुनता तो उसे जाना-पहचाना लगता। इससे उसे जातिस्मरण ज्ञान हो गया। अपना पूर्वभव उसे अच्छी तरह दिखाई देने लगा कि जिस नंदन सेठ की लोग चर्चा-प्रशंसा कर रहे हैं वह पूर्वभव में मैं स्वयं ही था। यह भी याद आ गया कि मैंने भगवन से 12 व्रत भी स्वीकार किये थे, लेकिन उनका पालन नहीं कर पाया था। अब पुनः

उसने उन व्रतों को स्वीकार किया और उनकी आराधना करने लगा। जीवनभर के लिए बेले-बेले की तपस्या भी करने लगा।

विचार करने योग्य है कि मनुष्य भव में जो व्रतों का पालन नहीं कर पाया, वह अब मेंढक के भव में पालन कर रहा है। तिर्यच गति, मेंढक का भव, जल में विचरण, फिर भी श्रावक व्रतों का पालन! आगार धर्म की आराधना। बेले-बेले का पारणा। आने वाले लोगों के बर्तन धोने एवं नहाने से किनारे पर जितना जल प्रासुक होता उसमें से ही ग्रहण करके अपना निर्वाह करता। वाह! कैसी निर्मल आराधना।

एक दिन भगवान के पुनः राजगृही में पधारने की खबर सुनकर दर्शन-वंदन के लिए निकल पड़ा। भगवान के विराजने के स्थान की तरफ फुदकता जा रहा था। राजा श्रेणिक सैन्य बल के साथ उसी मार्ग से जा रहे थे। राजा श्रेणिक के एक घोड़े के पैर के नीचे वह मेंढक कुचला गया। उसकी आँतें बाहर निकल गयीं। अन्तिम समय सन्निकट दिखाई देने लगा। पहले तो उसने अपने आपको किसी तरह मार्ग से एक तरफ किया। इसका उद्देश्य शायद यही रहा होगा कि मार्ग के बीच में प्राण निकल जाने पर मृत शरीर में जीव उत्पन्न

होने की स्थिति में उनको हिंसा से बचाया जा सके। अगर ऐसे ही भाव रहे होंगे तो यतना का एक बड़ा उदाहरण हो सकता है।

मार्ग के किनारे होकर भगवान को वंदन-नमस्कार कर व्रतों में लगे अतिचारों की आलोचना की, फिर जीवनपर्यंत चारों आहार का त्याग कर दिया। संथारा-संलेखना सहित पंडितमरण को प्राप्त करके सौधर्म कल्प में चार पल्योपम की स्थिति वाला दुर्दुर देव बना।



देखिए, अब धर्म ने उसे कैसे धारण कर लिया! मनुष्य भव से गिरकर वह तिर्यच गति में पहुँच चुका था लेकिन मेंढक के भव में धर्म ने उसे धारण करके देवलोक में पहुँचा दिया और वहाँ का आयुष्य पूर्ण करके महाविदेह क्षेत्र में मनुष्य रूप में जन्म लेगा और उसी भव में मोक्ष को प्राप्त करेगा।

अतः धर्म के लिए हमारा उद्देश्य मात्र आत्मिक लाभ होना चाहिए। आत्मकल्याण के एकमात्र उद्देश्य के साथ-साथ धर्म के प्रति हमारी श्रद्धा भी होनी चाहिए।

### सद्धा परम दुल्लहा

श्रद्धा परम दुर्लभ है। कई बार धर्म करते हुए धर्म के फल के बारे में संशय बन जाता है कि धर्म का फल मिलेगा या नहीं? मिलेगा तो कब मिलेगा? अगर ऐसा

संशय बना रहता है तो यही लगता है कि धर्म पर पूरी श्रद्धा ही नहीं है। अनुकूल परिस्थितियाँ प्राप्त नहीं होने एवं प्रतिकूल परिस्थितियों की विद्यमानता से कभी ऐसा विचार आ जाए कि मुझे धर्म करके क्या मिला? धर्म ने मुझे क्या दिया है? ऐसा विचार करना भी हमारी डाँवाडोल श्रद्धा का परिचायक है। ऐसी शंका ही घातक बन सकती है।

### संशयात्मा विनश्यति

और धर्म के फल के प्रति संशय करने से सम्यक्त्व भी दूषित हो सकता है।

स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय होने के कारण अमरचंदजी बाँठिया को अंग्रेज सरकार ने गिरफ्तार करके ग्वालियर जेल में बंद कर दिया और फाँसी की सजा सुना दी गयी। उनके रोम-रोम में धर्म समाया हुआ था। धर्म पर श्रद्धा अडिग थी। फाँसी की सजा सुनकर भी धर्म से श्रद्धा कमजोर नहीं हुई। वही दृढ़ता, वही श्रद्धा!

फाँसी का तय दिन भी आ गया। अन्तिम इच्छा के रूप में एक शुद्ध सामायिक की आराधना करनी चाही। मौत फाँसी के रूप में सामने इंतजार कर रही थी, लेकिन न तो मौत का भय और न ही धर्म के प्रति कोई शंका। सामायिक पश्चात् अमरचंदजी को फाँसी के फंदे पर लटका दिया गया, लेकिन-

**देवा वि तं नमसंति, जस्स धम्मं सया मणो।**

जिसके हृदय में धर्म बसता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं। फाँसी का फंदा एक बार टूट गया, हालाँकि कानून के विपरीत उन्हें दोबारा फाँसी पर लटका दिया गया, लेकिन फिर भी अन्त तक उनके मन में धर्म के प्रति किसी तरह की शंका या संशय नहीं था। अन्तिम समय तक भी धर्म का साथ नहीं छोड़ा। हमें भी धर्म के प्रति पूर्ण श्रद्धा रखनी चाहिए।

धर्म-विवेक में यतना का महत्वपूर्ण स्थान होता है। यतना को धर्म की माता माना गया है। धर्मरुचि अणगार को गोचरी में मिली कड़वे तुम्बे की सब्जी। गुरुदेव ने निरवद्य स्थान पर परठ देने की आज्ञा दी। मुनिश्री वह सब्जी का पात्र लेकर चले परठने। पूरी सब्जी जमीन पर परठ देने से कई जीवों की घात संभव था। मुनि के हृदय में करुणा का सागर भरा था। वे सोचने लगे कि इतने जीवों की हिंसा क्यों की जाए? इससे बेहतर है कि यह सारी सब्जी मैं स्वयं ही खा जाऊँ तो कई जीवों की रक्षा हो सकती है। फिर मेरे गुरुदेव ने भी तो निरवद्य स्थान पर परठने की आज्ञा दी है। मेरा स्वयं का यह शरीर निरवद्य है। इससे अधिक निरवद्य स्थान और क्या हो सकता है? और मुनिश्री ने सारी सब्जी को स्वयं ही ग्रहण कर ली।

जीवरक्षा के लिए अहिंसा रूपी धर्म का पालन करने के लिए, यतना का इससे अधिक क्या उदाहरण हो सकता है? कीड़ी, मकोड़े जैसे जीवों की रक्षा के लिए कड़वे जहरीले तुम्बे की सब्जी स्वयं खा ली। जीवों की रक्षा यतना के बिना संभव नहीं थी।

### ‘अहिंसा परमो धर्म’

भगवान महावीर द्वारा बताया गए अहिंसामय धर्म की आराधना के लिए यतना आवश्यक है। धर्मरुचि अणगार ने अहिंसा धर्म के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये।

हमारे जीवन में भी धर्म के लिए मात्र आत्मकल्याण हेतु कर्मनिर्जरा का ही उद्देश्य हो। धर्म पर श्रद्धा सदा बनी रहे तथा धर्म में यतना का विशेष स्थान होना चाहिए। धर्म में इन तीन बातों का विवेक रखना अति महत्वपूर्ण है।

इनके अलावा भी धर्म में कई तरह का विवेक होना चाहिए। धर्म हमें सदैव धारण करके आत्मोत्थान की तरफ अग्रसर करता है, धर्म ही हमें मोक्ष तक पहुँचा सकता है।





भक्ति रस

# समकित सूर्य उपाध्याय प्रवर

संध्या धाड़ीवाल, रायपुर

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा.  
के जन्मदिवस (ज्येष्ठ बदी 5) पर विशेष -

बैठे हैं गुरुचरणों में कर रहे साष्टांग नमस्कार,  
करते हैं जो अपने गुरुवर का गुणगान बारम्बार।  
सद्गुरु आज्ञा ही प्रभु आज्ञा जिनके चारों धाम,  
इक्यावनवाँ जन्मदिवस आया है जिनका,  
ऐसे बहुश्रुत वाचनाचार्य को संध्या का कोटिशः प्रणाम॥  
चरणों में बैठे मुनिप्रवर के,  
संध्या कर रही है प्रार्थना।  
उपाध्याय प्रवर फरमाएँ कैसे करते हैं आप,  
अपने गुरु की अभ्यर्थना॥

बहुश्रुतजी ने फरमाया! अपने गुरु का गुणगान कुछ यूँ सुनाया॥

- उ उपस्थित है जो सदा आज्ञा में अपने गुरुवर की।  
धूल समझते हैं खुद को जो गुरुवर के चरणों की॥
- पा पास अपनी अंतरात्मा के बैठते हैं जो प्रतिदिन।  
साथ खुद को लेकर साधना करते हैं होकर एकाग्र चित्त॥
- ६ ध्यान में अवस्थित आकर्ण डूबे हुए।  
मेरे गुरु भगवंत हैं मौन साधना से सधे हुए॥
- या यतनापूर्वक प्रत्येक प्रवृत्ति है जिनकी।  
दृढसंकल्पी आत्मा में होती है उनकी गिनती॥
- य यकीन है जिन्हें कि ढूँढ लेंगे अपना मुकाम।  
वे मेरे गुरु राम हैं जिन्हें करता हूँ मैं नित्य प्रणाम॥
- प्र प्रवीणता!! प्रतिष्ठा के पाटे पर प्रतिष्ठित।  
लेशमात्र भी अहं की छाया नहीं उनके मुख पर लक्षित॥
- व व्यवस्थापन का गुण अपनी रग-रग में समाए।  
इसीलिए तो वे श्रीसंघ के तारणहार कहलाए॥
- र रत्नत्रय के धारक हैं पंचमहाव्रत के आराधक।  
मिथ्यात्व के मेटनहार हैं वह सम्यक्त्व दीप प्रकाशक॥

भविकजन आओ!! दर्शन करो,  
प्राची से झाँकते समकित सूर्य के।  
पाया मैंने भी अनंत प्रकाश,  
जिनके उज्ज्वल नूर से।  
सौंप दो जीवन कुशल शिल्पी के हाथ,  
जिन्होंने मुझे भी दिया सुंदर आकार॥

मेवाड़ के भाग्य खिले,  
जहाँ राम गुरु के चरण पड़े।

जहाँ राम गुरु की महर है,  
वहाँ संयम लीला लहर है।

**गुरुचरण विहार**

**युगनिर्माता, शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशान्तमना परम श्रद्धेय  
आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. एवं  
बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा.  
की पावन चरणरज से मेवाड़ का कण-कण हो रहा पावन**

**मुमुक्षु बहिन कुमकुमजी कोटड़िया की जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न  
नवीन नामकरण नवदीक्षिता साध्वी श्री निरामयश्रीजी म.सा. हुआ  
मुमुक्षु बहिन लक्कीजी सुराणा का भव्य अभिनन्दन**

**संयम का पथ कायरों का नहीं, वीरों का पथ है -आचार्य श्री रामेश**

डूंगला, कानोड़, लुणदा, बोहेड़ा, बड़ीसादड़ी।

**ज्ञान और क्रिया के संगम, जिनशासन का तेज सितारा।  
कलयुग में भी राम चरण में, सत्युग का है सदा नजारा।।**

जिनकी उच्च संयम साधना से देश-विदेश अभिभूत हो रहा है ऐसे युगपुरुष, साधना के शिखर पुरुष, ज्ञान एवं क्रिया के बेजोड़ संगम, नानेश पट्टधर, परमाराध्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा वीरभूमि मेवाड़ क्षेत्र में निरंतर अध्यात्म की पावन गंगा बहा रहे हैं। धर्मप्रेमी जनता महापुरुषों का सान्निध्य पाकर निहाल हो रही है। जैन-जैनेतर श्रद्धालु महापुरुषों की उत्कृष्ट संयम साधना व आगमसम्मत जीवन निर्माणकारी प्रवचनों से निरंतर प्रभावित हो रहे हैं। इस भीषण गर्मी में भी प्रभावी विचरण एवं पावन प्रवास जारी है। दिव्य उभय गुरु-भगवंतों के निर्मल चारित्रनिष्ठा से प्रभावित होकर कई आत्माएँ संयम मार्ग पर अग्रसर होकर पावन गुरुचरणों में समर्पित हो रही हैं। मुमुक्षु बहिन कुमकुमजी कोटड़िया की भव्य जैन भागवती दीक्षा सौल्लास सम्पन्न हुई एवं मुमुक्षु बहिन लक्कीजी सुराणा का अनेक संघों द्वारा अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया, जिसमें मुमुक्षु बहिन एवं उनके परिजनों का शॉल, माला एवं अभिनन्दन-पत्र भेंट कर स्वागत किया गया।

आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि का बड़ीसादड़ी के बाद छोटीसादड़ी, केसुन्दा को पावन करते हुए नीमच चातुर्मास 'साधना महोत्सव' पर पधारना संभावित है।

**16 मई 2023** | प्रातः मंगलमय बेला में भगवान महावीर को समर्पित प्रार्थना पश्चात् आयोजित धर्मसभा में विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “**धर्म उत्कृष्ट मंगल है। मंगल का अर्थ है पापों को गलाने वाला। अहिंसा, संयम, तप रूपी धर्म में जो लीन रहता है उसे देवता भी नमस्कार करते हैं। मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं है। यह सूत्र अपने मन में बिठा लें तो आत्मा का कल्याण करने से हमें कोई रोक नहीं सकता। हम बच्चों को पैसा कमाने की मशीन बनना चाहते हैं। उनके जीवन निर्माण में हमने कितना पुरुषार्थ किया? हम जन्म से जैन है, कर्म से जैन नहीं बन पाए। हमारा जैनत्व बहुत ऊँचा होना चाहिए। यदि जैनी का मतलब मालूम होगा तो जल्दी से हम फिसलेंगे नहीं। I JAIN MY JAIN का उद्देश्य है कि लोगों में धर्म के प्रति जागरूकता बढ़े। अगर एक व्यक्ति धर्म से जुड़ गया तो वह अनेक लोगों को धर्म से जोड़ने वाला बनेगा। आज बहुत कम लोग धर्म संस्कार देने वाले रह गए हैं। जैनज्म की पहली भूमिका है कि हमारा जीवन नैतिकता से भरा होना चाहिए। कोई खोटा काम नहीं करें, जिससे जीवन से सत्य चला जाए। शरीर जाए तो जाए, पर सत्य धर्म नहीं जाना चाहिए। यदि किसी का भला कर सको तो अच्छा, नहीं तो किसी का बुरा नहीं करना चाहिए।”**

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जिनेश्वर भगवान की वाणी सत्य एवं निःशंक है। जो उनके मार्ग पर चलेगा उसका कल्याण निश्चित है। गुरु के चरणों में जो आ जाता है उसका बेड़ा पार हो जाता है।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हमें अपना ज्यादा से ज्यादा समय धर्म कार्यों में लगाना चाहिए। शासन दीपिका साध्वी श्री समताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री मनीषाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुरभिशीजी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रियाश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

दोपहर में उभय गुरु-भगवन्तों के पावन सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए। डूंगला संघ की सेवा भावना सराहनीय रही। प्रभु एवं गुरुभक्ति कार्यक्रम में चारित्रात्माओं का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ।

**17 मई, जैन स्थानक, डूंगला** | प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना पश्चात् आचार्यदेव ने अपूर्व कृपा बरसाते हुए मंगलपाठ श्रवण कराया। विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि “**हम धर्म कर रहे हैं, पर हम धर्म तक पहुँच पा रहे हैं या नहीं। यात्रा किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए होती है। यात्रा यानी मंजिल को प्राप्त करने का साधन। धार्मिक क्रियाएँ हमारी यात्रा है। हम धर्म क्रिया में मंजिल को प्राप्त कर रहे हैं या नहीं? यह चिंतन करना है। हमें समीक्षा करनी है कि जो धर्म क्रिया मैं कर रहा हूँ उससे मुझे क्या मिला? कुछ मिला या नहीं? धर्म की आराधना से हमारे मन में शांति, समाधि और धैर्य बढ़ता है। अगर हमें समाधि नहीं मिल रही है तो हमें समझना चाहिए कि कहीं हम नकली धर्म तो नहीं कर रहे हैं। धर्म श्रद्धा से जीव को महान लाभ होता है। फिर पुद्गलों के प्रति लगाव नहीं रहता है। तुम्हारे भीतर भी महावीर की आत्मा है। कमी सिर्फ यही है कि हम उसकी पहचान नहीं कर पा रहे हैं। हमें अपनी आत्मा का कल्याण करना है तो धर्म हमें सही दिशा की ओर ले जा सकता है। धर्म तब बढ़ा हुआ माना जाएगा जब हमारे में शांति, समाधि, धैर्यता और समभाव बढ़े। हमें अपनी आत्मा को तपाना है। यदि सहनशीलता नहीं बढ़ रही है तो समझना चाहिए कि हमारा धर्म नहीं बढ़ रहा है। धर्म के सही स्वरूप को समझना है, तभी मोक्ष मंजिल को प्राप्त कर सकेंगे।”**

**18 मई।** प्रातः मंगलमय प्रार्थना पश्चात् आचार्य भगवन् ने मंगलपाठ प्रदान किया। तत्पश्चात् आयोजित प्रवचन सभा में परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. ने फरमाया कि “**धर्म उत्कृष्ट मंगल है। धर्म का आचरण करने वाले को देवता भी नमस्कार करते हैं। धर्म को किया गया समर्पण हमारे मन को सुख देने वाला है। जिसका मन धर्म में स्थिर रहता है वह हर स्थिति में समभाव में रहता है। जैसे सोने को तपाना पड़ता है। वैसे ही आत्मा को तप के माध्यम से तपाया जाता है। हमें अपनी आत्मा को यदि मोक्ष की ओर ले जाना है तो हमें ज्यादा से ज्यादा समय आत्मा के उत्थान में लगाना चाहिए। हमें जड़ नहीं चैतन्य की ओर गतिशील होना चाहिए।”**

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि यह वीर प्रभु का शासन है। जिनशासन सत्य है। आध्यात्मिक आरोग्यम् के तीन बिन्दुओं की व्याख्या एवं गुरु के द्वारा दिया गया पच्चक्खाण आत्म-अनुशासन ही है।

श्री हेमन्तमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि तीर्थकर देवों ने फरमाया है कि पानी की एक बूँद में असंख्यात् जीव हैं। भगवान की वाणी में संदेह की गुंजाईश नहीं है। साध्वी मण्डल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

**19 मई।** परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का डूंगला से निम्बोदड़ा में मेनारियाजी के निवास पर मंगलमय पदार्पण हुआ। ग्रामीणों ने महापुरुषों के सान्निध्य का लाभ लिया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा बरसाते हुए मंगलपाठ प्रदान किया।

**20 मई।** धर्मनगरी कानोड़ के पंचायती नोहरे में आराध्यदेव आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि संतरत्नों का जय-जयकारों के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ। चारों ओर खुशियाँ छा गयीं। विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि “**हमारा मन सुख-दुःख के झोले में झूलता रहता है। हमारा मन उथल-पुथल में चलता रहता है। सही रास्ते को देख नहीं पाता। हम समस्याओं का समाधान करने में ही इतना व्यस्त हो जाते हैं कि सोचने का समय ही नहीं बचता। एक के बाद एक समस्याएँ जीवन में आ रही हैं। जीवन में हमें क्या करना चाहिए बस इतना हमें ध्यान देना है। समझदार व्यक्ति वो है जिसके जीवन में समस्याओं का समाधान होता है। ‘आज नहीं, कल देखेंगे’ ऐसा सोचने वाला व्यक्ति अशांत रहता है। कितना भी धर्म-ध्यान करते हैं, पर मन संसार की कामनाओं में ही घूमता है। राम गुरु चरण शरण मिले, हमारी मन की सारी इच्छाएँ खत्म हो जाएँ, यही एकत्व की साधना है। हमारी यही प्रार्थना होनी चाहिए। जो उच्च भावना रखता है कि भगवन्! मुझे इस संसार के दलदल से बाहर निकलना है। जहाँ न बुढ़ापा हो, न दरिद्रता हो, एक मात्र सुख हो, वही मोक्ष मंजिल की ओर जाता है।”**

**21 मई।** प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना पश्चात् आयोजित धर्मसभा में शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “**हमारा मन जब संयोगों से मुक्त होगा तब धर्म की सही आराधना हो पाएगी। जो वस्तु हमारी नहीं है किन्तु हमारे अधिकार में है, उसे अपना बनाने की चेष्टा करना अज्ञान है। संसार में कोई अपना नहीं है। सब स्वार्थ की दुनिया है। हमने जितना अपने मन का संबंध जोड़ा है, यह संयोग है। यह संयोग हमें दुःख देने वाला है, सुख देने वाला नहीं है। थोड़े समय के लिए हम मान लेते हैं कि यह संयोग सुख है, लेकिन यह सच्चा सुख नहीं है। जब तक असली सुख नहीं मिलता तब तक हम बाह्य सुख को असली सुख समझते रहते हैं। हम जानते जरूर हैं कि मेरा कोई नहीं है किन्तु हम अपनेपन में बह जाते हैं।**

**दुनिया में अपना कोई नहीं है। हम भी प्रभाव में बह रहे हैं। बिना साधुत्व के मोक्ष मिलना मुश्किल है। संयम की दिशा में ही हम पुरुषार्थ करें। संयम के मार्ग में बढ़ेंगे तो हमें मोक्ष मंजिल पाने से कोई रोक नहीं सकता।**

श्री हेमन्तमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हमारे पास तीर्थकर नहीं, पर हमें तीर्थकर सरीखे आचार्य भगवन् एवं पंचमहाव्रतधारी साधु-साध्वियों का योग मिला है। अरिहन्त भगवान की विनय भक्ति करेंगे और उत्कृष्ट रसायन आवे तो तीर्थकर नामकर्म का बन्ध होता है। समय मात्र का भी हमें प्रमाद नहीं करना चाहिए। अपनी आत्मा का कल्याण करने में समय का सदुपयोग करें।

**22 मई, पंचायती नोहरा, गांधी चौक, कानोड़।** प्रातः मंगलमय बेला में प्रभुभक्ति से ओत-प्रोत प्रार्थना के पश्चात् आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से मंगलपाठ श्रवण करने का सौभाग्य मिला। विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए तरुण तपस्वी आचार्य भगवन् ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **“धर्म की क्रियाएँ हम करते जा रहे हैं, हम आगे बढ़ते जा रहे हैं, पर वस्तुतः धर्म में हम कितना आगे बढ़े? धर्माराधना का परिणाम चित्त की प्रसन्नता है। यदि वह प्रसन्नता हमें प्राप्त हो रही है तो समझना कि हम सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। यदि प्रसन्नता प्राप्त नहीं हो रही है तो चित्त खिन्न एवं उदास हो समस्याओं से घिरा रहता है। जहाँ समस्याएँ बढ़ती ही जा रही है वहाँ धर्माराधना नहीं हो रही है। जब आदमी अपना स्वार्थ सोचता है तो परमार्थ को भूल जाता है। मानव का शुभ तन-मन पाया है, इससे व्रतधारी बनो। एक मात्र मनुष्य जन्म ही है, जिससे मोक्ष मंजिल प्राप्त कर सकते हैं। भगवान महावीर का शासन मिला है तो संयम जीवन में व्रत-नियम अवश्य होने चाहिए। श्रावक एक व्रत की भी सम्यक् आराधना कर ले तो उसका कल्याण निश्चित है। बारह व्रतधारी बने तो बहुत ही बढ़िया है।”**

श्री राजनमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हमने जितनी भी धन-सम्पत्ति कमाई है, वह साथ जाने वाली नहीं है। जब व्यक्ति सद्गुरु की शरण में आता है, तीर्थकर भगवान की आज्ञा में आता है तो उसके भीतर से आवाज आती है- यही अर्थ है, सत्य है, बाकी सब अनर्थ है।

शासन दीपिका साध्वी श्री वनिताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म.सा. आदि साध्वी मण्डल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। समता महिला मण्डल ने **“हुकमसंघ के नाथ पधारे, आओ मिलकर लगाएँ जयकारे”** गीतिका प्रस्तुत की। संघ मंत्री ने महापुरुषों के सान्निध्य का अधिकाधिक लाभ लेने की अपील की। अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए। दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा। दोपहर में महापुरुषों के पावन सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी, जिज्ञासा समाधान आदि कार्यक्रम हुए। सामूहिक एकासना के अन्तर्गत 300 से अधिक एकासन सम्पन्न हुए। अन्य कई त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

**23 मई।** प्रातः मंगलमय प्रार्थना पश्चात् प्रशान्तमना आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से मांगलिक श्रवण करने का सौभाग्य प्राप्त कर गुरुभक्त अभिभूत हो गए। विशाल धर्मसभा में आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **“अहिंसा, संयम, तप में जो रमण करते हैं उन्हें देवता भी नमस्कार करते हैं। धर्म में क्या खासियत है? धर्म हमें प्रसन्नता देने वाला है। जब तक हमारे अन्तर में परिवर्तन नहीं आएगा तब तक धर्म का कोई महत्त्व नहीं रहेगा। हमारे भीतर जो परिवर्तन होना था वह नहीं हो पाया तो हम धर्म की आराधना करते रहें। शब्दों के अर्थों से हम उलझे रहेंगे तब तक हमें भाव समझ नहीं आएँगे। धर्म के मर्म को समझने से हमारे**

कषाय दूर हो जाते हैं। धर्म का परिणाम मैत्रीभाव है। हमारे मन में राग-द्वेष के भाव कम और मैत्रीभाव का संचार ज्यादा हो तो यह धर्म है। नाम ऐसा कमाओ कि कोई भूल न पाए। जो मिटाने से मिटे नहीं ऐसा नाम कमाओ। विपरीत परिस्थिति में भी हमारे मन में विपरीत भाव नहीं आएँ। 'जो हो रहा है अच्छा हो रहा है' यह भाव रहना चाहिए। 'जो हो रहा है मेरे अच्छे के लिए हो रहा है' यह भाव हर परिस्थिति में रहना चाहिए। जहाँ श्रद्धा होती है वहाँ कभी विपरीत भावना नहीं आ सकती।"

श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हमारे मन में यह भाव जगें कि प्रत्येक वस्तु नश्वर है। मेरे अंदर जो भी वस्तु नश्वर है उससे मैं दूर रहूँ और सार तत्त्व को ग्रहण करूँ तो ही मेरे जीवन का कल्याण होगा।

साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि हमारा सिर स्वार्थ पूर्ति के लिए कहीं पर भी टिक जाता है। हमें सोचना है कि हमारी अपने देव, गुरु, धर्म के प्रति कितनी श्रद्धा है। कहीं हमारा सिर भी हर कहीं तो नहीं झुक जाता है। आज हमारी दृढ़ता, विश्वास कितना है।

अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए एवं सामूहिक पोरसी का आयोजन किया गया। महिला शिविर में श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने निर्दोष भिक्षाचर्या की जानकारी दी। दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा।

**24 मई।** प्रातः मंगलमय प्रार्थना के स्वर प्रस्फुटित होने के पश्चात् आचार्य भगवन् ने महत्ती कृपा कर मंगलपाठ फरमाया। गुरुभक्तों की अपार जनमेदिनी में विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए प्रशान्तमना परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि "धर्म पर श्रद्धा हो तो धर्म के मार्ग पर स्वतः आगे बढ़ते चले जाएँगे। श्रद्धा स्वयं रास्ता बना देगी। सुमतिनाथ भगवान के चरणों में अपने आपको समर्पित कर दो। समर्पणा हमारे अस्तित्व को विकास अवस्था में ले जाने वाली है। अभी हमारा चिंतन भेद पर चलता है अर्थात् ये मेरा है, ये उसका है, ये तेरा है। भगवान महावीर की आठ प्रमुख बातें महत्त्वपूर्ण हैं- 1. प्राणी मात्र पर तुम्हारा मैत्रीभाव हो। 2. यदि सच्चा सुख पाना चाहते हो तो हर प्राणी से मैत्रीभाव रखो। 3. दो धनवान व्यक्ति एक साथ रह सकते हैं, पर दो विद्वान् व्यक्ति एक साथ नहीं रह सकते हैं। 4. उठापटक वाली बुद्धि हमारा विकास करने वाली नहीं होगी। उठापटक से कभी हमें शांति नहीं मिलेगी। 5. अनावश्यक बिना कारण किसी भी जीव की हिंसा नहीं होनी चाहिए। 6. वर्तमान भौतिक युग में जितने ज्यादा आविष्कार हुए हैं उतनी ही ज्यादा हमारी आरंभ हिंसा बढ़ रही है। 7. मौज-शौक से की जाने वाली प्रवृत्तिजनक हिंसा निकाचित् कर्मों का बंधन कराने वाली होती है।"

श्री हेमंतमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि गुरु के सान्निध्य में रहें तो हमारा कल्याण होगा। हमें कोई चिंता करने की जरूरत नहीं है। अगर हम गुरु के इशारों पर चलेंगे तो हमारा आत्मकल्याण निश्चित है।

इस अवसर पर विविध त्याग-प्रत्याख्यान हुए। सामायिक दिवस के रूप में कई भाई-बहिनों ने 3, 5, 7 सामायिक की आराधना की। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में धार्मिक प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

**25 मई।** प्रातःकालीन प्रार्थना पश्चात् आचार्य भगवन् के श्रीमुख से पावन मांगलिक श्रवण कर गुरुभक्तों ने अपना जीवन धन्य बनाया। विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी मधुरवाणी में दिव्यदेशना देते हुए फरमाया कि "किसी भी जीव को नहीं मारना अहिंसा है। अहिंसा के मार्ग पर चलेंगे, अहिंसा का उद्घोष करेंगे तो ही जीवन सार्थक है। हमारे चाहने से शरीर रहने वाला नहीं है। अहिंसा

हमें बताती है कि तुझे जीने की खोज नहीं करनी। लाखों वर्षों तक जीऊँ या मृत्यु आज ही आ जाए। हमारे भीतर जब अहिंसा उतर जाएगी तो अपने आप हमारे हाथों-पैरों में संयम आ जाएगा। हमें अपनी वाणी में संयम रखना होगा। हमारा दिल टाईल्स के समान चिकना रहना चाहिए ना कि खुरदरे पत्थर जैसा। गोशालक इतना बोल रहा है फिर भी भगवान महावीर प्रत्येक परिस्थिति में समभाव में हैं। हमें भी ऐसा ही रहना चाहिए। हर स्थिति में समभाव में रहना चाहिए। हम चाहें कि हमारी बुद्धि से सब चलें तो ऐसा संभव नहीं है। हमें हर परिस्थिति में समभाव में रहना चाहिए। हमें अपनी समझ को सही बनाना है। पहले हमें अपना कल्याण करना चाहिए बाद में दूसरों के कल्याण की ओर बढ़ें।”

श्री राजनमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि ज्ञान हमें बताता है कि हमें क्या करना चाहिए। ज्ञान कहता है कि जो तुम देख रहे हो वह अच्छा या बुरा कुछ नहीं, सब कुछ समान है। मित्र वो होता है जो अपने साथी को हर परिस्थिति में स्वीकार कर लेता है। वह उसके गुणों-दुर्गुणों में सदैव उसके साथ रहता है।

साध्वी श्री वनिताश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि आगमों में 8 प्रकार के महान बताए गए हैं। अपनी स्थिति के अनुसार हर कोई महान होते हैं। आज हम धन्य हैं कि हमें ऐसे महान आचार्य भगवन् का सान्निध्य प्राप्त हुआ है। गुरु के सान्निध्य में आने से शांति का अनुभव होता है। हमें ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य रूप उम्मीद का दीपक बनने का पुरुषार्थ करना है।

आज का दिवस गुरु वंदना दिवस के रूप में मनाया गया। विविध त्याग-प्रत्याख्यान हुए। जम्बूद्वीप तत्त्वज्ञान की कक्षा श्री गुणीशमुनिजी म.सा. ने ली।

**26 मई।** प्रातः मंगलमय प्रार्थना एवं आचार्यदेव के श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण करने के पश्चात् आयोजित धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आगमज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “**तप के बिना संयम नहीं और संयम के बिना अहिंसा नहीं। तप से अपने स्वार्थ की पतों को हटाना पड़ेगा। मेरेपन के विचार जो हमने बना रखे हैं उनको हटाना होगा। जब तक वे नहीं हटेंगे तब तक संयम की सुगंध हमारे भीतर प्रकट नहीं होगी। अशांति का बहुत बड़ा कारण हमारे भीतर की ग्रन्थियाँ हैं। निष्काम भाव से वन्दना करें। निष्काम भाव से साधना करने से कर्मों की निर्जरा होती है। संसार की प्राप्ति से सुविधाएँ कम दुविधाएँ ज्यादा होती हैं। जीने की इच्छा के साथ आवश्यकता बनी रहती है। हिंसा से बचने का सबसे बड़ा साधन साधुता है। कर्मबन्धन आसक्ति से होता है। सात कर्मों का बंध हमेशा होता रहता है। बिना राग-द्वेष के कर्त्तव्य पालन करना चाहिए। भीतरी सौन्दर्य को देखना चाहिए।”**

श्री मयंकमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि माता-पिता और गुरु के उपकार को कभी नहीं भूलना चाहिए। गुरु के वचन को स्वीकार कर उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए। शासन दीपिका साध्वी श्री वनिताश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। कई भाई-बहिनों ने एक वर्ष में 12 एकासन, 12 आयंबिल, 12 उपवास आदि करने का संकल्प लिया। दोपहर में उभय गुरु-भगवंतों के पावन सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए एवं श्री मनीषमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में गुरुभक्ति कार्यक्रम हुआ।

**27 मई।** प्रातः मंगल प्रार्थना एवं आचार्यदेव के मुखारविन्द से मांगलिक श्रवण करने का सौभाग्य मिला। तत्पश्चात् धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए विश्ववंदनीय परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी

दिव्यवाणी में फरमाया कि “अहिंसा, संयम और तप मंगल हैं, उत्कृष्ट हैं। अहिंसा का अर्थ जीवैषणा समाप्त होने से है। न जीने की इच्छा होना, न मरने की। इसी प्रकार अहिंसा के साथ संयम, तप की भी महत्ता है। संयम की पालना हेतु सावद्य योगों का त्याग करना होता है। ‘सब्व सावज्जं जोगं पच्चक्खामि।’ ऊपर के वेश के स्थान पर भीतर की प्रतिज्ञा को प्रशस्त करना होगा। प्रतिज्ञा के पीछे भाव रहना चाहिए कि भीतर का संयम प्रकट हो गया तो बाहर से शरीर का संयम आ ही जाएगा। प्रतिज्ञा के शब्दों को भीतर के भावों तक पहुँचाएं। प्रतिज्ञाओं को बार-बार दोहराना चाहिए। प्रतिज्ञा में दोष ना लगे इसलिए उसे दोहराना चाहिए। पाँचों इन्द्रियों का निग्रह होने से भीतर में संयम प्रकट होगा। शरीर के शिथिल होने से पहले कर्मों को शिथिल कर लेना चाहिए। कुमकुम बहिन से हमें भी प्रेरणा लेनी चाहिए।”

श्री हेमन्तमुनिजी म.सा. ने “*मेरे प्राणों के आधार, वन्दन हो बारम्बार*” गीतिका प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि अगर जीवन में संयम आ जाए तो जीवन सार्थक बन जाए। शासन दीपिका साध्वी श्री वनिताश्रीजी म.सा. आदि साध्वीरत्नाओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

मुमुक्षु बहिन कु. कुमकुमजी कोटड़िया ने अपने भावोद्गार में कहा कि भगवन्! आपने मुझे संयम योग्य समझा एवं कल आप मुझे अठारह पापों का त्याग करवाने की कृपा करेंगे, इसके लिए आपके चरणों में नतमस्तक हूँ। रतलाम में भगवन् के दर्शन के पश्चात् आरुग्गबोहिलाभं में ज्ञान-ध्यान सीखा। मैं जिस लक्ष्य से संयम ले रही हूँ उसे गुरुकृपा से पूर्ण करूँ, यही मंगलकामना है।

## मुमुक्षु बहिन कुमकुम कोटड़िया का भव्य वरघोड़ा एवं अभिनन्दन स्वागत में उमड़ा जनसैलाब

*आपको शुभकामना! पहन रहे हो साधु वेश को।  
संयम, ज्ञान, तप की उज्ज्वलता से चमकाना सारे देश को।।*

**कानोड़।** संयम आत्मा की आवाज है। संयम उजला उजास है। इसी कड़ी में आधुनिक सुख-सुविधाओं को छोड़कर अपना सर्वस्व जीवन कठोर संयम साधना के लिए समर्पित करने वाली 20 वर्षीय **मुमुक्षु बहिन कु. कुमकुमजी कोटड़िया** सुपुत्री श्रीमती संजूजी-कमलेशजी कोटड़िया, सुपौत्री श्री गौतमचंदजी कोटड़िया, धमतरी (छ.ग.) का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति, श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ एवं श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, समता महिला मण्डल, समता युवा संघ, समता बहूमण्डल, कानोड़ सहित मेवाड़ व देश के अनेक संघों द्वारा शानदार आत्मीय अभिनंदन किया गया।

अभिनंदन से पूर्व दीक्षार्थी बहिन का भव्य वरघोड़ा गांधी चौक से प्रारंभ होकर शहर के अनेक क्षेत्रों से होते हुए पुनः गांधी चौक पहुँचा। दीक्षार्थी बहिन आकर्षक रथ में सवार होकर जन-जन का अभिवादन स्वीकार कर रही थी। नगर में अनेक स्थानों पर समाजजनों द्वारा स्वागत-अभिनन्दन किया गया। “*राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाठ है*”, “*संयम इनका सख्त है, तभी तो लाखों भक्त हैं*” एवं “*कुमकुम बहिन ने क्या किया, मोह-माया का त्याग किया*” आदि गगनभेदी जयघोषों से सम्पूर्ण मार्ग गुँज रहा था। दोपहर में दिगम्बर समाज के नोहरे में दीक्षार्थी बहिन एवं परिजनों का भावभीना स्वागत-अभिनन्दन किया गया। अतिथि के रूप में अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।



प्रारंभ में बालिका मण्डल द्वारा मंगलाचरण एवं समता बहूमण्डल द्वारा दीक्षार्थी स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। स्वागत भाषण में स्थानीय संघ मंत्री ने कहा कि गुरु-भगवंतों की कृपा से कानोड़ संघ को दीक्षा का स्वर्णिम प्रसंग प्राप्त हुआ है। दीक्षार्थी परिवार के अनुपम त्याग की जितनी सराहना की जाए उतनी कम है। महिला मंडल द्वारा नेम-राजुल नाटिका की सुन्दर प्रस्तुति दी गई। अतिथियों ने मुमुक्षु बहिन एवं परिजनों की उत्कृष्ट धर्म भावना की सराहना की।

वीर पिता कमलेशजी कोटड़िया ने कहा कि आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की महती कृपा से मेरी बिटिया कुमकुम महान संयम पथ पर आगे बढ़ रही है। ये हमारे कुल के गौरव को आगे बढ़ा रही है। इसकी भावना सफल हुई। ये अपने परम लक्ष्य को प्राप्त करे, यही शुभेच्छा है।

मुमुक्षु बहिन कु. कुमकुमजी कोटड़िया ने अपने उद्गार में कहा कि संयम में जो आनन्द है वह दुनिया की किसी भी वस्तु में नहीं है। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की उत्कृष्ट संयम साधना एवं साध्वी श्री पावनश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से मैं साधना के मार्ग पर आगे बढ़ रही हूँ। पारिवारिकजनों ने सदैव ही मुझे सुन्दर संस्कार दिए। मुझे अभिनन्दन नहीं आशीर्वाद चाहिए। उपहार नहीं, कामना चाहिए। जीवन को महकाने के लिए राम गुरु जैसे माली चाहिए।

सभा का संयोजन करते हुए स्थानीय संघ मंत्री एवं महेश नाहटा ने मुमुक्षु बहिन का परिचय दिया। मुमुक्षु बहिन एवं परिजनों का स्वागत संघ अध्यक्षजी, मंत्रीजी सहित गणमान्यजनों ने तिलक, माल्यार्पण एवं अभिनन्दन-पत्र भेंट कर किया। कानोड़ संघ के साथ-साथ श्री अ.भा.सा. जैन संघ, आरुगाबोहिलाभं, दिगम्बर जैन समाज, नगर पालिका एवं मेवाड़ संघ तथा अन्य अनेक संघों द्वारा बहुमान किया गया। वक्ताओं ने संयम जीवन हेतु गद्य-पद्य में शुभकामनाएँ प्रस्तुत की। समारोह में मेवाड़ व देश के अनेक स्थानों के धर्मप्रेमी भाई-बहिन भारी संख्या में उपस्थित थे।

**एक और वीर बाला चली संयम पथ की ओर**

**अनुपम दीक्षा प्रदाता आचार्य श्री रामेश के मुख्यावबिन्द से 20 वर्षीय मुमुक्षु बहिन कुमकुमजी कोटड़िया की जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न; नवीन नामकरण हुआ नवदीक्षिता साध्वी श्री निरामयश्रीजी म.सा.**

*जा संयम रास्ते दीक्षार्थी तेरा पथ सदा उज्ज्वल बने।*

*जंजीर बंधी जो कर्मों की मुक्ति की वही वरमाल बने॥*

28 मई, जवाहर जैन शिक्षण संस्थान, कानोड़। टी.वी., मोबाईल, व्हाट्सएप्प, फेसबुक, यूट्यूब, इंस्टाग्राम, ट्विटर, लैपटॉप एवं अन्य सभी आधुनिक साधनों व घर-बार को छोड़कर त्याग, संयम, साधना की ओर एक और वीर बाला अपना कदम बढ़ाकर सबके लिए आदर्श बन गयी।

अनुपम दीक्षा प्रदाता, युगनिर्माता, उत्क्रांति उद्घोषक, नानेश पट्टधर आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. के पावन सान्निध्य एवं चतुर्विध संघ की उपस्थिति में 20 वर्षीय मुमुक्षु कुमकुमजी कोटड़िया सुपुत्री श्रीमती संजूजी-कमलेशजी कोटड़िया, धमतरी (छ.ग.)/लोहावट की जैन भागवती दीक्षा जवाहर जैन शिक्षण संस्थान में अत्यन्त उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुई।

विश्ववंदनीय सिरीवाल प्रतिबोधक आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “**अहिंसा का राजपथ बड़ा सुगम राजपथ है। उस पर यदि चरण आ जाएँ तो कोई असुविधा नहीं होगी। हमने अपने मन में बिठा लिया है कि यह मार्ग बहुत ही कठिन है तो फिर उसे हम सुगम कभी नहीं बना पाएँगे। कठिन राह को सुगम बनाने वाले भी हम हैं और सुगम को कठिन बनाने वाले भी हम ही हैं। कोटडिया परिवार श्रद्धा और आस्था का प्रतीक है। साध्वी श्री पावनश्रीजी म.सा. के धमतरी चातुर्मास के दौरान बहिन कुमकुम में संयम के भाव जागृत हुए कि मुझे संसार में नहीं फँसना है और इसी की परिणति आज आपके सामने है। समर्पणा जहाँ होती है, वहाँ आकांक्षा और कामना नहीं ठहरती। धर्म के प्रति समर्पणा की जगह आज हमारा मन स्वछंदता और स्वतंत्रता की चाह करता है। मेरे पर किसी का अंकुश नहीं होना चाहिए। जब हमारी मति ऐसी हो जाती है तो वहाँ से पतन चालू हो जाता है। व्यक्ति को सदा विद्यार्थी ही रहना चाहिए। विद्यार्थी का जीवन अनुशासित जीवन होता है। भौतिक सुख की कामना विद्या को बाधित करने वाली होती है। पद-प्रतिष्ठा, नाम की कामना साधना का अवरोध है। वह दिन धन्य होगा जब हमारा नियंत्रण हमारे हाथ में होगा। संयम का पथ कायरों का नहीं, वीरों का पथ है।”**

आचार्य भगवन् ने प्रातः 8:52 बजे दीक्षा विधि प्रारंभ की। सबकी नजरें आचार्य भगवन् एवं मुमुक्षु बहिन सुश्री कुमकुमजी कोटडिया की ओर दीक्षा के दुर्लभ क्षणों को निहारने हेतु लगी हुई थीं। बहिन कुमकुम को दीक्षा की तैयारी के सम्बन्ध में जैसे ही आचार्य भगवन् ने पूछा तो बहिन कुमकुम ने तुरन्त ही संयम रत्न प्रदान करने की प्रार्थना की। मुमुक्षु बहिन ने जाने-अनजाने में हुई भूलों के लिए सभी से क्षमायाचना की।

आचार्य भगवन् द्वारा दीक्षा की अनुमति के लिए उपस्थित जनों से स्वीकृति चाही गई तो मुमुक्षु बहिन के पारिवारिक सदस्यों, राष्ट्रीय एवं स्थानीय पदाधिकारियों सहित उपस्थित जनता ने अपने दोनों हाथ उठाकर दीक्षा की अनुमोदना करते हुए कर्मनिर्जरा का लाभ लिया।

अनुपम दीक्षा प्रदाता आचार्य भगवन् ने तीन बार करेमि भंते के पाठ से सम्पूर्ण सावद्य योगों एवं पापकारी क्रियाओं का त्याग करवाकर पंचपरमेष्ठी नवकार महामंत्र के पाँचवें पद पर मुमुक्षु बहिन को आरूढ़ किया। सम्पूर्ण सभा केसरिया-केसरिया गीतों से गूँज उठी। नवीन नामकरण **नवदीक्षिता साध्वी श्री निरामयश्रीजी म.सा.** की घोषणा के साथ ही सभा में जय-जयकार का उद्घोष हर्षित एवं गौरवान्वित करने वाला था।

केशलुंचन का कार्य शासन दीपिका साध्वी श्री वनिताश्रीजी म.सा. के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

आचार्य भगवन् ने ब्यावर जवाहर भवन में श्री हेमन्तमुनिजी म.सा. एवं सेवा में श्री धीरजमुनिजी म.सा., खैरोदा के लिए साध्वी श्री वनिताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा और लसड़ावन के लिए साध्वी श्री विद्यावतीश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मास की रखे जाने वाले आगारों सहित घोषणा की।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि “**गुरु के चरण शान्त शरण, समाधि चरण हैं। ऐसे ही पावन चरणों में अपने आपको सौंप देने से शांति और प्रसन्नता का अनुभव होता है। अमूल्य मनुष्य जन्म मात्र इच्छापूर्ति के लिए नहीं है। संसार के सुखों व भोगों को भोगना और उन्हें सब कुछ मानना सही नहीं है। हमारा मन संसार के विभिन्न आकर्षणों में उलझा हुआ है। अपने लिए उसे अवकाश नहीं मिलता कि मुझे जीवन में क्या करना चाहिए। धन, परिवार, जमीन, घर, दोस्त आदि दुःखों से मुक्त करने वाले**

नहीं हैं। हमें गुरुचरणों में अपना सर्वस्व समर्पण करना है। अन्तर्मन जितना शान्त होगा हम उतना ही आत्मभाव में प्रवेश करेंगे। हम गुरु आज्ञा निर्देश में चलें।”

श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने अद्भुत प्रेरणा देते हुए फरमाया कि मुमुक्षु बहिन 18 पापों का त्याग करने जा रही है। हम कम से कम स्वयं एवं अपने बच्चों को 10 दिन गुरुदेव के साथ मुमुक्षु के रूप में रखकर जीवन को सार्थक करें। तुरन्त ही 15 भाई-बहिनों ने खड़े होकर 10 दिन गुरुदेव के सान्निध्य में साधनामय जीवन जीने का संकल्प आचार्य भगवन् से लिया।

श्री नीरजमुनिजी म.सा., श्री हर्षितमुनिजी म.सा., श्री गगनमुनिजी म.सा., श्री मयंकमुनिजी म.सा., श्री राजनमुनिजी म.सा. एवं श्री धीरजमुनिजी म.सा. द्वारा “**वीतरागता की ओर बढ़ रहे ये चरण, धन्य-धन्य धन्य-धन्य कह रहा है सबका मन**” भाव गीत प्रस्तुत करते ही जन-जन में वैराग्य की लहरें उमड़ने लगीं।

शासन दीपिका साध्वी श्री वनिताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री मननप्रज्ञाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुरक्षाश्रीजी म.सा. आदि ने “**दीक्षा को अवसर आयो, नाचे मन रो मोरियो**” गीतिका प्रस्तुत की।

साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री मननप्रज्ञाश्रीजी म.सा. ने “**सम्यक् बोधि रा स्वामी कानोड़ पधारिया**” गीतिका प्रस्तुत की।

संघ मंत्रीजी एवं महेश नाहटा ने आचार्य भगवन् के अतिशय का जिक्र करते हुए त्यागी आत्माओं से प्रेरणा लेने का निवेदन किया। एक वर्ष के लिए 1 मिठाई के त्याग कई भाई-बहिनों ने लिया। देशभर के अनेक क्षेत्रों से हजारों श्रद्धालु भाई-बहिनों ने उपस्थित होकर आयोजन का लाभ लिया। यह दीक्षा का विराट आयोजन कानोड़ के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया। आयोजन को सफल बनाने में श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मण्डल, समता युवा संघ, समता बहूमण्डल एवं नगरवासियों का प्रशंसनीय योगदान रहा।

**29 मई, लुणदा।** जन-जन की आस्था के केन्द्र परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. का कानोड़ से विहार कर गुरुभक्तों की उपस्थिति में जय-जयकारों के साथ समता भवन, लुणदा में मंगल पदार्पण हुआ। दिगम्बर जैन एवं अन्य समाज की सेवा-भक्ति सराहनीय रही। पंचायती नोहरा दिगम्बर समाज लुणदा में आयोजित धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि सुखी बनने के लिए दूसरा क्या कर रहा है उसकी चिंता छोड़ो। अपना पुरुषार्थ करते रहो। आज धर्म स्थानक में चेहरा अलग रहता है और बाहर चेहरा अलग रहता है। नजरों में जो आना चाहता है उसे जल्दी नजर लग जाती है। दिनभर में घटित घटनाओं की कोई प्रतिक्रिया नहीं करेंगे।

15 मिनट स्वाध्याय करने एवं वर्ष में 12 एकासन, 12 आयंबिल एवं 12 उपवास करने का नियम कई भाई-बहिनों ने लिया।

**30 मई, बोहेड़ा।** परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का जयघोषों के साथ समता भवन बोहेड़ा में मंगल प्रवेश हुआ। धर्मसभा का आयोजन सीनियर स्कूल में किया गया।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपने ओजस्वी प्रवचन में फरमाया कि “**गुरु उपासना के 2 प्रकार के दृष्टिकोण हैं- पहला पक्ष- भारतीय संस्कृति का पक्ष याचना का है। वह मांगने का पक्ष है। गुरु के चरणों में**

भक्ति करता हुआ वह भक्त कहता है कि गुरुदेव आपकी कृपा का आकांक्षी हूँ। मेरा जीवन अनेक संकल्पों से गुजर रहा है। मैं बड़ा परेशान हो रहा हूँ। एक कदम आगे बढ़ाता हूँ तो दस कदम पीछे आ जाता हूँ। इस कशमकश में जीवन से हार गया हूँ। अब आपकी शरण है, आपका ही आश्रय है। आपके आशीर्वाद एवं आपकी कृपा से ही मेरे जीवन का सुधार हो सकता है।

**दूसरा पक्ष-** यह पुरुषार्थी भक्त हैं। इसमें भी परेशान भक्त गुरुचरणों में समर्पित होकर उनके आदर्श जीवन से स्वयं प्रेरित हो रहा है। दर्शन से, वचनों से शक्ति का संचार हो रहा है। गुरु के वचन और उनका जीवन भक्त के अन्दर नयी ऊर्जा का संचार करता है।

हम स्वयं विचारें कि हम कौन से भक्त हैं- याचक या पुरुषार्थी? पुरुषार्थ एवं श्रम जीवन का विकास करने वाले हैं। धर्म समभाव सिखाता है। समभाव सुख देने वाला है।”

श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि अपनी आदतों को बदलना सबसे कठिन काम है। अगर जीवन में आगे बढ़ना है तो अपनी आदतें बदलें। हमें दुनिया को नहीं अपितु स्वयं को सुधारना है। जीवन में त्याग, नियम, पञ्चवखाण के साथ आगे बढ़ना समता है।

श्री धीरजमुनिजी म.सा. ने गुरुभक्तों को दस दिन गुरुदेव के साथ साधनामय जीवन जीने की प्रेरणा दी। इससे प्रेरित होकर कई लोगों ने ऐसा संकल्प लिया। स्थानीय गुरुभक्तों ने आचार्य भगवन् के आगमन को परम सौभाग्य का विषय बताया। वर्ष में 12 एकासन, 12 आयंबिल करने का नियम कई लोगों ने लिया।

मुमुक्षु बहिन सुश्री लक्कीजी सुराणा, बेंगलुरु ने कहा कि अगर संयम पथ श्रेष्ठ पथ है तो हम सभी इस पर बढ़ने का प्रयास क्यों नहीं करते? संयम की डगर कठिन है, लेकिन ठान लेने के बाद कुछ भी असंभव नहीं है। हम पुरुषार्थ करने से पीछे हट जाते हैं। आरुग्गबोहिलाभं एक सुनहरा प्लेटफॉर्म है, जहाँ हम पुरुषार्थ कर सकते हैं।

दोपहर में महेश भवन में मुमुक्षु बहिन सुश्री लक्कीजी सुराणा का बहुमान श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मण्डल, समता युवा संघ एवं समता बहूमण्डल की ओर से किया गया।

**31 मई, बड़ीसादड़ी।** प्रातःकालीन धार्मिक चर्या के पश्चात् परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा का भव्य मंगल प्रवेश बड़ीसादड़ी में प्रकाशजी धाकड़ के निवास स्थान पर हुआ। जैसे अयोध्या में श्री राम का प्रवेश हुआ वैसे ही मार्ग के दोनों ओर अपार जनमेदिनी गुरु-भगवंतों की अगवानी करने हेतु उत्सुक नजर आई। हर जाति एवं कौम के लोग दर्शनों हेतु उमड़ रहे थे। नगर पालिका परिसर में आयोजित विशाल धर्मसभा में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी सिंह गर्जना में फरमाया कि “भगवान का आदेश हमारी आत्मा को स्थायी शांति प्राप्त कराने वाला है। शांति के अभाव में मन बहुत पीड़ा का अनुभव करता है। शांति दो प्रकार की होती है- 1. कुछ समय रहने वाली शांति एवं 2. हमेशा रहने वाली शांति। दुनिया में शांति के लिए बहुत सारे उपाय करते हैं। जैसे- ए.सी. में बैठ गए। प्यास बुझाने के लिए ठण्डा पानी पी लिया। भूख लगने पर खाना खा लिया। ऐसी शांति हम अनादिकाल से प्राप्त कर रहे हैं और उसी को शांति मान लिया है। वैज्ञानिक खोज वर्तमान इच्छापूर्ति के लिए होती है। लोग बिना मेहनत किए सब कुछ प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन आत्मतृप्त नहीं हो रहे। जब तक शरीर और मन को साता ना पहुँचे तब तक शांति नहीं मिलने वाली। पाँचवें आरे से दौड़ते-दौड़ते छठे आरे में आ जाएँगे।

इसलिए थोड़ा कष्ट सहेंगे तो बहुत सुख और शांति मिलेगी। कष्टों को सहन करने का लक्ष्य बनाकर चलें।”

श्री हेमन्तमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि गुरु को जो कार्य पसंद नहीं, वह कार्य हमें नहीं करना चाहिए। गुरु के इंगित इशारों पर हम सदा चलें। गुरुभक्ति में दिखावा न हो। शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलताजी म.सा. आदि साध्वी मण्डल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। समता महिला मण्डल, बहूमण्डल ने स्वागत गीत का संगान किया। जीवन में कैसी भी परिस्थिति आ जाए, लेकिन आत्महत्या नहीं करने का संकल्प कई भाई-बहिनों ने लिया। सामूहिक एकासना का आयोजन किया गया।

मुमुक्षु बहिन लक्कीजी सुराणा, बेंगलुरु/गंगाशहर का ओघा बाँधने एवं चौबीसी आदि कार्यक्रम हुए। दोपहर में मुमुक्षु बहिन एवं वीर सुराणा परिवार का श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति, श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ, श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मण्डल, समता युवा संघ, समता बहू मण्डल, बड़ीसादड़ी दिगम्बर जैन समाज, आरुगबोहिलाभं एवं विभिन्न संघों द्वारा शानदार आत्मीय स्वागत-अभिनंदन किया गया।

मंच पर मुमुक्षु बहिन लक्कीजी सुराणा एवं परिजन सुशोभित थे। प्रारम्भ में मंगलाचरण व स्वागत गीत महिला मण्डल एवं बहू मण्डल द्वारा प्रस्तुत किया गया। स्वागत भाषण में बड़ीसादड़ी संघ अध्यक्षजी ने कहा कि गुरु कृपा का ही प्रतिफल है कि आज बड़ीसादड़ी संघ में ये अद्भुत नजारा देखने को मिल रहा है। वीर सुराणा परिवार एवं अतिथियों सहित उपस्थित धर्मप्रेमियों का हृदय से स्वागत करता हूँ।

संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने कहा कि इस भौतिक युग में दीक्षार्थी बहिन ने अध्यात्म को चुना, जो सबके लिए प्रेरणास्रोत है। मुमुक्षु बहिन दीक्षा लेकर न केवल साधुमार्गी संघ अपितु सम्पूर्ण मानव समाज को दैदीप्यमान करेगी। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का जीवन चलता-फिरता आगम है। द्वय गुरु-भगवंत निरंतर तप-त्याग और ज्ञान-ध्यान से संघ को आगे बढ़ाने में लगे हुए हैं। दीक्षार्थी परिजन एवं बड़ीसादड़ी संघ की जितनी सराहना की जाए उतनी ही कम है।

कार्यक्रम के बीच में आचार्य भगवन् के उदयपुर चातुर्मास के प्रवचनों पर आधारित साहित्य “**झीलों की लोरी**” का विमोचन मुमुक्षु बहिन एवं परिजनों तथा अतिथियों के कर-कमलों से जय-जयकारों की हर्षद ध्वनि के मध्य सम्पन्न हुआ। साहित्य संयोजकजी ने इस पुस्तक के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी दी। भजन गायिका साक्षीजी मारू एवं देवेन्द्रजी भंशाली ने गुरुभक्ति एवं संयम पर आधारित भजनों से सम्पूर्ण सभा को धर्ममय बना दिया।

राष्ट्रीय महामंत्रीजी सहित अनेक गणमान्यजनों ने मुमुक्षु बहिन के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना की। मुमुक्षु बहिन एवं परिजनों का भव्य अभिनन्दन केन्द्रीय व स्थानीय संघ, महिला समिति एवं समता युवा संघ सहित अनेक संस्थाओं के पदाधिकारियों व गणमान्यजनों ने किया।

मुमुक्षु बहिन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि दीक्षार्थी का इतना मान-सम्मान इसलिए होता है क्योंकि यह संयम मार्ग श्रेष्ठ है। हम सभी दीक्षा ग्रहण करने का प्रयास क्यों नहीं करते? यह अभिनन्दन मेरा नहीं अपितु त्याग, संयम एवं आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर का है। आप सभी से निवेदन है कि अपनी संतानों को एक बार अवश्य ही आरुगबोहिलाभं भेजें। सभा का संयोजन करते हुए संघ अध्यक्षजी एवं महेश नाहटा ने दीक्षार्थी बहिन का परिचय दिया एवं आभार ज्ञापन बड़ीसादड़ी संघ मंत्री ने किया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्षजी, राष्ट्रीय महामंत्रीजी, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षजी, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्रीगण सहित हजारों धर्मप्रेमी जन उपस्थित थे।

अभिनन्दन समारोह से पूर्व प्रातः मुमुक्षु बहिन के अस्थायी निवास दक प्लाजा से पैदल वरघोड़ा विभिन्न मार्गों से निकाला गया। सम्पूर्ण मार्ग आचार्य प्रवर, उनके संदेशों एवं समता नाद से गुंजायमान हो रहा था। यह ऐसा गौरवान्वित करने वाला वरघोड़ा था, जिसमें ना कोई बैण्ड-बाजा, ना लाउड स्पीकर, ना कोई झाँकी, ना कोई बग्गी, रथ, हाथी, घोड़ा और ना ही पैसों व सामानों की उछाल। चारों ओर सिर्फ जय-जयकार ही जय-जयकार सुनाई दे रहा था। मुमुक्षु बहिन के ऐसे त्याग के आगे हर कोई नतमस्तक हो रहा था।

चौबीसी कार्यक्रम में समता महिला मण्डल, समता बहू मण्डल, बालिका मण्डल एवं अन्य कई मण्डलों ने शानदार प्रस्तुतियाँ दी। छोटे साजनान पंचायती नोहरे में लक्कीजी सुराणा के जीवन पर आधारित नाटिका की बच्चों द्वारा सुन्दर प्रस्तुति दी गयी।

## तपस्या सूची

### आजीवन शीलव्रत

बाबुलालजी दानी, नरेन्द्रकुमारजी गाँधी, कन्हैयालालजी सुमनदेवी सहलोट, तेजाबाई चन्द्रप्रकाशजी नन्दावत, जेठमलजी सायरदेवी कोटड़िया-मुंगेली, महेन्द्रजी मुन्नादेवी दक-कानोड़, अमृतलालजी मीनादेवी सुराणा, वीर माता-पिता कमलेशजी संजूदेवी कोटड़िया-धमतरी, प्रकाशजी मंजूदेवी धींग, लालचंदजी निर्मलादेवी चौधरी, प्रकाशचंदजी कनकदेवी धाकड़, तेजसिंहजी मोगरा, रूपसिंहजी भाटी

-महेश नाहटा

## एक की जगह दो दीक्षाएँ सम्पन्न

**01 जून 2023, बड़ीसादड़ी।** अनुपम दीक्षा प्रदाता, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. की दृढ़ संयम-साधना से प्रभावित होकर मुमुक्षु बहिन सुश्री लक्कीजी सुराणा, बेंगलुरु की भव्य जैन भागवती दीक्षा के साथ 20 वर्षीय मुमुक्षु बहिन सुश्री नुपुरजी भूरा सुपुत्री श्री आनन्दमलजी-चंदादेवी भूरा, सूरत/देशनोक (साध्वी श्री खामेश्रीजी म.सा. की संसारपक्षीय बहिन) की भी जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई।

पूर्व घोषित कार्यक्रमानुसार मुमुक्षु बहिन लक्कीजी सुराणा जब दीक्षा ग्रहण करने हेतु दीक्षा स्थल पर उपस्थित हुई तो उन्हीं के साथ साधु वेश में मुमुक्षु बहिन नुपुरजी भूरा का भी पदार्पण होते ही सम्पूर्ण सभा आचार्य प्रवर के अतिशय को देखकर हर्षानुभूत हो गई। हर कोई दोनों बहिनों के त्याग की प्रशंसा कर रहा था।

आचार्य भगवन् ने महती कृपा कर दोनों मुमुक्षु बहिनों को जैन भागवती दीक्षा प्रदान कर नवकार महामंत्र के पंचम पद पर आरूढ़ किया। चतुर्विध संघ में केसरिया-केसरिया गीतों की गूँज कर्णगोचर हो रही थी। इस आदर्श दीक्षा की यत्र-तत्र-सर्वत्र प्रशंसा हो रही है।

(विस्तृत समाचार आगामी अंक में)

# मुमुक्षु सुश्री नुपुरजी भूरा

संक्षिप्त परिचय



- नाम : मुमुक्षु सुश्री नुपुरजी भूरा  
जन्मस्थान : नोखा  
वर्तमान निवास : सूरत (मूलनिवास : देशनोक)  
जन्मतिथि : 06 सितम्बर 1996  
वैराग्यकाल : लगभग ढाई वर्ष  
पदयात्रा : लगभग 500 किमी.  
व्यावहारिक शिक्षा : बी.कॉम.  
धार्मिक ज्ञान : पुच्छिसु णं, श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र (36 अध्ययन), उववाई, सुखविपाक एवं नंदी सूत्र की कुछ गाथाएँ, आचारांग प्रथम श्रुत स्कंध, थोकड़े- तत्व का ताला ज्ञान की कुँजी भाग-1, बंध, उदय, उदीरणा, सत्ता, सर्वबंध, देशबंध का थोकड़ा, प्रज्ञापना के कुछ थोकड़े, 50 थोकड़ा  
धार्मिक परीक्षा : जैन संस्कार पाठक्रम भाग 1 से 7, कोविद, भूषण, श्रुत आराधक (5 वर्षीय), 50 थोकड़ा  
तपाराधना : आयंबिल (25, 31, 51), एकासन का मासखमण, बियासन का मासखमण, 1, 2, 3, 8, 9 उपवास का मासखमण

## पारिवारिक परिचय

- दादीजी-दादाजी : स्व. श्रीमती लक्ष्मीदेवी-स्व. श्री मानमलजी भूरा  
बड़े मम्मी-पापा : श्रीमती ज्ञानादेवी-पन्नालालजी, श्रीमती चन्दादेवी-अमरचंदजी, श्यामलालजी भूरा  
माताजी-पिताजी : श्रीमती चन्दादेवी-आनंदमलजी भूरा  
चाचीजी-चाचाजी : श्रीमती सुमनदेवी-शांतिलालजी भूरा  
बुआजी-फूफाजी : श्रीमती मंजूदेवी-पुनमचन्दजी लुणिया, श्रीमती किरणदेवी-प्रेमचंदजी छाजेड़  
भाभीजी-भैया : श्रीमती ममता-संजयजी भूरा  
जीजी-जीजाजी : श्रीमती ऊषा-मुकेशजी गोलछा, श्रीमती ज्योति-पंकजजी बैद, श्रीमती नेहा-ऋषभजी गोलछा  
भतीजा, भतीजी : संयम, पलक भूरा **भाणजा-भाणजी** : मुस्कान, अपूर्व, उत्कर्ष, तीर्थ  
नानीजी-नानाजी : श्रीमती कमलादेवी-जुगराजजी संचेती  
मामीजी-मामाजी : श्रीमती लीलादेवी-विमलचंदजी, श्रीमती शारदादेवी-मोतीलालजी, श्रीमती मधुदेवी-महेन्द्रकुमारजी संचेती  
मौसीजी-मौसाजी : श्रीमती सुधादेवी-नरेन्द्रकुमारजी बांठिया  
भाई, बहिन : पूर्णिमा, वैशाली, रुचिका, निकिता, दर्शन संचेती, महक, लेखिका, ध्रुव बांठिया  
भाभी-भैया : श्रीमती प्रिंसी-निखिलजी संचेती  
भाई, बहिन : अनिलजी, विकासजी, प्रियंका, इति, अंशु, हर्ष  
परिवार से दीक्षित : साध्वी श्री स्थितप्रज्ञश्रीजी म.सा. (संसारपक्षीय भुआजी)  
साध्वी श्री खोमेमिश्रीजी म.सा. (संसारपक्षीय बहिन)

# चातुर्मास का शुभारम्भ 2 जुलाई से

सभी गुरुभक्तों के ध्यानार्थ निवेदन है कि इस वर्ष चातुर्मास का शुभारम्भ 2 जुलाई 2023 तदनुसार आषाढ़ सुदी 14 सम्बत् 2080 को होने जा रहा है तथा इसी दिन पक्खी पर्व भी है। इस बार अधिक मास होने से चातुर्मास में 5 माह तक धर्म-ध्यान, तप-त्याग एवं चारित्रात्माओं की सेवा के लाभ का विशेष अवसर प्राप्त होने का प्रसंग बना है। अतः आप सभी धर्मानुरागी भाई-बहन इस अवसर का पूर्ण लाभ लेकर कर्मनिर्जरा करें।

॥ जय गुरु जन्म ॥
॥ श्री महावीरस्य जन्म ॥
॥ जय गुरु राम ॥

## श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ

(अंतर्गत : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ)

### महत्तम महोत्सव

आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव

### आषाढ़ - प्र.श्रावण

वीर निर्वाण सं. 2549 विक्रम सं. 2080

## समता कैलेंडर 2023

## जुलाई

समता शाखा दिवस	रवि	30	2	9	16	23
SUNDAY	प्र. श्रावण सुदी 12	आषाढ़ सुदी 14	प्र. श्रावण बदी 7	प्र. श्रावण बदी 14	प्र. श्रावण सुदी 5	
सोम	31	3	10	17	24	
MONDAY	प्र. श्रावण सुदी 13/14	आषाढ़ सुदी 15	प्र. श्रावण बदी 8	प्र. श्रावण बदी 30	प्र. श्रावण सुदी 6	
मंगल	राष्ट्र संघ स्वरूप	4	11	18	25	
TUESDAY	वर्ष 2022-2024	प्र. श्रावण बदी 1	प्र. श्रावण बदी 9	प्र. श्रावण सुदी 1	प्र. श्रावण सुदी 7	
बुध	समता शाखा दिवस प्रत्येक रविवार	5	12	19	26	
WEDNESDAY		प्र. श्रावण बदी 2	प्र. श्रावण बदी 10	प्र. श्रावण सुदी 2	प्र. श्रावण सुदी 8	
गुरु	राष्ट्रीय अवकाश 29 - मुहर्रम	6	13	20	27	
THURSDAY		प्र. श्रावण बदी 3/4	प्र. श्रावण बदी 11	प्र. श्रावण सुदी 3	प्र. श्रावण सुदी 9	
शुक्र	तिथि घटी / बड़ी	7	14	21	28	
FRIDAY	प्र. श्रावण बदी 4 - घटी प्र. श्रावण सुदी 3 - बड़ी प्र. श्रावण सुदी 14 - घटी	प्र. श्रावण बदी 5	प्र. श्रावण बदी 12	प्र. श्रावण सुदी 3	प्र. श्रावण सुदी 10	
शनि	तेला प्रारम्भ	1	8	15	22	29
SATURDAY	आषाढ़ सुदी 13	प्र. श्रावण बदी 6	प्र. श्रावण बदी 13	प्र. श्रावण सुदी 4	प्र. श्रावण सुदी 11	मुहर्रम

#### महत्तम कैलेंडर-जुलाई विशेष

9. श्रुत आरोहक भाग 2 (1st ओपन बुक परीक्षा)  
23. 20 थोकड़े का कार्निवल एक्टिविटी  
(लवण समुद्र + लोकालोक के प्रश्नोत्तर)  
प्रकल्पों के रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया की जानकारी

- लाल रंग से वहायि गये प्रकल्प अभी शुरू नहीं हुए हैं।
- क्लेर रंग से वहायि गये प्रकल्प के रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया समय समय पर शुरू होगी।
- इसे रंग से वहायि गये प्रकल्प के रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया शुरू है।

नोट : ऊपर दी गई तारीखों में बदलाव हो सकते हैं। किसी जानकारी तुरंत पहुंचाने का लक्ष्य रखते हैं।

#### धम्मस्स विणओ मूलं

धर्म का मूल विनय है। सम्यक्त्वी पुरुष में विनय-विनयप्रता गुण सहज रूप में होता है। विनयशील व्यक्ति ही साधना के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है - अभिमानी नहीं। जिसमें अवकड़पन स्तब्धत्व होता है वह किसी भी प्रकार की विशिष्ट शिक्षा या योग्यता प्राप्त करने में असमर्थ रहता है। इसके विपरीत विनयशील आत्मा गुरुजनों को प्रसन्न करता हुआ उत्तरोत्तर ज्ञानादिरत्नों से परिपूर्ण बन जाता है। इसीलिए विनय को धर्म का मूल कहा है।

जिणधम्मो

#### आराधना दिवस

02-07-2023 चातुर्मास प्रारम्भ (तेला तप आराधना)

#### अस्वाध्याय संबंधी दिवस

03-07-2023 एवं 04-07-2023 पूर्ण रुपेण अस्वाध्याय

#### सूर्योदय-सूर्यास्त

बीकानेर		कोलकाता	
सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
1 05:45	19:36	04:56	18:24
15 05:51	19:34	05:01	18:22
रतलाम		चैन्नई	
सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
1 05:48	19:18	05:47	18:38
15 05:53	19:17	05:51	18:38



॥जय गुरु नाना॥



॥जय महावीर॥



राम चमकते भानु समाना

॥जय गुरु राम॥



सत्र 22-24

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ  
(अंतर्गत: श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ)

# चातुर्मासिक स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में तेले तप की आराधना दिनांक-30 जून व 1-2 जुलाई 2023

सभी स्थानीय संघ प्रतिनिधि पुरजोर पुरुषार्थ कर अधिक से अधिक तेले करने, करवाने के लक्ष्य के साथ ज्यादा से ज्यादा तप, त्याग, संवर, पौषध और धार्मिक प्रभावना कर इस पावन पर्व को कर्म बंधनों से परे रहकर कर्मनिर्जरा का माध्यम बनाएँ।



महत्तम महोत्सव

आयोजक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ  
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति  
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ



आप सभी स्थानीय पदाधिकारियों से निवेदन है कि आपके स्थानीय संघ में आयोजित कार्यक्रमों का विवरण हमें व्हाट्सएप्प नंबर 7073238777 या ईमेल [yuva@sadhumargi.com](mailto:yuva@sadhumargi.com) अथवा गूगल लिंक पर अपडेट करें।

॥ जय गुरु नाना ॥



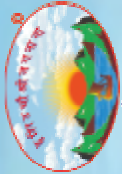
॥ जय महावीर ॥

॥ जय गुरु राम ॥

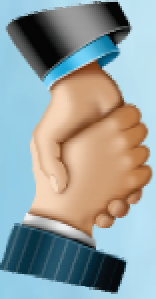


# श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

## पूज्य आचार्य श्री श्रीलालजी उच्च शिक्षा योजना



राम चमकते भानु समाना



साधुमार्गी परिवार हेतु

- \* कक्षा 10<sup>th</sup> और 12<sup>th</sup> में प्रथम श्रेणी प्राप्त किए हैं।
- \* स्नातक एवं स्नातकोत्तर पूर्णकालिक पाठ्यक्रम में भारत एवं विदेश में किसी मान्यता प्राप्त संस्था में प्रवेश लिया है या प्रवेश की प्रक्रिया जारी है।
- \* सहायता प्राप्त राशि 7.50 लाख स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के माध्यम से।
- \* शिक्षण शुल्क एवं परीक्षा शुल्क सीधे कॉलेज/संस्था एवं विश्वविद्यालय को प्रदान।
- \* पुनर्भुगतान - कोर्स समाप्ति के 1 वर्ष या रोजगार प्राप्ति के 6 महीने पश्चात् जो भी पहले हो।

**संजय भूरा**

(संयोजक, आचार्य श्री श्रीलालजी उच्च शिक्षा योजना)

मो.: 9810016751  
(सायं 4 बजे से 6 बजे तक)

ई-मेल:- uchshikshayojna@gmail.com

पूर्ण वितरण, पात्रता, आवेदन प्रपत्र इत्यादि श्री संघ की वेबसाइट [www.sadhumargi.com/forms](http://www.sadhumargi.com/forms) पर उपलब्ध है।

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें :

**मो : 8306098040**

(प्रातः 10 बजे से 5 बजे तक)



\* Loan approval subject to scrutiny by State Bank of India and their terms & condition shall apply.

242 छात्रों को 10.95 करोड़ की सहायता उपलब्ध करवायी जा चुकी है।



राम चमकते भानु समान

# श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ



## आमंत्रण पत्र

बैठक क्रमांक : 2/वर्ष 2021-23

दिनांक : 30 मई 2023

## विशेष आम सभा

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ की सत्र 2021-23 की विशेष आम सभा श्रीसंघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गौतम जी रांका की अध्यक्षता में 3 जुलाई 2023, सोमवार, दोपहर 4.00 बजे से नीमच ( म.प्र. ) में आयोजित होनी प्रस्तावित है। श्रीसंघ के समस्त साधारण-आजीवन सदस्य, शीर्षपदाधिकारी, पूर्व अध्यक्ष-महामंत्री, सभी अंचलों के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष/मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, कार्यसमिति सदस्य, संयोजन मण्डल सदस्य, विशेष आमंत्रित सदस्य एवं अर्न्तगत संस्थाओं के सदस्य एवं पदाधिकारी सादर आमंत्रित हैं।

### :: कार्यसूची ::

1. मंगलाचरण एवं संकल्पसूत्र वाचन।
  2. प्रतिवेदन - राष्ट्रीय महामंत्री।
  3. विगत वार्षिक आम सभा( दिनांक 28 सितम्बर 2022, उदयपुर में आयोजित ) के कार्यवृत्त की स्वीकृति, अंगीकृति एवं अनुमोदना।
  4. वित्तीय वर्ष 2023-24 के बजट की प्रस्तुति, अनुमोदना एवं स्वीकृति।
  5. अध्यक्ष अनुमति से अन्य विषयों पर चर्चा।
  6. सत्र 2023-25 के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष का मनोनयन।
  7. राष्ट्रीय अध्यक्ष उद्बोधन।
  8. संघ समर्पणा गीत के साथ समापन।
- कृपया अवश्य पधारें।

### :: विनीत ::

राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

### :: आतिथेय ::

शौकीन मुणोत  
अध्यक्षअशोक मोगरा  
मंत्रीश्री साधुमार्गी जैन संघ, नीमच  
बैठक स्थल :- नीमच (मध्यप्रदेश)

**विशेष :** बैठक में प्रतिभागिता के सुअवसर के अलावा आपको अत्र विराजित शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशांतमना, नानेश पट्टधर परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. व बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. एवं आज्ञानुवर्ती संत/सतियाँ जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन, वंदन, प्रवचन का लाभ सहज ही प्राप्त होगा।



राम चमकते भानु तमाना

# श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ



## कार्यक्रम विवरण

3 जुलाई 2023, सोमवार - नीमच (म.प्र.)

### श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

#### कार्यसमिति बैठक

दोपहर 12.15 बजे से 2.30 बजे तक

आमंत्रित

शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, सह संयोजक, संयोजन मण्डल सदस्य, कार्यसमिति सदस्यगण एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

#### विशेष आमसभा

दोपहर 4 बजे से 5.30 बजे तक

आमंत्रित

संघ आजीवन सदस्य, संघ साधारण सदस्य, शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, सह संयोजक, संयोजन मण्डल सदस्य, कार्यसमिति सदस्यगण, पूर्व राष्ट्रीय पदाधिकारी, विशेष आमंत्रित सदस्य एवं अंतर्गत संस्थाओं के सदस्य एवं पदाधिकारी



### श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति

#### कार्यसमिति बैठक

दोपहर 12.15 बजे से

आमंत्रित

शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजिका, सह संयोजिका, कार्यसमिति सदस्य एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

#### विशेष आम सभा

दोपहर 1.30 बजे से

आमंत्रित

महिला समिति आजीवन-साधारण सदस्य, शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-मंत्री, प्रवृत्ति संयोजिका, सह संयोजिका, कार्यसमिति सदस्य, पूर्व अध्यक्ष-महामंत्री, विशेष आमंत्रित सदस्य एवं श्रीसंघ के शीर्ष पदाधिकारी



### श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

#### कार्यसमिति बैठक

दोपहर 12.15 बजे से

आमंत्रित

शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, राष्ट्रीय प्रभारीगण, कार्यसमिति सदस्यगण, स्थानीय शाखा प्रमुख, लीड मेंबर एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

निवेदक

राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ





Serving Ceramic Industries Since 1965

हृदय की भी चमकना राम चमकते भावु रामना  
 सज्जन रामजी, प्रजासिन्हा, आचार्य-प्रवर 1008 श्री रामलालजी मसा.  
 एवं समस्त चारित्रात्मियों के चरणों में कोटिलक: वंदन



**A Premier Clay Specialists in The Country...**

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

**JLD MINERALS**  
 Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :  
 1st Floor, Labhuji Ka Katla,  
 Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234  
 FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944  
 Email : wbcclay@yahoo.com

[www.jldminerals.com](http://www.jldminerals.com)

## CONTRIBUTING TOWARDS THE CANCER TREATMENT



PATIENT ROOM



RECEPTION HALL WITH PARENTS' PHOTO

RK Sipani and Daga Family donated a 390 bed charitable hospital for the poor and needy at KIDWAI Memorial Institute of Oncology.

The block was inaugurated by Shri Kumaraswamy, the honourable Chief Minister of Karnataka on 22nd Dec 2018.

We look forward to contributing to a better world with our upcoming charitable ventures.

### RK Sipani Foundation

#439, 18th Main, 6th Block, Koramangala, Bangalore - 560 095

Contact: Prakash 9448733298, Sipani Office: 08041158525 | Email: sipanigrand@gmail.com

# संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

## प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

## प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,  
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401  
(राज.) फोन : 0151-2270261  
[helpdesk@sadhumargi.com](mailto:helpdesk@sadhumargi.com)

## अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

गौतम चन्द्र जैन, मुम्बई

## सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

## श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में 1,000/- (15 वर्ष के लिए)

विदेश हेतु 15,000/- (10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक 50/-

## संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता 500/-

आजीवन सदस्यता 5,000/-

## साहित्य सदस्यता

15 वर्ष (केवल भारत में) 3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से

कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : [ho@sadhumargi.com](mailto:ho@sadhumargi.com)

## बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

## State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681

IFSC Code : SBIN0003401

Branch : G.S. ROAD, Bikaner

Mob. : 7073311108

E-mail : [accounts@sadhumargi.com](mailto:accounts@sadhumargi.com)



## व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक समाचार : 9799061990 } [news@sadhumargi.com](mailto:news@sadhumargi.com)

श्रमणोपासक : 8955682153 }

साहित्य : 8209090748 : [sahitya@sadhumargi.com](mailto:sahitya@sadhumargi.com)

महिला समिति : 7231033008 : [ms@sadhumargi.com](mailto:ms@sadhumargi.com)

समता युवा संघ : 7073238777 : [yuva@sadhumargi.com](mailto:yuva@sadhumargi.com)

धार्मिक परीक्षा : 7231933008 } [examboard@sadhumargi.com](mailto:examboard@sadhumargi.com)

कर्म सिद्धान्त : 7976519363 }

परिवारांजलि : 7231033008 : [anjali@sadhumargi.com](mailto:anjali@sadhumargi.com)

विहार : 8505053113 : [vihar@sadhumargi.com](mailto:vihar@sadhumargi.com)

पाठशाला : 9982990507 : [Pathshala@sadhumargi.com](mailto:Pathshala@sadhumargi.com)

शिबिर : 7231833008 : [udaipur@sadhumargi.com](mailto:udaipur@sadhumargi.com)

ग्लोबल कार्ड अपडेशन : 6265311663 : [globalcard@sadhumargi.com](mailto:globalcard@sadhumargi.com)

## -: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें।

इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय - प्रातः 10:00 से सायं 6:30 बजे तक

लंच - दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

## आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर दें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

जय गुरु नाना

जय महावीर

जय गुरु राम

YOUR TRUST

**RAKSHA**

PIPES

OUR GUARANTEE

**INDIA'S MOST TRUSTED BRAND**



**Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand**  
**SHAND GROUP OF INDUSTRIES**

No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA  
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.  
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com



**FIRST TIME IN INDIA**

ISI FITTINGS WITH ADVANCED  
CO-MOULDED DURO RING SEAL

[www.shandgroup.com](http://www.shandgroup.com)

रक्षा जीवन भर की सुरक्षा

[www.rakshapipes.com](http://www.rakshapipes.com)

रचनाकारों अथवा लेखक के विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।  
प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक गौतम चन्द जैन के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटेर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25000

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261

@absjainsangh



www.facebook.com/HOSadhumargi

